राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 12
अंक : 63
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
शनिवार 17 सितंबर 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट | पेज 3 पीएफसी को राज भाषा मे श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए प्रतिष्ठित 'राजभाषा कीर्ति' पुरस्कार | पेज 5 मोदी के जन्मदिन पर मरीजों और गरीबों की मदद का अभियान चलायेगी उप्र भाजपा | पेज 7 मोदी की सीख पर पुतिन बोले- युद्ध तो यूक्रेन चाहता है, हम तो शांति के पक्षधर हैं

दिल्ली में आप विधायक अमानतुल्लाह गिरफ्तार

एसीबी के छापे में बिना लाइसेंस की पिस्टल और 24 लाख कैश मिले

एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान को गिरफ्तार कर लिया गया है। एंटी करप्शन ब्यूरो ने शुक्रवार को उनके घर समेत पांच ठिकानों पर छापे मारे थे। अमानतुल्लाह के दो करीबियों के ठिकानों से 24 लाख रुपए कैश और दो पिस्टल बरामद की गई हैं।

इनमें एक पिस्टल विदेशी है, जिसका लाइसेंस नहीं है। वक्फ बोर्ड से जुड़े घोटाले के मामले में, ष्टक्र ने विधायक के घर के अलावा जामिया, ओखला और गफूर नगर में पांच ठिकानों पर छापेमारी की थी। ष्टक्र की कार्रवाई पर अमानतुल्लाह ने कहा कि जांच करने वाले लोग कहते हैं कि ऊपर से प्रेशर है, लेकिन ये लोग ष्टश्वह्व वक्फ बोर्ड की शिकायत पर ऐसा कर रहे हैं।

बोर्ड समिति ने योग्यता के आधार पर भर्ती की थी

अमानतुल्लाह ने कहा- मैंने केवल 125 स्थायी कर्मचारियों के लिए प्रस्ताव भेजा था, लेकिन वह मंजूर नहीं हुआ था। इस वजह से मुझे संविदा कर्मचारियों को नियुक्त करना पड़ा था। बोर्ड की समिति ने योग्यता के आधार पर भर्ती की थी। यह नहीं कह सकते कि मेरे रिश्तेदारों को वरीयता दी गई।

मुझसे पहले 24 लोगों को भर्ती किया गया। सभी को मेरिट बेस पर ही भर्ती किया गया था। उसी CEO ने इन लोगों की नियुक्ति की थी, जिसने शिकायत की है। ये 2022 के रिकॉर्ड मांग रहे हैं। मैंने सभी मानदंडों का पालन किया है। मेरे खिलाफ 23-24 एफआईआर दर्ज हैं।

खान पर 33 आरोप हैं

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक खान पर वक्फ बोर्ड के बैंक खाते में गड़बड़ी, बोर्ड की संपत्ति में किराए का निर्माण, वाहन खरीदना, भ्रष्टाचार, अपने करीबियों की नियुक्ति करने समेत 33 आरोप हैं। 2020 में ACB ने मामला दर्ज किया था। खान पर 2018 से 2020 के बीच घोटाले के आरोप हैं। इसी साल अगस्त में ACB ने एलजी को पत्र लिखा था कि अमानतुल्लाह को वक्फ बोर्ड चेयरमैन पद से हटाया जाए क्योंकि उनका स्वभाव बहुत आक्रामक है और वो क्रिमिनल हैं।

5 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

यूपी में रातभर की बारिश में 15 लोगों की मौत, भोपाल में टूटा 50 साल का रिकॉर्ड

नई दिल्ली। मानसून अपने आखिरी पड़ाव पर है। मौसम विभाग के मुताबिक 25 सितंबर को इसकी वापसी हो जाएगी। लेकिन कई राज्यों में इसका कहर अब भी जारी है। 5 राज्यों में भारी बारिश की चेतावनी भी जारी की गई है। बारिश की वजह से अकेले उत्तर प्रदेश में अलग-अलग घटनाओं में 15 लोगों की मौत हुई है। लखनऊ में शुक्रवार को भारी बारिश की वजह से सुबह 3 बजे बड़ा हादसा हो गया। यहां के दिलकुशा कॉलोनी में दीवार गिरने से 9 लोगों की दबकर मौत हो गई। 2 की हालत गंभीर है। कानपुर में दो लोगों की डूबने से मौत हो गई। यहां से सटे उन्नाव में एक घर गिर गया, यहां 3 लोगों की जान गई है। एक अन्य घटना में भी एक व्यक्ति की मौत हो गई है। दूसरी तरफ महाराष्ट्र में भी गुरुवार को भारी बारिश हुई। नासिक में गोदावरी में जलस्तर बढ़ने से किनारों पर बने मंदिर डूब गए हैं। दो दिन से हो रही बारिश के बाद दस बांध

लबालब हो गए हैं, गंगापुर बांध से पानी छोड़ने के कारण गोदावरी उफान पर है। इधर, मौसम विभाग ने पांच राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

मध्यप्रदेश : भोपाल में 50 साल की सबसे ज्यादा बारिश

मध्यप्रदेश में तीन दिन से हो रही भारी बारिश ने हालात बिगाड़ दिए हैं। भोपाल में अभी तक 72 इंच बारिश हो चुकी है। मौसम विभाग के अनुसार पिछले 50 साल में यह सबसे अधिक है। उज्जैन में 24 घंटे से लगातार हो रही बारिश के कारण स्कूलों की छुट्टी घोषित कर दी गई। शिवपुरी में बारिश से निचले इलाकों में जलभराव हो गया।

दिल्ली : बारिश से गिरा तापमान

दिल्ली में शुक्रवार सुबह हुई बरसात के बाद तापमान 22.5 डिग्री सेल्सियस हो गया। शहर के कई हिस्सों में गुरुवार को रात भर बारिश हुई। अधिकारी ने कहा कि शुक्रवार को भी आसमान में बादल छाए रहने और हल्की बारिश की संभावना है। IMD ने कहा कि अधिकतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की उम्मीद है।

उत्तर प्रदेश : बारिश से लखनऊ-कानपुर-झांसी में स्कूल बंद

बीते 72 घंटे से प्रदेश के कई जिलों में भारी बारिश का दौर जारी है। लखनऊ के वीआईपी इलाकों की सड़कों में दो फीट तक पानी भर गया है। लखनऊ, कानपुर और झांसी में भारी बारिश के चलते स्कूल-कॉलेज को बंद कर दिया है। लखनऊ यूनिवर्सिटी में शुक्रवार सुबह और दोपहर प्रथम व द्वितीय पाली में होने वाली सेमेस्टर परीक्षा स्थगित कर दी गई हैं।

इन राज्यों में आज भारी बारिश

मौसम विभाग के मुताबिक, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य महाराष्ट्र के घाट क्षेत्रों और कोंकण-गोवा के अलग-अलग स्थानों में आज भारी बारिश हुई। वहीं, गुजरात, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में भी कई इलाकों में भारी बारिश हुई है। मौसम विभाग का कहना है कि उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, गुजरात राज्य, तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल में गरज के साथ बौछारें भी पड़ी हैं।

लखनऊ में दीवार गिरी, 9 की मौत

झांसी के मजदूरों ने दीवार के सहारे बनाई थी झोपड़ी

लखनऊ। लखनऊ में तीन दिन से हो रही भारी बारिश के बीच शुक्रवार तड़के 3 बजे बड़ा हादसा हो गया। यहां दिलकुशा कॉलोनी में दीवार गिरने से 9 लोगों की दबकर मौत हो गई। दो घायलों को सिविल हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। डीएम सूर्यपाल गंगवार ने बताया कि सभी मृतक और घायल झांसी जिले के पचवारा के रहने वाले हैं। ष्टरू योगी घायलों से मिलने हॉस्पिटल पहुंचने वाले थे, लेकिन कालिदास चौराहे के पास पार्क रोड पर जलभराव के कारण दौरा रद्द करना पड़ा। यह सभी कैंट एरिया में आर्मी कैंपस की पुरानी दीवार के सहारे झोपड़ी में रह रहे थे और नई बाउंड्रीवाल के निर्माण कार्य में लगे थे। डीएम ने बताया कि बांउड्रीवाल के पास लोग झोपड़ी में सोए थे। रेस्क्यू देर रात ही पूरा कर लिया गया है। घायलों की हालत खतरे से बाहर है। सिविल हॉस्पिटल के डायरेक्टर आनंद ओझा का कहना है कि सुबह 7 बजे 9 लोगों को लाया गया था, सभी लोगों की मौत हो चुकी थी। इसके अलावा दो घायल

हैं, जिनका इलाज चल रहा है।

सेना के जवानों ने चलाया रेस्क्यू ऑपरेशन

आर्मी कैंट के पास हादसा हुआ तो मौके पर रेस्क्यू के लिए आर्मी के जवान भी पहुंच गए। ष्टरूयोगी हादसे में नजर बनाए हैं। डीएम और पुलिस अधिकारियों को मौके पर पहुंचने के निर्देश दिए हैं। सीएम योगी ने मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। सीएम ने मृतकों के परिजनों को 4 लाख रुपए की राहत राशि देने का ऐलान किया है। घायलों के बेहतर इलाज कराए जाने के सीएम ने निर्देश दिए हैं। गृहमंत्री अमित शाह और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने हादसे पर दुख जताया है।

मृतकों की डिटेल्स

- पप्पू पुत्र घनश्याम, उम्र 40 वर्ष
- मानभुवन देवी पत्नी पप्पू, उम्र 40 वर्ष
- प्रदीप पुत्र पप्पू, उम्र 20 वर्ष
- रेशमा पत्नी प्रदीप, उम्र 22 वर्ष
- नैना उर्फ भारती पुत्री प्रदीप, उम्र 1 वर्ष
- धर्मेंद्र, उम्र 24 वर्ष
- वीवी चंदा पत्नी धर्मेंद्र, उम्र 20 वर्ष
- 2 बच्चे

ईंट से बनाई थी दीवार

मजदूर पुरानी दीवार के सहारे झोपड़ी बनाकर रहते थे। तीन दिनों से लखनऊ में रुक-रुक कर बारिश हो रही है। सुबह 3 बजे के आसपास अचानक घटी इस घटना से मौके पर चीख पुकार मच गई। आसपास के लोगों ने बताया कि भारी बारिश होने के चलते दीवार काफी कमजोर हो गई थी। आसपास की मिट्टी धंसने से दीवार ढह गई। घटना होते ही सेना के जवान मौके पर आकर रेस्क्यू ऑपरेशन में जुट गए।

कोविड टीकाकरण में 216.17 करोड़ से अधिक टीके लगे

नयी दिल्ली। देश भर में राष्ट्रीय कोविड टीकाकरण अभियान के अंतर्गत 216.17 करोड़ से अधिक कोविड टीके लगाए गए हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने शुक्रवार को यहां बताया कि आज सुबह सात बजे तक दो अरब 16 करोड़ 17 लाख 78 हजार 020 टीके दिये जा चुके हैं। मंत्रालय ने बताया कि पिछले 24 घंटों में कोविड संक्रमण के 6298 नये मरीज सामने आयें हैं। इनके साथ ही देश में कोरोना रोगियों की संख्या 46 हजार 748 रह गयी है। यह संक्रमित मामलों का 0.1 प्रतिशत है। दैनिक संक्रमण दर 1.89 प्रतिशत हो गयी है। मंत्रालय ने बताया कि इसी अवधि में 5916 लोग कोविड से मुक्त हुए हैं। अभी तक कुल 4 करोड़ 39 लाख 47 हजार 756 रोगी कोविड से उबर चुके हैं। स्वस्थ होने की दर 98.71 प्रतिशत है। देश में पिछले 24 घंटे में 3 लाख 33 हज़ार 964 कोविड परीक्षण किए गये हैं। देश में कुल 89 करोड़ 09 लाख 47 हजार 646 कोविड परीक्षण किए जा चुके हैं।

उज्जैन में पोहा फैक्ट्री में आग, 3 महिलाएं जिंदा जलीं

एक अन्य महिला मजदूर घायल, शॉर्ट सर्किट से आग लगने का अंदेशा

उज्जैन। उज्जैन में पोहा फैक्ट्री में आग लगने से तीन महिलाएं जिंदा जल गईं। हादसा शुक्रवार शाम नागझिरी थाना क्षेत्र में उद्योगपुरी स्थित फैक्ट्री में हुआ। घटना के वक्त महिलाएं काम कर रही थीं। वहीं, अन्य महिला भी झुलसी है। उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने आग पर काबू पाया। घटनास्थल पर पुलिस और प्रशासन के अफसर पहुंचे हैं।

नागझिरी क्षेत्र की उद्योगपुरी में संचालित पोहा फैक्टरी बिंदल प्रोसेस में शाम 5:30 बजे उस समय अफरा तफरी मच गई जब वंहा रखे रॉ मटेरियल में अचानक आग लग गई। आग की सूचना पर तीन दमकल वाहन मौके पर पहुंचे और आग पर काबू पाया गया। फायर कर्मी अंदर पहुंचे तो एक के बाद एक तीन महिला मजदूर की लाशें मिलीं। मृतकों में दुर्गाबाई पति राधेश्याम उम्र 45 साल निवासी बोरखेड़ी आगर मालवा, ज्योति पति पप्पू उम्र 25 साल निवासी नागझिरी, क्षमा बाई पति प्रभु लाल मालवीय उम्र 45 साल निवासी नेहरू नगर नागझिरी के रूप में पहचान हो पाई है। वहीं सीमा

नाम की महिला को घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया है।

लाश को पहचान पाना भी मुश्किल

आग से तीनो लाशें इस तरह जल चुकी थी की उन्हें पहचान पाना भी मुश्किल हो रहा था। आग कैसे लगी ये साफ नहीं हो पाया है। लेकिन फैक्ट्री में बड़ी मात्रा में पोहा बनाने का रॉ मटेरियल रखा था।

करंट से या जलने से मौत

घटनास्थल को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है की आग इतनी भीषण नहीं रही होगी की तीन लोगों की मौत हो जाए। संभवत: तीनों की मौत करंट लगने से हुई है जिसके कारण वहां रखे रॉ मटेरियल ने आग पकड़ ली। हालांकि उज्जैन कलेक्टर आशीष सिंह ने इंडस्ट्री सेफ्टी और फायर सेफ्टी के अधिकारियों को 3 दिन में जांच रिपोर्ट पेश करने का कहा है। इसके बाद ही स्थिति साफ हो पाएगी।

सुरक्षा मानक था या नहीं इसके बाद कार्यवाही

बिंदल प्रोसेस के नाम से संचालित फैक्ट्री में पोहे बनाने का काम होता था। करीब 25 वर्षों से अधिक समय से फैक्ट्री संचालित हो रही थी। फैक्ट्री के मालिक राकेश बिंदल ने घटना को लेकर कुछ भी कहने से इनकार कर दिया। घटना स्थल पर पहुंचे एसएसपी सत्येंद्र शुक्ल ने बताया की किन परिस्थियों में घटना हुई, सुरक्षा मानक था या नहीं, इसको लेकर एफएसएल टीम को जांच करने के आदेश दिए जो भी तथ्य सामने आएंगे उसके बाद कार्यवाही की जाएगी। संभवत: शार्ट सर्किट से आग लगी है।

एनजीटी ने राजस्थान सरकार पर लगाया 3000 करोड़ रुपये का जुर्माना

नई दिल्ली। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यनल (एनजीटी) ने राजस्थान सरकार को ठोस और तरल कचरे के अनुचित प्रबंधन के लिए पर्यावरण संबंधी मुआवजे के रूप में 3,000 करोड़ रुपये का भुगतान करने का निर्देश दिया है।

एनजीटी अध्यक्ष जस्टिस आदर्श कुमार गोयल की अध्यक्षता वाली बेंच ने प्रदूषण में योगदान और अपने संवैधानिक कर्तव्यों के निर्वहन में नाकाम रहने के लिए राज्य के अधिकारियों को जवाबदेह ठहराया है। बेंच में जस्टिस सुधीर अग्रवाल और विशेषज्ञ सदस्य ए सेंथिल वेली भी शामिल थे। बेंच ने कहा, चूंकि, सुप्रीम कोर्ट और एनजीटी के पहले के आदेशों के तहत जल प्रदूषण की रोकथाम और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए दी गई समयसीमा समाप्त हो गई है, इसलिए प्रदूषक भुगतान सिद्धांत को एक जनवरी 2021 से लागू किया जाना है और पर्यावरण को हुए नुकसान व प्रबंधन की लागत के बराबर मुआवजा लगाया जाना है।

800 करोड़ रुपये का डेयरी घोटाला

गुजरात के पूर्व गृह मंत्री विपुल चौधरी को 7 दिन की पुलिस हिरासत में भेजा

मेहसाणा। गुजरात के मेहसाणा की एक अदालत ने राज्य के पूर्व गृह मंत्री विपुल चौधरी को शुक्रवार को सात दिनों के लिए पुलिस हिरासत में भेज दिया है। विपुल चौधरी को दूधसागर डेयरी का अध्यक्ष रहने के दौरान कथित रूप से 800 करोड़ रुपये की वित्तीय अनियमितताओं के मामले में गिरफ्तार किया गया था। गुजरात भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने गुरुवार को चौधरी को गिरफ्तार किया था। एसीबी ने आज विभिन्न आधारों पर अदालत से चौधरी को 14 दिनों की पुलिस हिरासत में भेजने का अनुरोध किया। बचाव एवं अभियोजन दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश ए.एल. व्यास ने पूर्व मंत्री की सात दिनों की पुलिस हिरासत मंजूर कर ली।

सीए को भी एसीबी की हिरासत में भेजा

अदालत ने चौधरी के साथ ही उनके चार्टर्ड एकाउंटेंट शैलेश पारीख को भी एक सप्ताह के लिए एसीबी की हिरासत में भेज दिया। चौधरी गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन परिसंघ (जीसीएमएमएफ) के अध्यक्ष हैं, जो मशहूर अमूल ब्रांड का स्वामी है। वह मेहसाणा जिला सहकारी दूध उत्पादक यूनियन लिमिटेड के प्रमुख भी रह चुके हैं। इसे दूधसागर डेयरी के नाम से भी जाना जाता है। एसीबी की मेहसाणा इकाई ने दूधसागर डेयरी के प्रमुख रहने के दौरान करीब 800 करोड़ रुपये की वित्तीय अनियमितताओं में शामिल होने के आरोप में बुधवार को चौधरी एवं अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। इस जांच एजेंसी ने आरोप लगाया कि वित्तीय अनियमितताओं के जरिए धन बनाने के अलावा पूर्व मंत्री ने दूधसागर डेयरी का अध्यक्ष रहने के दौरान अपराध की कमाई 31 कंपनियों के बैंक खातों में डालकर मनी लॉन्ड्रिंग भी की थी।

लापरवाही | **गड्डियां भरकर बक्से जमीन पर रखे, पानी भरा; पीएमबी के 4 अफसर सस्पेंड**

पंजाब नेशनल बैंक में सड़ गए 42 लाख रुपए के नोट

एजेंसी

कानपुर। कानपुर के पांडु नगर की पंजाब नेशनल बैंक शाखा में रखी हुई करेंसी चेस्ट में 42 लाख रुपए के नोट सड़ गए। 3 महीने पहले इन नोटों को एक बक्से में भरकर जमीन पर रखा दिया गया था। इसी दौरान किसी वजह से बक्से में पानी चला गया। आरबीआई अधिकारियों ने करेंसी चेस्ट की जांच करने पहुंचे तो मामले का खुलासा हुआ। इस मामले में वरिष्ठ प्रबंधक करेंसी चेस्ट देवी शंकर सहित 4 अफसरों को सस्पेंड किया गया है।

आरबीआई के अफसरों ने 25 जुलाई से 29 जुलाई 2022 तक शाखा

की करेंसी चेस्ट का निरीक्षण किया था। इसके बाद उन्होंने 14,74,500 रुपए कम होने और अधिकतम और न्यूनतम रकम में 10 लाख का अंतर होने की रिपोर्ट दी थी। साथ ही 10 रुपए के 79 बंडल और 20 रुपए के 49 बंडल खराब होने की जानकारी दी थी। बाद में गिनती कराई गई तो 42 लाख रुपए की करेंसी नोट के सीलन में गलने का खुलासा हुआ। करेंसी चेस्ट के इंचार्ज पवन चोपड़ा ने बताया- मैंने अभी हाल में ही चार्ज संभाला है। आरबीआई के निरीक्षण में कुछ नोटें गली मिली। इसके बाद इस रकम को शून्य मान लिया है।

2 अफसरों ने जून और जुलाई में संभाला था चार्ज

सस्पेंड अधिकारियों में से दो अधिकारियों ने इसी साल जून और जुलाई में बैंक में चार्ज संभाला था। इनमें 6 जून 2022 को रिपोर्ट करने वाले प्रबंधक करेंसी चेस्ट आशा राम और जून 2022 में करेंसी चेस्ट जवाहर नगर, उन्नाव से ट्रांसफर होकर आए वरिष्ठ प्रबंधक भास्कर कुमार शामिल हैं।

करेंसी चेस्ट में नोटों को बक्सों में ही भरकर जगह-जगह रख दिया गया। बड़ी तिजोरी में नोट नहीं रखे गए। पांडु नगर चेस्ट करेंसी अंडर ग्राउंड है। यहां पर कंक्रीट से दीवार बनी है। सूत्रों ने बताया कि नया कैश आता रहा होगा और पुराने बक्से पीछे खिसकाए जाते रहे। ज्यादा समय हो जाने और जगह-जगह नमी होने की वजह से 42 लाख के नोट गल गए।

पीएनबी पांडू नगर शाखा के ब्रांच मैनेजर सर्वेश श्रीवास्तव ने बताया, मामले में जांच के लिए बनारस से जोनल टीम जांच के लिए आई है। जांच अभी चल रही है। हालांकि मामले में ब्रांच का कोई लेना देना नहीं है।

युवा ऊर्जा के सही इस्तेमाल से तरक्की कर सकता है देश : राहुल

नयी दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा है कि भारत युवाओं का देश है और युवा ऊर्जा का सही तरीके से इस्तेमाल किया जाय तो देश तरक्की के नये मुकाम पर पहुंच सकता है। गांधी ने फेसबुक संदेश में कहा हमारा देश एक युवा देश है, युवाओं के रूप में हमारे पास एक बहुत बड़ी शक्ति है, अगर हम अपने युवाओं की ऊर्जा का सही इस्तेमाल करें, उन्हें सही दिशा दिखाएं तो हमारा देश बहुत तेज़ी से तरक्की कर सकता है, लेकिन आज देश में पिछले 45 सालों में सबसे ज़्यादा बेरोज़गारी है, पढ़े-लिखे नौजवान रोज़गार की तलाश में भटक रहे हैं, निराशा की गिरफ़्त में हैं। हमारा कर्तव्य

भी है और आज समय की मांग भी है कि हम अपने युवाओं की रीढ़ मज़बूत करें, उन्हें सकारात्मकता की तरफ लेकर आएं। उन्होंने कहा कि वह अपनी भारत जोड़ो यात्रा के लिए केरल में हैं और लोगों से मिल रहे हैं। उन्होंने कहा मैं हमारी भारत जोड़ो यात्रा के दौरान बहुत सारे युवाओं से मिल रहा हूं, समझ रहा हूं कि उनकी सरकार से उम्मीद क्या है, अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए वो हमसे किस-किस तरह की मदद चाहते हैं, हम उनके लिए और कितनी संभावनाएं बना सकते हैं। भारत जोड़ो यात्रा का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा हमारी भारत जोड़ो यात्रा का मकसद भी यही है कि हम बच्चे, बूढ़े, नौजवान, महिलाएं, मजदूर, गरीब, किसान और आदिवासियों सबकी बात सुन सकें, उनकी समस्याओं का समाधान निकाल सकें। हम सफल भी हो रहें हैं, युवा खुल कर हमसे बात कर रहे हैं, साथ चल रहे हैं। मुझे उम्मीद है हम सब मिलकर अपने भारत को जोड़ेंगे भी और आगे भी बढ़ाएंगे।

शार्ट न्यूज

पुंछ में विस्फोट , वाहन क्षतिग्रस्त

जम्मू। जम्मू कश्मीर में पुंछ जिले के सुरनकोट इलाके में हुए विस्फोट में जिला विकास परिषद के एक सदस्य का निजी वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। पुलिस सूत्रों ने बताया कि डीडीसी सदस्य सोहेल मलिक के सुरनकोट स्थित घर के सामने चहारदीवारी के भीतर रहस्यमय विस्फोट हुआ। घटना में किसी के घायल होने की रिपोर्टें नहीं है लेकिन मलिक का निजी वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। विस्फोट के कारणों की जांच जारी है।

ईटानगर हवाई अड्डा राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार

ईटानगर। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और पिछले आठ वर्षों में उनके शासन के अंतर्गत राज्य में हुए सभी विकास कार्यों से प्रधानमंत्री को अवगत कराया। यह जानकारी शुक्रवार को आधिकारिक सूत्रों ने दी। प्रधानमंत्री को राज्य की दो महत्वपूर्ण परियोजनाओं की जानकारी देते हुए, श्री खांडू ने कहा, मेरा सौभाग्य है कि मैं ईटानगर में ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे के ड्रीम प्रोजेक्ट के पूरा होने की सूचना दे रहा हूं। डीजीसीए ने सात सितंबर 2022 को इसके परिचालन के लिए आवश्यक लाइसेंस प्रदान कर दिया है। अब यह हवाई अड्डा राष्ट्र की सेवा करने के लिए तैयार है। अरुणाचल प्रदेश की जनता की ओर से श्री खांडू ने प्रधानमंत्री को इस उल्लेखनीय उपलब्धि को हासिल करने में मार्गदर्शन और समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा सीमावर्ती राज्य अरुणाचल प्रदेश का पहला हवाई अड्डा है, जिसमें बोइंग 747 जैसे बड़े विमानों को भी उतारने की क्षमता है।

आईआईटी मद्रास के चौथे वर्ष के बीटेक छात्र ने खुदकुशी की

चेन्नई। आईआईटी मद्रास के चौथे वर्ष के बीटेक के छात्र ने गुरुवार शाम अपने छात्रावास में कथित रूप से आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने कहा कि एयरोस्पेस इंजीनियरिंग का छात्र शुभ्रांशु शेखर देहुरी ओडिशा का रहने वाला था। उसे चार बैकलॉग पेपर देने थे जिसके कारण वह हताश था।आशंका है कि इसी वजह से उसने यह अतिवादी कदम उठाया। संस्थान ने एक वक्तव्य जारी करके कहा आईआईटी मद्रास अपने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग विभाग के चतुर्थ वर्षीय छात्र की दुखद और असामयिक मृत्यु से गहरे सदमे और पीड़ा में है। संस्थान ने कहा कि मृतक छात्र के माता-पिता को सूचित कर दिया गया है और वे लोग चेन्नई के लिए निकल चुके हैं। हम सभी से आग्रह करते हैं कि इस दुखद समय में परिवार की निजता का ध्यान रखें। उसने कहा,संस्थान अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता है और मृतक छात्र के परिवार और दोस्तों के दुख को साझा करता है। ईश्वर दिवंगत की आत्मा को शांति दें।

त्रिपुरा हाईकोर्ट ने दुष्कर्म और हत्या के दोषियों की मृत्युदंड की सजा रद्द की

अगरतला। त्रिपुरा उच्च न्यायालय ने दुष्कर्म और हत्या के दो दोषियों की मृत्युदंड के निचली अदालत के फैसले को रद्द करते हुए उन्हें कठोर आजीवन कारावास की सजा दी है। न्यायमूर्ति टी अमरनाथ गौड़ और न्यायमूर्ति अरिंदम लोध की पीठ ने बचाव पक्ष की याचिका पर सुनवाई के बाद गोमती जिले के जिला एवं सत्र न्यायाधीश के फरवरी-2020 के फैसले को रद्द करते हुए दोषियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। अभियोजन पक्ष के मुताबिक 2019 में गोमती जिले के गबोरडी इलाके की एक आदिवासी किशोरी के साथ दुष्कर्म के बाद उसकी हत्या के आरोप में पुलिस ने कशतराय त्रिपुरा (31) और भंजय त्रिपुरा (29) को गिरफ्तार किया था। जिला एवं सत्र न्यायालय ने दोनों को जुर्माने के साथ मौत की सजा दी थी। दोषियों ने इसके खिलाफ उच्च न्यायालय में अपली की थी।

पार्षद हत्याकांड में सीबीआई ने एक और आरोपी को गिरफ्तार किया

कोलकाता। केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के झालदा नगरपालिका के पार्षद तपन कंडू हत्याकांड के फरार आरोपी शशि भूषण सिंह को बिहार के मुज्जफरपुर से गिरफ्तार किया है। सीबीआई ने प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि आरोपी से एक पिस्तौल और 18 गोलियां बरामद की गई है। आरोपी को शुक्रवार को पुरुलिया के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जाएगा। श्री कंडू की बदमाशों ने 13 मार्च को झालदा कस्बे में दिनदहाड़े हत्या कर दी थी। कोलकाता उच्च न्यायालय ने चार अप्रैल को मामला सीबीआई को सौंप दिया था और संघीय एजेंसी ने छह अप्रैल को मामला दर्ज किया था।

भगत सिंह की 115वीं जयंती को समर्पित हाफ मैराथन दौड़ नौ अक्टूबर को

जालंधर। शहीद-ए-आजम भगत सिंह की 115वीं जयंती के अवसर पर जिला प्रशासन द्वारा नौ अक्टूबर को जालंधर में 'वन रेस हाफ मैराथन' नौ अक्टूबर को आयोजित की जा रही है। यह रेस 5, 10 और 21.1 किलोमीटर की तीन श्रेणियों में आयोजित की जाएगी। उपायुक्त जसप्रीत सिंह ने कहा कि हाफ मैराथन का आयोजन लोगों को शहीद भगत सिंह के जीवन और विचारों से अवगत कराने और उन्हें नशा मुक्त जीवन अपनाने के लिए आमंत्रित करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। हाफ मैराथन नौ अक्टूबर को क्रमश: सुबह 6:00 बजे, सुबह 6:15 बजे और 6:30 बजे स्थानीय गुरु गोविंद सिंह स्टेडियम से शुरू होगी और गुरु नानक मिशन चौक, स्काईलार्क चौक, नामदेव चौक, बी.एम.सी. से 66 फुट रोड, जालंधर हाइट्स से लौटकर गुरु गोबिंद स्टेडियम में फिर से समाप्त होगा। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर सेवानिवृत्त सेना अधिकारी और प्रसिद्ध धावक मेजर डी.पी. सिंह, फौजा सिंह और अन्य प्रसिद्ध हस्तियां उपस्थित होंगी और लगभग 2500 प्रतिभागियों के भाग लेने की उम्मीद है।

मुकेश अंबानी ने टीटीडी को 1.5 करोड़ रुपए दिये दान

तिरुमाला। रिलायंस इंडस्ट्रीज के प्रबंध निदेशक मुकेश अंबनी ने शुक्रवार को आंध्र प्रदेश के तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) को 1.5 करोड़ रुपये का दान दिया। टीटीडी तिरुपति मंदिर का प्रबंधन करता है। अंबानी ने तिरुमाला मंदिर में पूजा-अर्चना की और डेढ़ करोड़ रुपए दान में दिए। उन्होंने टीटीडी के कार्यकारी अधिकारी ए.वी धर्मा रेड्डी को डीडी (मांग पत्र) सौंपा। श्री अबानी पहाड़ी मंदिर में पूजा-अर्चना करने के बाद तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम गोशाला भी गए।

बीएएस से आईएएस में प्रोन्नति पाने वाले 13 अधिकारियों को मिला नया पदस्थापन

पटना। बिहार प्रशासनिक सेवा से प्रोन्नति पाकर हाल ही में भारतीय प्रशासनिक सेवा का दर्जा पाने वाले 13 अधिकारियों को नई तैनाती दी गई है । सामान्य प्रशासन विभाग की गुरुवार को जारी अधिसूचना के अनुसार मुख्यमंत्री के आप्त सचिव दिनेश कुमार राय को गृह विभाग का संयुक्त सचिव बनाया गया है । वहीं बिहार लोक सेवा आयोग के संयुक्त सचिव अमरेंद्र कुमार को आयोग में ही सचिव की जिम्मेदारी दी गई है, जबकि उप सचिव रवि भूषण को श्री कुमार की जगह संयुक्त सचिव की जिम्मेदारी मिली है । इसी तरह पटना प्रमंडल आयुक्त के सचिव एस एम कैसर सुल्तान को संयुक्त सचिव राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के पद पर पदस्थापित किया गया है । वहीं श्री रमेश कुमार झा संयुक्त निदेशक, समाज कल्याण विभाग को निदेशक, नि:शक्तता के पद पर पदस्थापित गया है । इसी तरह श्री राजेश चौधरी आयुक्त के सचिव पूर्णिया प्रमंडल को संयुक्त सचिव, आपदा प्रबंधन विभाग तथा यशस्पति मिश्र उपनिदेशक, ब्रेडा को निदेशक, पर्यटन की नई जिम्मेदारी मिली है। अधिसूचना के अनुसार पटना प्रमंडल के क्षेत्रीय विकास पदाधिकारी सर्व नारायण यादव को निदेशक, चकबंदी बनाया गया है । वे राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग में संयुक्त सचिव की भी जिम्मेदारी निभायेंगे । वहीं कन्हैया प्रसाद श्रीवास्तव संयुक्त सचिव, निर्वाचन विभाग को सचिव राजस्व पर्षद की जिम्मेदारी दी गई है।

भारत जोड़ो यात्रा का चंदा न देने पर दुकान तोड़ी

केरल में कांग्रेसियों ने सब्जीवाले का सामान फेंका, वीडियो सामने आने के बाद तीन सस्पेंड

तिरुवनंतपुरम। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा एक बार फिर सुर्खियों में है। केरल के कोल्लम में एक दुकानदार ने यात्रा का चंदा नहीं देने पर अपनी दुकान में तोड़फोड़ करने का कांग्रेसियों पर आरोप लगाया है। दुकानदार का नाम एस फवाज है और वे कोल्लम में सब्जी की दुकान चलाते हैं। तोड़फोड़ का वीडियो सामने आने के बाद केरल कांग्रेस के अध्यक्ष के. सुधाकरन ने पार्टी के 3 कार्यकर्ताओं को सस्पेंड कर दिया है।

फवाज ने कहा कि 14 सितंबर को कांग्रेस के कुछ लोकल लीडर उनकी दुकान पर आकर भारत जोड़ो यात्रा के लिए चंदा मांगने लगे। मैंने 500 रुपए दिए, लेकिन उन्होंने दो हजार रुपए की मांग की। जब मैंने इतनी रकम देने से मना किया, तो कांग्रेसियों ने मेरी दुकान में तोड़फोड़ की और सब्जी भी सड़क पर फेंक दी।

तोड़फोड़ में यूथ कांग्रेस महासचिव शामिल थे, शिकायत दर्ज

पीड़ित दुकानदार ने इस मामले में कुनिकोडी थाने में शिकायत दर्ज कराई है। इसके मुताबिक दुकान में तोड़फोड़ करने वालों में यूथ कांग्रेस के महासचिव अनिस खान भी शामिल थे। खान ही अपने पांच साथियों को लेकर उसकी दुकान पर पहुंचे थे। चंदे की रकम न देने पर उन्होंने दुकान में तोड़फोड़ की। घटना का वीडियो वायरल होने के बाद कांग्रेस ने तीन कार्यकर्ताओं को सस्पेंड कर दिया है।

कार्यकर्ताओं का बर्ताव स्वीकार नहीं : केरल कांग्रेस अध्यक्ष

केरल कांग्रेस के अध्यक्ष के. सुधाकरन ने कहा- हम दूसरी पार्टियों की तरह कॉर्पोरेट फंडिंग से पैसा नहीं लेते हैं। हम छोटे स्तर पर चंदा लेते हैं, जिसे लोग अपनी मर्जी से देते हैं। कोल्लम की घटना में शामिल 3 कार्यकर्ताओं को सस्पेंड कर दिया गया है। वे हमारी विचारधारा का प्रतिनिधित्व नहीं करते और उनका बर्ताव जायज नहीं है।

दो पक्षों में फायरिंग में दो भाइयों सहित तीन घायल

भरतपुर। राजस्थान के धौलपुर में कंचनपुर थाना क्षेत्र के लालोनी गांव में वर्चस्व की लड़ाई को लेकर दो पक्षों में करीब आधे घंटे तक जमकर हुई फायरिंग में एक पक्ष के दो भाइयों सहित तीन लोगों के साथ छर्रे लगने से दो भैंसों के भी घायल हो जाने की जानकारी प्राप्त हुई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अस्पताल में भर्ती घायल सुरेश (40) के अनुसार गांव के दूसरे पक्ष के रामकुवंर और भगवान सिंह गांव में दबंगई करते हैं। शुक्रवार सुबह जब वह भैंस का दूध निकालने के लिए घर से निकला तो दूसरे पक्ष के लोगों ने अपना वर्चस्व दिखाते हुए उसे दूध निकालने से मना कर दिया। जिसको लेकर दोनों पक्षों के बीच झगड़ा हो गया। जिसको लेकर करीब तीन दर्जन लोगों ने उनके घर पहुंचकर फायरिंग कर दी। फायरिंग में सुरेश के साथ उसका भाई देवेंद्र (28) और भतीजा वकील (30) के छर्रे लगने से घायल हो गया। थाना प्रभारी हेमराज शर्मा ने बताया कि गांव में फायरिंग की सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची, लेकिन इसी दौरान आरोपी पुलिस के पहुंचने से पहले ही भाग गए।

गुरुग्राम में राजकीय श्रमिक दिवस समारोह का आयोजन

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार श्रमिकों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। प्रदेश को विकास की दृष्टि से देश के अग्रणी राज्यों में लाने में मेहनतकश श्रमिकों का बड़ा योगदान है। श्रमसाधकों के बल पर ही आज हरियाणा देश में सबसे तेजी से प्रगति करने वाला राज्य बन गया।

इस बीच, मुख्यमंत्री की घोषणा के फलस्वरूप 17 सितंबर को भगवान विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर गुरुग्राम के सेक्टर -29 स्थित मैदान में भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस राजकीय श्रमिक दिवस समारोह में मुख्यमंत्री मनोहर लाल बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार ने विश्वकर्मा जयंती को राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इसी के दृष्टिगत वर्ष 2018 में हमने विश्वकर्मा जयंती को राजकीय श्रमिक दिवस के रूप में मनाने का फैसला लिया। शिल्पाचार्य भगवान विश्वकर्मा दुनिया के प्रथम इंजीनियर माने जाते हैं। पूरी दुनिया में जो भी भौतिक पदार्थों के रूप में हमें दिखाई देता है, वह सब भगवान विश्वकर्मा जी के कौशल का ही वरदान है। मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश सरकार ने श्रमिकों के कल्याण के लिए ठोस कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि हमारा ध्यान केवल संगठित क्षेत्र ही नहीं बल्कि असंगठित क्षेत्र पर भी है। असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों के कल्याण के लिए हरियाणा असंगठित कर्मकार सामाजिक सुरक्षा बोर्ड का गठन किया गया है।

युद्धपोत निर्माता जीआरएसई को मिला प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

कोलकता। युद्धपोत निर्माता गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड को क्षेत्र सी में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में आधिकारिक भाषा का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए वर्ष 2021-22 का प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में सूरत में आयोजित हुए हिंदी दिवस समारोह के दौरान केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्रा ने युद्धपोत निर्माता को यह पुरस्कार प्रदान किया। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार भारत सरकार द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। जीआरएसई को छठी बार इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

मंसूरी बाईपास मार्ग के चौड़ीकरण का रास्ता हुआ साफ, हाईकोर्ट ने रोक हटायी

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने मंसूरी बाईपास के चौड़ीकरण के मामले में सरकार को राहत देते हुए पेड़ों के प्रत्यारोपण पर लगी रोक को हटा दिया है और सरकार को निर्देश दिया कि पेड़ों का प्रत्यारोपण वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) की निगरानी में किया जायेगा।

मुख्य न्यायाधीश विपिन सांघी और न्यायमूर्ति आरसी खुल्बे की युगलपीठ ने देहरादून निवासी आशीष कुमार गर्ग की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई के बाद शुक्रवार को ये निर्देश दिये। याचिकाकर्ता की ओर से देहरादून के जोगीवाला-खिरसाली-सहस्त्रधारा (मंसूरी बाईपास) के चौड़ीकरण के मामले को जनहित याचिका के माध्यम से चुनौती दी गयी है।

याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया था कि सड़क चौड़ीकरण की जद में दो हजार से अधिक पेड़ आ रहे हैं और पेड़ों के काटे जाने से राजधानी के पर्यावरण को नुकसान होगा। इनमें कुछ दुर्लभ प्रजाति के पेड़ भी हैं। इससे शहर के पर्यावरण पर असर पड़ेगा। सरकार अतिक्रमण को हटा कर भी सड़क चौड़ीकरण कर सकती है। सरकार की ओर से कहा गया कि शहर में बढ़ रहे यातायात के दबाव को कम करने के लिये इस रोड़ का चौड़ीकरण जरूरी है। इससे शहर में बढ़ रही भीडभाड़ पर नियंत्रण होगा और जनता को लाभ होगा। साथ ही प्रतिदिन लगने वाले जाम से निजात मिल सकेगी। इसके साथ ही कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश संजय कुमार मिश्रा की अगुवाई वाली पीठ ने 22 जून 2022 को सरकार को 700 पेड़ों के प्रत्यारोपण के साथ ही रोड़ चौड़ीकरण के निर्देश दे दिये थे और लोक निर्माण विभाग को सड़क के दोनों ओर पेड़ लगाने के निर्देश भी दिये थे।

मूसेवाला हत्याकांड से जुड़े दो गैंगस्टर गिरफ्तार

अमृतसर। पंजाब पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स (एजीटीएफ) ने शुक्रवार को मूसेवाला हत्याकांड में वांछित और कुख्यात गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया के दो गैंगस्टरों को गिरफ्तार किया है।

पंजाब के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने ट्वीट करके यह जानकारी दी। श्री यादव ने कहा, एक खुफिया नेतृत्व वाले ऑपरेशन में, एंटी-गैंगस्टर टास्क फोर्स ने दो मुख्य फरार सदस्यों को गिरफ्तार किया- अमृतसर से जग्गू भगवानपुरिया गैंग के मनदीप ऊर्फ तुफान और

मनप्रीत ऊर्फ मणि रैया। दोनों हत्या, डकैती और सिद्धू मूसेवालपा हत्या मामले से जुड़े होने के कई मामलों में वांछित थे।

जंडियाला के खख और राजासांसी के कुकड़ांवाला गांव से गिरफ्तार दोनों गैंगस्टों की पहचान मनदीप सिंह उर्फ ??तूफान और मनप्रीत सिंह उर्फ ??मणि रय्या के रूप में हुई है। दोनों अपराधी कुख्यात गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया के साथी हैं और गैंगस्टर राणा कंडोवालिया हत्याकांड के मुख्य संदिग्ध हैं। पिछले साल अगस्त में भगवानपुरिया के प्रतिद्वंद्वी माने जाने वाले गैंगस्टर रणबीर सिंह उर्फ राणा कंडोवालिया की एक निजी अस्पताल में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। दोनों आरोपी मुख्य संदिग्ध थे। प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर राणा कंडोवालिया पर जानलेवा हमले के दौरान घायल हुए रैया तब से गिरफ्तारी से बच रहे थे। अब उसका नाम शुभदीप सिंह उर्फ सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड में भी आया था। उनके खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास, नशीले पदार्थों की तस्करी और हथियार अधिनियम के कई आपराधिक मामले हैं।

उल्लेखनीय है कि जुलाई में भी भगवानपुरिया के दो साथी, जगरूप सिंह उर्फ रूपा और मनप्रीत सिंह उर्फ मनु, जिन पर 40 से अधिक आपराधिक मामले हैं, अमृतसर जिले के सीमावर्ती गांव में पंजाब पुलिस के साथ भारी गोलीबारी में मारे गए थे।

46 नगरीय निकायों में 3422 अभ्यर्थी चुनाव मैदान में

भोपाल। मध्यप्रदेश के अठारह जिलों के 46 नगरीय निकायों में हो रहे आम निर्वाचन के लिये नाम वापसी के बाद 3422 अभ्यर्थी चुनाव मैदान में हैं। कुल 25 पार्षद निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। इनमें से नगरीय निकाय खुरई में 21 और बम्हनीबंजर, बैहर, महेश्वर और थांदला में एक-एक पार्षद निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं।

सचिव राज्य निर्वाचन आयोग राकेश सिंह ने जानकारी दी है कि 46 नगरीय निकायों में 4760 नाम निर्देशन-पत्र प्रस्तुत हुए। समीक्षा के बाद 227 नाम निर्देशन-पत्र निरस्त किये गये। कुल 1244 नाम निर्देशन-पत्र अभ्यर्थियों ने वापस ले लिये। अब 3422 अभ्यर्थी चुनाव मैदान में हैं। मतदान 27 सितम्बर को सुबह 7 से शाम 5 बजे तक होगा। मतगणना 30 सितम्बर को सुबह 9 बजे से होगी।

श्री सिंह ने बताया है कि कुल वार्डों की संख्या 814, कुल मतदान केन्द्र 1212 और कुल मतदाता 8 लाख 42 हजार 515 हैं।

खगड़िया में ट्रक की चपेट में आने से तीन युवकों की मौत

एजेंसी

खगड़िया। बिहार में खगड़िया जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र में शुक्रवार की सुबह ट्रक की चपेट में आने से तीन युवकों की मौत हो गयी। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि मोटरसाइकिल पर सवार तीन युवक जा रहे थे, तभी संसारपुर गांव के समीप राष्ट्रीय उच्चपथ 31 पर तेज रफ्तार ट्रक ने मोटरसाइकिल में टक्कर मार दी। इस घटना में मोटरसाइकिल सवार तीनों युवकों की मौत हो गयी।

सूत्रों ने बताया कि मृतकों की पहचान पीयूष कुमार, आयुष कुमार और शंकर चौधरी के रूप में की गयी है।

दुर्घटना के बाद ट्रक का चालक मानसी थाना क्षेत्र में वाहन छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने ट्रक को जब्त कर शवों को पोस्टमॉर्टम के लिये भेज दिया है।

प्रदेश में 36 अप्रचलित कानून किए जाएंगे खत्म : मुख्य सचिव

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल ने कहा है कि राज्य में 36 पुराने और अप्रचलित कानूनों/अधिनियमों को निरस्त किए जाने पर कार्य किया जा रहा है।

उन्होंने प्रशासनिक सचिवों को जल्द से जल्द कार्रवाई कर ऐसे कानूनों को निरस्त करने की प्रक्रिया पूर्ण करने के निर्देश दिए। अब तक 20 ऐसे कानूनों/अधिनियमों को निरस्त किया जा चुका है। श्री कौशल आज यहां पुराने और अप्रचलित कानूनों/अधिनियमों को निरस्त करने के संबंध में बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल के निर्देशानुसार गुरुद्वारा आयोग के आयुक्त न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) इकबाल सिंह की अध्यक्षता में गठित हरियाणा राज्य समीक्षा समिति की सिफारिशों और द्वितीय हरियाणा विधि आयोग के परामर्श अनुसार इन अप्रचलित कानूनों/अधिनियमों को निरस्त करने का निर्णय लिया गया है।

मुख्य सचिव ने बताया कि हरियाणा राज्य समीक्षा समिति ने 56 पुराने और अप्रचलित कानूनों/अधिनियमों को निरस्त करने तथा छह कानूनों/अधिनियमों में संशोधन की सिफारिश की थी। तत्पश्चात राज्य सरकार द्वारा द्वितीय हरियाणा विधि आयोग का गठन किया गया और ऐसे अधिनियमों को निरस्त करने से पूर्व आयोग से परामर्श लेना आवश्यक था। समुचित प्रक्रिया अमल में लाते हुए 56 में से अब तक 20 ऐसे कानूनों/अधिनियमों को निरस्त किया जा चुका है। इनमें से 19 अधिनियम राजस्व विभाग और एक बिजली विभाग से संबंधित है। शेष पर भी जल्द विभागीय कार्रवाई कर निरस्त कर दिया जाएगा। इसके अलावा, शहरी स्थानीय निकाय, श्रम, उद्योग, उच्चतर शिक्षा, गृह विभाग, कृषि, हाउसिंग, आबकारी एवं कराधान, विधि एवं विधायी, राजनैतिक एवं संसदीय मामले, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता और परिवहन विभागों से संबंधित 36 कानूनों/अधिनियमों को निरस्त किए जाने पर कार्य किया जा रहा है।कुछ ऐसे अधिनियम, जिनसे संबंधित कुछ मामले न्यायालयों में विचाराधीन है, ऐसे अधिनियमों को निरस्त या संशोधन करने से पूर्व द्वितीय हरियाणा विधि आयोग से परामर्श अवश्य लिया जाए।

राजस्थान में ग्रामीण ओलंपिक खेल में किसी तरह की राजनीति नहीं हुई है : गहलोत

भीलवाड़ा। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा है कि राजस्थान ने कहा है कि राजस्थान में राजीवगांधी ग्रामीण ओलंपिक खेल को लेकर शानदार काम किया है। इन खेलों में किसी तरह की राजनीति नहीं हुई है।

गहलोत ने आज भीलवाड़ा जिले के बीगोद कस्बे में ब्लॉक स्तरीय राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेल के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि इतने बड़े आयोजन के लिए इन खेलों में सबने मिलकर एक दूसरे की मदद की है। इसमें सभी जाति बिरादरी के लोग शामिल हुए है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश ने वह काम किया है जो अब तक देश के किसी

प्रदेश ने नहीं किया है। उनका कहना था कि ग्रामीण खेल इतने बड़े स्तर पर आयोजित किया है। विश्व में इतना बड़ा आयोजन कहीं नहीं हुआ है। इन खेलों में तीस लाख खिलाडियों ने हिस्सा लिया है, यह बहुत बड़ी बात है।

उन्होंने कहा कि जापना, कोरिया, चाइना के खिलाड़ी अभी मेडल ले जाते है। इस तरह के आयोजनों से हमारे यहां भी मेडलों की कमी नहीं रहेगी। यह एक ऐसा ही एक प्रयास है। खिलाडियों को बचपन से ही खेल का मैदान मिलना चाहिए। इससे वे आगे बढ़ सके। ऐसे प्रयास सरकार कर रही है।

गहलोत ने कहा कि रोजगार के लिए हा-हाकार मचा हुआ है। इस बीच हमने सवा लाख लोगों को रोजगार दिया है।

उन्होंने भीलवाड़ा में विकास की चर्चा करते हुए कहा कि डा सी पी जोशी के प्रयास से भीलवाड़ा में चम्बल का पानी आया है और लोगों की समस्याएं दूर हुई। राजस्व मंत्री रामलाल जाट की चर्चा करते हुए कहा कि ये मजबूत मंत्री बैठे है।

झारखंड हाईकोर्ट के 5 जजों की बेंच के फ़ैसला को चुनौती दें हेमंत सरकार : राय

रांची। झारखंड के पूर्व मंत्री और विधायक सरयू राय ने कहा है कि झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन वास्तव में 1932 खतियान आधारित स्थानीयता झारखंड में लागू करना चाहते हैं तो वे इस बारे में 2002 में झारखंड हाईकोर्ट के 5 जजों की बेंच के फ़ैसला को चुनौती दें। राय ने आज यहां कहा कि 11 फरवरी 2007 को सुप्रीम कोर्ट के 9 जजों की बेंच का फ़ैसला है कि जिस मामले में न्यायालय का निर्णय हुआ है उसे 9 वीं अनुसूची में डालने पर न्यायालय उसकी न्यायिक समीक्षा करेगा। राय ने कहा कि झारखंड सरकार की कैबिनेट द्वारा हाल में पारित 1932 खतियान आधारित स्थानीयता के निर्णय को केन्द्र सरकार चाहे भी तो उसे न्यायिक समीक्षा के बिना संविधान की 9वीं अनुसूची में नहीं डाला जा सकता है।

चतरा में दो किलो 18 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ सात तस्कर गिरफ्तार

चतरा। झारखंड में चतरा जिले के सदर थाना क्षेत्र से पुलिस ने शुक्रवार को दो किलो 18 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ सात तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। चतरा के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अविनाश कुमार ने यहां बताया कि सूचना मिली थी कि शहर के अंसार नगर नउवा टोली ईलाके में बड़े पैमाने पर ब्राउन सुगर की खरीद-बिक्री और सेवन किया जा रहा है। इसी सूचना के आधार पर प्रशिक्षु पुलिस उपाधीक्षक धनंजय राम एवं थाना प्रभारी मनोहर करमाली के संयुक्त नेतृत्व में गठित स्पेशल टीम ने सात तस्करों को गिरफ्तार कर दो किलो 18 ग्राम ब्राउन शुगर,ब्राउन शुगर पीने में प्रयुक्त एल्युमिनियम पन्नी, तीन मोबाइल फोन और तीन हजार रुपया बरामद किया है।

देश से 2025 तक टीबी की बीमारी को मिटाने के लिए लें सभी संकल्प : मिश्र

जयपुर। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने प्रदेश के जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, स्वैच्छिक संगठनों और आमजन से निक्षय मित्र के तौर पर प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान में जुड़कर अधिकाधिक टीबी मरीजों को गोद लेने की अपील करते हुए कहा है कि देश से वर्ष 2025 तक इस बीमारी को मिटाने के लिए सभी को संकल्प लेना चाहिए।

मिश्र ने अभियान के प्रभावी संचालन के लिए शुक्रवार को राजभवन में बुलाई बैठक में स्वयं निक्षय मित्र बनकर टीबी (क्षय) रोगियों को गोद लेने की घोषणा की। राजभवन में भी आज से टीबी उन्मूलन प्रकोष्ठ द्वारा सक्रिय रूप में कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। राज्यपाल ने कहा कि विश्व में टीबी उन्मूलन के लिए वर्ष 2030 का लक्ष्य रखा गया है, पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश ने 2025 तक टीबी की बीमारी को हराने का संकल्प लिया है। इसी के अनुरूप राजस्थान में भी हमें रणनीति बनाकर कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि टीबी रोग उन्मूलन के कार्यों के साथ साथ समुचित पोषाहार के लिए भी हमें प्रतिबद्ध होकर कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि टीबी मरीज के शरीर की प्रतिरोधक क्षमता काफी कम हो जाती है। मरीज को यदि पौष्टिक आहार मिले, तो उस पर दवाइयों का असर जल्दी होता है और वह शीघ्र ठीक होकर स्वस्थ जीवन जीने लगता है।

चौधरी ने लम्पी बीमारी को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की मांग की

अजमेर। विश्व डेयरी सम्मेलन में पहले दिन अंतरराष्ट्रीय दुग्ध उत्पादक गोल मेज सम्मेलन में राजस्थान से अजमेर डेयरी के अध्यक्ष रामचंद्र चौधरी ने केंद्र की मोदी सरकार से मांग की कि भारत सरकार गायों मे फैल रही लम्पी बीमारी को राष्ट्रीय आपदा घोषित कर मुआवजा जारी करें।

श्री चौधरी ने आज अजमेर में पत्रकार वार्ता में नोएडा में 11 से 15 सितंबर तक चले विश्व डेयरी सम्मेलन की मुख्य बातों पर प्रकाश डालते हुये कहा कि भारत सरकार दूध एवं दुग्ध उत्पादों पर जीएसटी बारह प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करें।

उन्होंने कहा कि भविष्य में पशुपालकों के सामने नस्ल सुधार कार्यक्रम, पशु आहार की कमी एवं बढ़ते हुए भाव विकराल रूप धारण करेंगे जिसके चलते आने वाले समय में दूध एवं दूध के भाव में कमी होने की संभावनाएं लगभग क्षीण सी है। उन्होंने देश प्रदेश में गौवंश मे फैल चुकी लम्पी बीमारी पर चिंता जाहिर करते हुए गायों के टीकों को करोड़ों की तादाद में विकसित करने की मांग की।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने उद्बोधन में लम्पी बीमारी एवं टीके पर कोई चर्चा नहीं की। अलबत्ता दूध उत्पादन में भारत को विश्व का अग्रणी देश बताते हुए कहा कि केवल दूध उत्पादन से ही यह व्यवसाय लाभदायक नहीं होगा इसलिए आने वाले समय में गाय के गोबर एवं मूत्र का भी व्यवसायिक स्तर पर उपयोग करना होगा।

इससे वरमी कमफोस्ट के अतिरिक्त बायोगैस बन सकेगी जो कि दुनिया में जैविक खेती एवं ईंधन की समस्या का भी समाधान कर सकेगी।

शार्ट न्यूज

पीएफसी को राज भाषा मे श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए प्रतिष्ठित 'राजभाषा कीर्ति' पुरस्कार

आनंद राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। विद्युत क्षेत्र में देश की अग्रणी एनबीएफसी पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (पीएफसी) को द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा हिंदी दिवस समारोह 2022के अवसर पर राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए क क्षेत्र के उपक्रमों की श्रेणी में वर्ष 2021-22 के लिए सर्वोच्च एवं प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।यह सम्मेलन गुजरात के सूरत शहर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह थे।गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र भाई पटेल, माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा एवं माननीय गृह राज्य मंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। यह पुरस्कार निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री रविन्द्र सिंह ढिल्लों को माननीय उपाध्यक्ष,संसदीय राजभाषा समिति श्री भर्तृहरि महताब एवं डॉ.सत्य नारायण जटिया, पूर्व उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर निगम के निदेशक (वाणिज्यिक) श्री मनोज शर्मा भी उपस्थित थे। पीएफसी के सीएमडी श्री रविन्द्र सिंह ढिल्लों ने इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को प्राप्त करने पर पीएफसी के सभी अधिकारियों और कार्मिकों को बधाई दी। उन्होंने आगे कहा कि यह पुरस्कार उन्हें भविष्य में हिंदी में और अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित करेगा।

जौहरीपुर एक्सटेंशन में मकान गिरने से 7 घायल, 2 लोगों के मलबे में दबे होने की आशंका

नई दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के जौहरीपुर एक्सटेंशन में शुक्रवार को एक मकान गिरने से एक महिला समेत सात लोग घायल हो गए। उन्होंने बताया कि दो लोगों के मलबे में दबे होने की आशंका है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची और डीडीएमए और दिल्ली दमकल सेवा के अधिकारियों के साथ बचाव अभियान चलाया। उन्होंने बताया कि एक महिला समेत सात लोगों को बचा लिया गया और उन्हें जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने कहा कि यह हादसा उस वक्त हुआ जब मजदूर घर की मरम्मत में लगे हुए थे तभी अचानक पहली मंजिल की छत गिर गई। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि कानूनी कार्रवाई शुरू की जा रही है। दिल्ली दमकल सेवा के निदेशक अतुल गर्ग ने कहा कि घटना के बारे में दोपहर करीब 12:02 बजे फोन आया जिसके बाद दमकल की चार गाड़ियां मौके पर भेजी गईं। उन्होंने बताया कि रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है।

दिल्ली के द्वारका में सीबीएसई ऑफिस में निर्माणाधीन इमारत का मचान गिरने से 5 लोग घायल

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के द्वारका सेक्टर-23 स्थित केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) मुख्यालय में एक निर्माणाधीन इमारत में काम करने के लिए बनाई गई मचान गिरने की घटना सामने आई है। शुक्रवार दोपहर हुई घटना में यहां काम कर रहे पांच मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उनका इलाज किया जा रहा है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि दक्षिण-पश्चिमी जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) टीम से मिली जानकारी के अनुसार, दोपहर 02:41 बजे घटना की सूचना मिली थी, जिसके बाद डीडीएमए की क्यूआरटी टीम, द्वारका सेक्टर-23 थाना पुलिस, दो अग्निशमन दस्ता, चार कैट्स एंबुलेंस व तीन बीएसईएस कर्मचारियों की टीम मौके पर पहुंची और राहत कार्य शुरू किया। पुलिस अधिकाकारी ने बाताय कि घायलों पहचान बुद्धि लाल (22), देवाशीष सिंह (18), नारंग राय (30), मंगलो राय (42) और सोमेश राय (19) के रूप में हुई है।सभी घायलों को एंबुलेंस से द्वारका सेक्टर-10 स्थित इंदिरा गांधी अतिविशिष्ट अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है। सभी घायलों को मामूली चोटें आई हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि घायलों का बयान लेने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

कीमती तोहफे भेजने का झांसा देकर महिला से ठगे साढ़े छह करोड़, नाइजीरियाई नागरिक सहित चार गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने कीमती तोहफे भेजने का झांसा देकर एक महिला से छह करोड़ रुपये से अधिक की ठगी करने के आरोप में एक नाइजीरियाई नागरिक समेत चार लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गुरुवार को यह जानकारी दी। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि एक सितंबर को एक महिला ने शिकायत दर्ज कराई थी कि 2016 में उसने फेसबुक पर किसी एरिक एलियट नामक व्यक्ति से मित्रता की थी। एलियट ने महिला को बताया कि वह भारत में होटल का व्यवसाय करना चाहता है और फायदा होने पर उसका आधा हिस्सा उसे देगा। अधिकारी ने कहा कि इसके बाद एलियट ने महिला को कीमती उपहार भेजने और उसके लिए सीमा शुल्क तथा अनापत्ति प्रमाण पत्र के बहाने पैसे लेने शुरू कर दिए। अधिकारी ने कहा कि महिला को कोई पार्सल प्राप्त नहीं हुआ और 2016 से 2022 के बीच शिकायतकर्ता से कुल साढ़े छह करोड़ रुपये वसूले गए। पुलिस जांच में पता चला कि अधिकांश बैंक खाते दक्षिणी दिल्ली इलाके से संचालित हो रहे थे। पुलिस ने इस मामले में चार आरोपियों नाइजीरिया के कोसोराची पैट्रिक अमाडी (41), मेया इमचेन (32), हेमातोली सुमी (29) और बबन राय (29) को गिरफ्तार किया। ये तीनों नगालैंड के रहने वाले हैं।

दो मोबाइल चोर गिरफ्तार,कब्जे से चोरी के आठ मोबाइल फोन बरामद

नोयडा। थाना सेक्टर-39 पुलिस ने दो अभियुक्तों शनि कुमार पुत्र परवीन मालाकार निवासी ग्राम खैदरिया बैगूसराय थाना बैगूसराय जिला बैगूसराय बिहार हाल पता गली नंबर 29 खजूर कालोनी मूलचन्द का मकान थाना सैक्टर 39 नोएडा जिला गौतमबुद्धनगर प्रकाश पुत्र विनोद साहू निवासी कस्वा व थाना नवादा जिला लखीसराय बिहार हाल पता गली नंबर 3 ग्राम छलैरा थाना सैक्टर 39 नोएडा को पर्ल्स टावर तिराहे के पास से गिरफ्तार कर लिया।पकड़े गए अभियुक्तों के कब्जे से पुलिस ने चोरी के आठ मोबाइल फोन बरामद किए हैं। अभियुक्तगण शातिर किस्म के अपराधी हैं।जो मार्केट में राह चलते व्यक्तियों/घरों में पडे हुए मोबाईलों को चोरी कर ले जाते हैं। जिनके विरुद्ध पुलिस ने आवश्यक वैधानिक कार्यवाही कर न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया है।

केंद्र सरकार को 24 घंटे सीबीआई-ईडी करने के बजाय देश के लिए कुछ पॉजिटिव काम भी करने चाहिए

मुझे आज तक यह समझ नहीं आया कि शराब घोटाला क्या है? सीबीआई को मनीष सिसोदिया के यहां रेड में भी कुछ नहीं मिला : केजरीवाल

प्रफुल्ल राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने आज कहा कि केंद्र सरकार को 24 घंटे सीबीआई-ईडी करने के बजाय देश के लिए कुछ पॉजिटिव काम भी करने चाहिए, तभी देश आगे बढ़ेगा। मुझे आज तक यह समझ नहीं आया कि शराब घोटाला क्या है? सीबीआई को मनीष सिसोदिया के यहां रेड में भी कुछ नहीं मिला। मनीष सिसोदिया ने यह कहा भी है कि सीबीआई सारे स्टिंग ऑपरेशन की सोमवार तक जांच कर ले। अगर कुछ गड़बड़ है, तो गिरफ्तार कर ले और नहीं है, तो माफी मांग ले।''आप''के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि केंद्र सरकार ने 24 घंटे सीबीआई-ईडी करके पूरे देश को डरा रखा है। ऐसे देश कैसे आगे बढ़ेगा? अगर कोई गलत काम करे, तो उसको पकड़ो, लेकिन जबरदस्ती सबके उपर सीबीआई-ईड करने से देश तो आगे नहीं बढ़ेगा।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आज एक प्रेस वार्ता के दौरान मीडिया से बातचीत की। इस दौरान मीडिया द्वारा भाजपा के स्टिंग ऑपरेशन पर पूछे गए सवाल पर ''आप''के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मनीष सिसोदिया जी ने तो कह दिया है कि सीबीआई की जांच चल रही है। सारे स्टिंग ऑपरेशन सीबीआई को सौंप दो। सीबीआई सोमवार तक जांच कर ले। चार दिन तो बहुत होते हैं। अगर कुछ गड़बड़ है, तो गिरफ्तार कर ले और गड़बड़ नहीं है, तो सोमवार को माफी मांग ले।''आप''के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मुझे आज तक यह समझ नहीं आया कि शराब घोटाला क्या है? पहले ये लोग बोले कि 1.5 लाख करोड़ रुपए का है। दिल्ली का बजट ही 70 हजार करोड़ रुपए का है, 1.5 लाख करोड़ रुपए का घोटाला कैसे हो गया? इनका एक और नेता बोला कि 8 हजार करोड़ रुपए का घोटाला है। इनका तीसरा नेता बोला कि 1100 करोड़ रुपए का घोटाला है। वहीं, एलजी साहब बोले कि 144 करोड़ रुपए का घोटाला है और सीबीआई ने अपनी एफआईआर में लिखा है कि एक करोड़ रुपए का घोटाला है। सीबीआई ने जब मनीष सिसोदिया जी के यहां रेड मारी, तो एक पैसा भी नहीं मिला। उनके लॉकर में भी कुछ नहीं मिला। सीबीआई वाले उनके गांव भी होकर आ गए। उनके गांव वालों से सीबीआई ने पूछा कि मनीष जी ने कोई जमीन आदि तो नहीं खरीदी है। कुछ नहीं मिला। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मैं समझता हूं कि केंद्र सरकार को सुबह से शाम तक सीबीआई-ईडी करने के बजाय देश के लिए कुछ पॉजिटिव काम भी करने चाहिए। देश के लिए पॉजिटिव काम नहीं करेंगे, तो देश आगे कैसे बढ़ेगा। 24 घंटे सीबीआई-ईडी करके पूरे देश को डरा रखा है। ऐसे देश कैसे आगे बढ़ेगा। कोई गलत काम करे, तो उसको पकड़ो। लेकिन जबरदस्ती सबके उपर सीबीआई-ईड करने से देश तो आगे नहीं बढ़ेगा। हमारी 95 फीसद प्रेस कांफ्रेंस पॉजिटिव चीजों के उपर होती है। हमारे सरकारी स्कूलों के करीब 1100 बच्चे नीट और जेईई के पेपर क्लीयर किए हैं। यह बहुत बड़ी बात है कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चे इंजीनियरिंग और मेडिकल के पेपर पास कर रहे हैं। ऐसे ही उनको भी अच्छा और पॉजिटिव काम करना चाहिए।

प्रतियोगी परीक्षा में उम्दा प्रदर्शन एवं उत्तीर्ण हेतु बताए सफलता के मंत्र

कपिल शर्मा/गौरवशाली भारत

नाँगल चौधरी। प्रतियोगिता परीक्षाओं में प्रवेश और पढ़ाई को लेकर अपने कैरियर के प्रति अक्सर विद्यार्थियों में असमंजस बना रहता है। सही मार्गदर्शन नहीं मिलने से विद्यार्थी अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर पाते हैं। जटिल प्रतियोगी परीक्षाओं की सफलता के लिए विशेषज्ञों की राय में रणनीति तैयार करना आवश्यक बताया गया है। बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय के सौजन्य से शुक्रवार को छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के मंत्र विषय पर व्याख्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनिता तँवर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

इस कार्यशाला में नई दिल्ली से संचालित शिक्षित विद्यार्थियों की सुविधा के लिए गुगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध करियर विल एप्प के कार्यकारी निदेशक ओम शर्मा मुख्य वक्ता स्वरूप उपस्थित हुए। उन्होंने अपने सम्बोधन में छात्राओं को संबोधित करते हुए सिविल सर्विसेज, संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा (आईएएस, आई.पी.एस, आई.एफ.एस), राज्य लोक सेवा परीक्षा, एसएससी, सीडीएस, एनडीए, सीसेट, नेवी, एयरफोर्स, पुलिस, अर्धसैनिक फॉर्स, बैंकिंग सेक्टर, एचटेट, नेट, स्लेट, क्लर्क, सीजीएल, सीईटी, इत्यादि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और सफलता के सन्दर्भ में छात्राओं को विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रवेश और तैयारी के लिए सरल उपायों पर आधारित विषय सामग्री के बारे में अवगत कराया। उन्होंने किसी भी प्रतियोगिता की तैयारी के लिए ऑनलाइन क्लासेज ज्वाइन करने पर छात्राओं को स्कॉलरशिप देने की घोषणा की।

महाविद्यालय के आईक्यूएसी प्रकोष्ठ की प्रभारी संतोष यादव ने बताया कि मुख्य वक्ता ओम शर्मा अब संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा फैकल्टी, आई टी स्पेशलिस्ट, डाटा साईंटिस्ट मैनेजर और पब्लिक स्पीकर हैं। उन्होंने कहा कि, छात्राओं की जागरूकता और शैक्षणिक विषय पर आधारित एवं व्यक्तित्व भविष्य निर्माण के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम समय-समय पर महाविद्यालय द्वारा कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक प्रोग्राम का उद्देश्य जागरूकता एवं मनोबल बढ़ाना है। ताकि, छात्राओं के कैरियर सम्बंधित सही दिशा एवं निर्देश मिल सके।

महिला कॉलेज में प्रतियोगी परीक्षा में सफलता हेतु मंत्र विषय पर व्याख्यान की सराहना करते हुए और कार्यक्रम की सम्पन्नता के दौरान कॉलेज प्राचार्या डॉ. अनिता तँवर ने सभी वक्ताओं और आईक्यूएसी प्रभारी का धन्यवाद किया। प्राचार्या ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कार्यशाला में उपस्थित स्टॉफ़ श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि, इस व्याख्यान से निश्चिततौर पर छात्राओं के कैरियर को नई दिशा मिलेगी। साथ ही उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि, बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय छात्राओं के बहुमुखी विकास के लिए प्रतिबद्ध है। इस विशेष कार्यशाला के अवसर पर सभी स्टॉफ सदस्य व छात्राएँ उपस्थित रही।

दिल्ली में नाइजीरियाई महिला को हुआ मंकीपॉक्स

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में नाइजीरिया की 30 वर्षीय महिला मंकीपॉक्स से संक्रमित पाई गई है। दिल्ली में यह मंकीपॉक्स का आठवां और देश में वायरल संक्रमण का 13वां मामला है। सूत्रों ने शुक्रवार को इस बारे में बताया कि संक्रमित महिला को इलाज के लिए लोक नायक जय प्रकाश अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूत्रों ने बताया कि एक अन्य व्यक्ति के मंकीपॉक्स से संक्रमित होने की आशंका है और उसे भी दिल्ली के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। एक सूत्र ने कहा कि दिल्ली में अब तक मंकीपॉक्स के कुल आठ मामले सामने आए हैं। नई मरीज 30 वर्षीय एक नाइजीरियाई महिला है, उसे एलएनजेपी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उसकी स्थिति पर नजर रखी जा रही है। वहीं, एक संदिग्ध मरीज जो नाइजीरियाई महिला है उसे 14 सितंबर को भर्ती कराया गया था, सातवें और आठवें पुष्ट मामले और संदिग्ध मामले को वर्तमान में भर्ती कराया गया है, तीनों मरीज ठीक हैं। इन आठ मामलों में तीन पुरुष भी शामिल हैं। एक वरिष्ठ डॉक्टर ने कहा कि शुरुआती छह मामलों का सफल इलाज किया गया और उन्हें छुट्टी दे दी गई। मंकीपॉक्स एक वायरल जूनोटिक बीमारी है जिसमें बुखार, त्वचा के घाव, लिम्फैडेनोपैथी, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, थकावट, ठंड लगना या पसीना और गले में खराश और खांसी जैसे सामान्य लक्षण होते हैं। एलएनजेपी अस्पताल और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा हाल ही में किए गए एक अध्ययन के अनुसार, पहले पांच मामलों में रोगियों में हल्के से मध्यम ग्रेड आंतरायिक बुखार, मायलगिया और जननांगों, धड़ और ऊपरी अंग पर घाव देखे गए।

हर दिन 10-15 लोग करते थे रेप, 14 साल की रिसेप्शनिस्ट ने बताई आपबीती

गुरुग्राम। मिलेनियम सिटी के एक मॉल में स्थित स्पा सेंटर में नौकरी देकर 14 वर्षीय नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म, मारपीट और वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर बुधवार को महिला थाना पूर्व में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हालांकि, अभी तक आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई है। मूलरूप से दिल्ली की रहने वाली किशोरी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि अगस्त में उसको एक युवती मिली थी। उसने सोहना रोड स्थित एक मॉल में बने स्पा सेंटर में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी दिलवाई थी। आरोप है कि स्पा सेंटर में पहले ही दिन मसाज के लिए आए एक युवक के साथ पीड़िता को जबरदस्ती अंदर कमरे में जाने के लिए बोला गया। जब किशोरी ने मना किया तो आरोपियों ने कहा कि उसे यह काम करना पड़ेगा। ऐसे में किशोरी कमरे में गई और कुछ देर बाद बाहर आकर बोली कि वह कल से काम पर नहीं आएगी।

स्पा सेंटर में मौजूद युवक ने उसे उसका अश्लील वीडियो दिखाया। साथ ही नहीं आने पर वायरल करने की धमकी दी। वह डर के चलते स्पा सेटर में पांच से छह दिन और आई। इस दौरान किशोरी ने आरोप लगाया कि उसके साथ गैंगरेप किया गया और विरोध करने पर मारपीट कर जान से मारने की धमकी भी दी। उसने कहा कि हर दिन 10-15 लोग उसका रेप करते थे। परिजन स्पा सेंटर में लेने आए पुलिस की पूछताछ में किशोरी ने खुलासा किया कि स्पा सेंटर में उसके परिजन छह दिन बाद आकर लेकर गए। पूरा घटनाक्रम परिजनों को बताया, जिसके बाद पुलिस को शिकायत दी गई।

17 सितम्बर को जनपद गौतमबुद्धनगर में आर्बिट्रेशन के निष्पादन वादों की विशेष लोक अदालत का किया जायेगा आयोजन

ग्रेटर नोएडा। उच्च न्यायालय इलाहाबाद एवं उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशो के अनुपालन में तथा जनपद न्यायाधीश गौतमबुद्धनगर की अध्यक्षता में 17 सितम्बर 2022 को अपरान्ह् 2 बजे के उपरान्त आर्बिट्रेशन के निष्पादन वादों की विशेष लोक अदालत का आयोजन जनपद न्यायालय गौतमबुद्धनगर में किया जा रहा है। उक्त लोक अदालत में आर्बिट्रेशन के निष्पादन वादो को आपसी सुलह-समझौते के माध्यम से निस्तारित किया जायेगा। ऐसे प्रकरणों से संबंधित बैंक एवं पक्षकार अधिक संख्या में जनपद न्यायालय में उपस्थित आकर अपना वाद निस्तारित करा सकते है।

नोएडा में खराब गुणवत्ता की सड़कों का निर्माण कर रहे ठेकेदार, लोगों ने जताया आक्रोश

संवाददाता/गौरवशाली भारत

नोएडा। नोएडा सेक्टर -6 के पॉकेट 7 EWS सेक्टर -82 में ठेकेदारों के द्वारा सड़क निर्माण जो कार्य किया जा रहा है उस से स्थानीय इलाके के लोगों में रोष है. रोष का कारण काम को सही तरीके से नही करना है. आर .डब्लू .ए पॉकेट -7 के अध्यक्ष शैलेन्द्र मिश्र ने निर्माण कार्यों पर टिपण्णी करते हुए कहा कि पॉकेट -7 के अंदर कि सड़क को प्राधिकरण के माध्यम से बनाया जा रहा है जिसमे ठेकेदार के द्वारा जो सड़क बनाया जा रहा है उसमे बहुत ही कमी है जैसे आर .सी .सी जो किया जा रहा सिर्फ 1 .30 इंच से 2 इंच ही किया जा रहा एवं जो अभी ही सड़क काफी जगह क्रैक हो गया है एवं सड़क पर पानी लग जाता है एवं सड़क पर जो सीवर का मेंन होल था उसको बंद कर दिया है जिसके कारण आये दिन फिर समस्या बढ़ सकती है एवं पॉकेट के अंदर लगभग 42 गली है जिसमे कुछ गली में पैसे ले कर ठेकेदार ने आर .सी.सी. कर दिया है बाकी गली को छोड़ दिया है जिससे पॉकेट वासियो में आक्रोश है एवं सड़क के किनारे भी जो काम किया जा रहा है ओ संतोष जनक नहीं है। शैलेन्द्र मिश्र द्वारा प्रशानिक अधिकारियों को इस लापरवाही के विषय में जानकारी दे दी गयी है जिसमे उन्होंने निर्माणाधीन सड़क की जांच करने के सुझाव दिए है एवं जहाँ सड़क क्षतिग्रस्त है उसको सही करने की मांग की है. इसके अलावा उन्होंने कहा कि पॉकेट की सभी गलियों की आर .सी.सी हो एवं टेंडर में दी गयी 4 इंच आर .सी.सी .की जाए साथ ही ढके हुए सीवर को सही किया जाए।

केजरीवाल दिल्ली में झूठ का पहाड़ खड़ा कर रहे हैं : बिधूड़ी

16 नए लैंडफिल साइट बनाने का आरोप पूरी तरह आधारहीन

विवेक राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को नसीहत दी है कि वह झूठ बोलने से बाज आएं। दिल्ली में 16 तो क्या, एक भी नई लैंडफिल साइट नहीं बन रही है, लेकिन मुख्यमंत्री केजरीवाल झूठ का पहाड़ खड़ा कर रहे हैं। बिधूड़ी ने कहा कि मुख्यमंत्री के संवैधानिक पद पर बैठकर सफेद झूठ बोलना पद की गरिमा के भी खिलाफ है और गैरकानूनी भी है।

बिधूड़ी ने कहा कि एक दिन पहले उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने शराब के दूसरे स्टिंग ऑपरेशन से ध्यान हटाने का असफल प्रयास करते हुए आरोप लगाया था कि दिल्ली में 16 नए लैंडफिल साइट बनाए जा रहे हैं जिससे दिल्ली कूड़े का ढेर बन जाएगी और दिल्लीवालों का जीना हराम हो जाएगा। हैरानी की बात यह है कि नगर निगम द्वारा इस आधारहीन आरोप का खंडन करने के बावजूद आज मुख्यमंत्री केजरीवाल ने इसी आरोप को लेकर प्रेस कांफ्रेंस कर डाली। केजरीवाल और उनके सहयोगी यह समझते हैं कि एक झूठ को सौ बार बोलो तो वह सच हो जाता है जबकि सच्चाई यह है कि झूठ हमेशा झूठ ही रहता है।

बिधूड़ी ने कहा कि दिल्ली में अगर 16 लैंडफिल साइट बन रहे होते तो उसका या तो नगर निगम में कोई प्रस्ताव होता या उन जगहों के नाम होते जहां इन्हें बनाया जाना है लेकिन मुख्यमंत्री या उपमुख्यमंत्री ने कोई दस्तावेज पेश करना तो दूर, उसका उल्लेख तक नहीं किया। जाहिर है कि इस निराधार आरोप को आम आदमी पार्टी ने दिमाग में बुन लिया और जनता के सामने पेश कर दिया। उन्होंने कहा कि जब तीन नगर निगम थे और दिल्ली सरकार पर नगर निगम की वित्तीय जिम्मेदारी थी लेकिन केजरीवाल सरकार ने तीनों नगर निगमों का फंड रोककर उन्हें पंगु बना दिया। दिल्ली सरकार ने कूड़े के पहाड़ों को कम करने के लिए अपनी ओर से कभी एक तिनका भी टेड़ा नहीं किया। अब उपराज्यपाल श्री विनय कुमार सक्सेना ने इन पहाड़ों को खत्म करने का बीड़ा उठाया है और वह लगातार इसकी निगरानी कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने स्वयं स्वीकार किया है कि उपराज्यपाल ने मीटिंग में उनसे भी इस समस्या पर बात की है। होना तो यह चाहिए था कि दिल्ली सरकार अब उपराज्यपाल के साथ सहयोग करके तीनों लैंडफिल साइट की ऊंचाई कम करने के सुझाव देती लेकिन उन्होंने 16 नई लैंडफिल साइट का शगूफा छोड़कर अपनी जग हंसाई कराई है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि एक तो केजरीवाल सरकार की घोटालों में घिरने के कारण छवि मिट्टी में मिल गई है और दूसरी तरफ ऐसे आधारहीन आरोप लगाकर वे अपनी विश्वसनीयता भी खत्म कर रहे हैं।

दादरी पुलिस ने दो गांजा तस्करों को किया गिरफ्तार, कब्जे से 210 किलोग्राम गांजा सहित आईसर कैंटर एवं स्विफ्ट गाड़ी बरामद

ग्रेटर नोएडा। थाना दादरी पुलिस ने दो गांजा तस्करों दीपक पुत्र ओमकार सिंह निवासी चिटहैरा थाना दादरी जनपद गौतमबुद्धनगर, शहजाद उर्फ सोनू पुत्र सत्तार निवासी वार्ड नंबर 25 नई आबादी दादरी जनपद गौतमबुद्धनगर को पल्ला नहर के पास शहजाद के कबाड़ी के गोदाम से गुरुवार को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए अभियुक्तों के कब्जे से पुलिस ने 210 किलोग्राम गांजा, एक आईसर कैंटर नंबर यूपी 16 सीटी 1669 और एक स्विफ्ट गाडी नंबर डीएल 5सी क्यू 6126 बरामद की है।अभियुक्तों ने पूछताछ के दौरान बताया गया कि हम दोनों नीरज उर्फ कालू व बंटी के साथ मिलकर बाहर से अवैध गांजा लेकर आते हैं। जिसे हम शहजाद के गोदाम में लाकर रखते हैं तथा मौका पाकर अपनी स्विफ्ट गाड़ी से जगह जगह पर बेचते हैं। उससे प्राप्त धन को बराबर बराबर हिस्सों में बांट कर अवैध लाभ प्राप्त करते हैं। आज भी हम चारों आईसर कैंटर से गांजा लेकर आए थे जिसे हम स्विफ्ट में रखकर अलग जगह बेचने ले जा रहे थे। वाछिंत अभियुक्त नीरज उर्फ कालू पुत्र प्रकाश निवासी हृदयपुर थाना सिकन्दराबाद जनपद बुलन्दशहर, बंटी पुत्र धर्मवीर निवासी जोखाबाद थाना सिकन्दराबाद जनपद बुलन्दशहर की गिरफ्तारी हेतू अलग से टीम गठित कर गिरफ्तारी का प्रयास किया जा रहे हैं। अभियुक्तगण शातिर किस्म के गांजा तस्कर हैं।

बादलपुर पुलिस ने एक अभियुक्त को अवैध असलहे के साथ किया गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। थाना बादलपुर पुलिस ने शुक्रवार को बिश्नौली गेट के पास जीटी रोड के पास से एक अभियुक्त अनिल पुत्र ज्ञानेन्द्र निवासी भाटिया मोड हनुमान मन्दिर के पीछे थाना कविनगर गाजियाबाद को गिरफ्तार कर लिया।पकड़े गए अभियुक्त के कब्जे से पुलिस ने एक तमंचा 32 बोर मय एक कारतूस जिन्दा बरामद किया है। अभियुक्त शातिर किस्म का अपराधी है। जिसके विरूद्ध पुलिस ने आवश्यक वैधानिक कार्यवाही कर न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया है।

फरीदाबाद में तोड़े जाएंगे एक हजार अवैध निर्माण, सरकार ने नगर निगम से मांगी रिपोर्ट

फरीदाबाद। फरीदाबाद की स्मार्ट सिटी में एक हजार से अधिक अवैध निर्माण तोड़े जाएंगे। अदालत के आदेश पर नगर निगम ने करीब एक हजार अवैध निर्माण की पहचान कर ली है। अब इनको तोड़ने की तैयारी की जा रही है। वहीं, प्रदेश सरकार ने भी अवैध निर्माण की रिपोर्ट निगम से मांगी है। शहर के सभी पांचों जोन में कार्यकारी अभियंताओं के नेतृत्व में टीम गठित की गई है, जो अपने जोन के अवैध निर्माण की रिपोर्ट तैयार करने में जुटे हैं।

रिपोर्ट वार्ड स्तर पर तैयार करके आयुक्त कार्यालय में जाएगी। सूत्रों के

मुताबिक अधिकांश अवैध निर्माण एनआईटी इलाके में हैं। एनएच इलाकों में लोगों ने अपने घरों के बाहर ही अवैध कब्जे और निर्माण किए हुए है। इन सभी को हटाने के लिए अदालत ने आदेश दिए हैं। याचिकाकर्ता केएल गेरा ने बताया कि एनएच इलाकों में अवैध निर्माणों को हटाने के आदेश अदालत कई याचिकाओं पर दे चुकी है। अवैध निर्माण नहीं तोड़ने पर अब आयुक्त पर कार्रवाई होगी।

नगर निगम की लापरवाही के चलते अतिक्रमण पर अंकुश नहीं लग रहा है। करीब सत्तर फीसदी शहर बिना नक्शे के ही बसा है। नक्शा पास करके केवल सेक्टरों में मकान बने हैं। जबकि एनएच इलाके और कॉलोनियों में लोगों ने अपनी मर्जी से मकानों का निर्माण किया है। अब इनके खिलाफ नगर निगम की ओर से तोड़फोड़ करने की कार्रवाई की जाएगी।

अतिरिक्त निगमायुक्त इंद्रजीत ने कहा, नगर निगम आयुक्त ने इंजीनियरिंग शाखा को अदालत के आदेश पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। करीब एक हजार अवैध निर्माण की पहचान की गई है। जल्द ही इन पर कार्रवाई की जाएगी।

रास्तों पर कब्जे की शिकायत कर रहे लोग

फरीदाबाद 311 एप पर भी 20 फीसदी से अधिक शिकायत अवैध निर्माण और अतिक्रमण की है। बीते तीन महीनों में आई करीब 10 हजार शिकायतों में से करीब दो हजार अर्थात बीस फीसदी शिकायत अवैध निर्माण और अतिक्रमण से संबंधित लोगों ने की है। लोग अपने इलाकों में हो रहे अवैध निर्माणों और अतिक्रमण की शिकायतें कर रहे हैं। अधिकांश शिकायतें एनएच इलाकों और सेक्टरों से मिल रही हैं। लोगों ने रास्तों पर अतिक्रमण कर लिया है। जिससे लोगों की आवाजाही बाधित होती है।

अरावली में होगी इसी महीने तोड़फोड़

नगर निगम के संयुक्तायुक्त गौरव अंतिल ने बताया कि अरावली श्रृंखलाओं के बीच बसी बस्तियों और अवैध रूप से बनाए गए फार्म हाउस भी इसी महीने तोड़ने की तैयारी है।

संपादकीय

अस्वस्थ हेल्थ बजट

यह चिंता की बात है कि देश के सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में स्वास्थ्य बजट में गिरावट आई है। हालांकि, महामारी के दौर ने केंद्र व राज्य सरकारों को स्वास्थ्य बजट बढ़ाने को बाध्य किया, लेकिन इस बजट में निरंतर वृद्धि जरूरी है। तभी आम आदमी को राहत मिलेगी। दरअसल, नेशनल हेल्थ अकाउंट के नवीनतम आंकड़ों में खुलासा हुआ कि वर्ष 2004-05 से जीडीपी के अनुपात में स्वास्थ्य बजट में जो लगातार वृद्धि जारी थी, वह वर्ष 2018-19 में गिरावट दर्ज करती है। पिछले वित्त वर्ष में 1.35 के मुकाबले 2018-19 में यह 1.28 फीसदी रही। सवाल है कि आर्थिक उन्नति के दावों के बावजूद हमारा स्वास्थ्य बजट क्यों नहीं बढ़ रहा है। कोविड संकट ने केंद्र व राज्य सरकारों को इस बात का अहसास कराया कि पर्याप्त बजट न होने के चलते महामारी के दौरान देश ने बड़ी कीमत चुकाई है। यही वजह है कि इसे स्वास्थ्य आपातकाल मानते हुए केंद्र व राज्य सरकारों ने सेहत की प्राथमिकताओं के चलते अपने बजट को बढ़ाया। इससे सबक लेकर हमें जीडीपी के मुकाबले स्वास्थ्य बजट में लगातार वृद्धि करनी चाहिए। यहां सवाल यह भी कि जब वर्ष 2017 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में 2025 तक जीडीपी के अनुपात में स्वास्थ्य बजट 2.5 फीसदी करने का लक्ष्य रखा था तो फिर इस दिशा में ईमानदार प्रयासों में निरंतरता क्यों नहीं नजर आती है। निस्संदेह, देश की तरक्की के अनुपात में स्वास्थ्य सेवाओं का भी विस्तार किया जाना चाहिए। देशवासियों की बेहतर सेहत भी आर्थिक प्रगति का ही सूचक है। वैसे हाल में जारी आंकड़ों का सकारात्मक पक्ष यह भी है कि भारतीयों द्वारा स्वास्थ्य की देखभाल पर जेब से किये जाने वाले खर्च में गिरावट दर्ज की गई है। वर्ष 2004-05 की तुलना में यह वर्ष 2018-19 में कुल राष्ट्रीय व्यय के 70 फीसदी के मुकाबले 48 फीसदी हो गया। इसके मूल में तथ्य यह भी है कि इस अवधि में सरकारी स्वास्थ्य व्यय 22.7 से बढ़कर 40.6 हो गया।

बहरहाल, सरकारों को करदाताओं से अर्जित आय को विवेकशील ढंग से खर्च करके स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी जरूरतों को प्राथमिकता देनी होगी। इसमें दो राय नहीं कि चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार शहरों तक ही केंद्रित नहीं होना चाहिए। यदि शहरों में बड़े अस्पताल बनते हैं तो ग्रामीणों को यातायात व रहने-खाने पर अधिक खर्च करना पड़ता है, जिससे उनका स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च बढ़ जाता है। निस्संदेह, बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं हर नागरिक का अधिकार है। सरकारें सुनिश्चित करें कि ग्रामीणों को निकट के कस्बों व शहरों में गुणवत्ता का उपचार मिल सके। साथ ही वे फर्जी डॉक्टरों व नीम-हकीमों के चंगुल से मुक्त हो सकेंगे। इसके साथ ही स्वास्थ्य तंत्र भ्रष्टाचार से मुक्त हो और केंद्र व राज्य स्वास्थ्य बजट में लगातार वृद्धि करते रहें। वहीं यह बात शिद्दत से महसूस की जाती रही है कि ग्रामों व छोटे शहरों में भी विशेषज्ञता का उपचार उपलब्ध हो। जब सरकारें चिकित्सा सेवाओं पर पर्याप्त धन खर्च करती हैं तो मरीजों व उनके तीमारदारों की जेब पर खर्च का दबाव कम होता है। हालांकि, स्वास्थ्य सेवाएं राज्य सूची में शामिल होती हैं लेकिन केंद्र सरकार के बजट व पारदर्शी नीतियों से राज्यों की चिकित्सा गुणवत्ता में सुधार होता है। केंद्र की नीतियां बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के अनुकूल माहौल बना सकती हैं। कोरोना संकट में केंद्र की प्रभावी नीतियों से बेहतर टीकाकरण के लक्ष्य हासिल भी हुए। निस्संदेह, किसी भी लोक कल्याणकारी राज्य की सफलता बेहतर शिक्षा व चिकित्सा सेवाओं पर निर्भर करती है। कोरोना संकट में निजी अस्पतालों ने मरीजों को जिस तरह उलटे उस्तरे से मूंडा, उसको देखते हुए सरकारी चिकित्सा सेवा की जरूरत का बोध होता है। प्राइवेट अस्पतालों का विस्तार हो और उसमें निजी निवेश को बढ़ावा मिले, लेकिन संतुलन के लिये बेहतर सरकारी चिकित्सा सेवाओं का होना भी जरूरी है। केवल स्वास्थ्य बीमा योजनाओं और निजी अस्पतालों के वर्चस्व से आम आदमी को राहत नहीं मिल सकती। केंद्र सरकार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जीडीपी के तीन फीसदी के स्वास्थ्य सेवा पर खर्च के पैमाने के लक्ष्य को हकीकत बनाने के लिये ईमानदार प्रयास करने चाहिए।

केशव प्रसाद मौर्य को निशाना बना रहे अखिलेश

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव आजकल योगी सरकार में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के खिलाफ बेहद आक्रामक नजर आ रहे हैं। अखिलेश किसी न किसी बहाने मौर्या पर निशाना साधते रहते हैं। सपा प्रमुख कभी मौर्य के परिजनों को कभी राजनीति में खींच लाते हैं तो कभी उनके प्रति सहानुभूति वाला व्यवहार करते नजर आते हैं। मौर्य को मुख्यमंत्री का पद दिलाने का सपना दिखाते हैं। अखिलेश और मौर्य विवाद में कभी पलड़ा अखिलेश का भारी नजर आता है तो कभी मौर्य बीस पड़ते दिखाई देते हैं। ऐसे में चर्चा है कि आखिर ऐसा क्या हो गया कि अखिलेश ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को छोड़कर केशव प्रसाद मौर्य पर हमले शुरू कर दिए? इसके पीछे की सियासत क्या है। राजनीति के कुछ जानकार इसे अखिलेश यादव की सोची समझी रणनीति का हिस्सा बताते हैं, जिसके सहारे सपा प्रमुख पिछड़ों के मन में बीजेपी के प्रति नफरत का भाव पैदा करना चाहते हैं। उत्तर प्रदेश में पिछड़ों की आबादी करीब चालीस फीसदी है। 2014 के बाद से कई चुनावों में पिछड़ा वोटर भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान कर रहा है, जबकि इससे पहले तक समाजवादी पार्टी की पिछड़ों में अच्छी खासी पकड़ थी। पूर्व सपा प्रमुख मुलायम सिंह यादव को तो पिछड़ों का बड़ा नेता होने का तमगा तक हासिल था। पिछड़ों के सहारे मुलायम ने सियासत की लम्बी और कामयाब पारी खेली थी, लेकिन अखिलेश यादव में वह बात नहीं है। अखिलेश के सपा की कमान संभालने के बाद पिछड़ा वोटर सपा से विमुख होता जा रहा है। समाजवादी पार्टी की लगातार असफलता के पीछे पिछड़ा वर्ग के वोटरों का सपा से विमुख हो जाना भी बड़ी वजह है। इसीलिए बार-बार केशव प्रसाद मौर्य पर निशाना लगाकर सपा प्रमुख अखिलेश यादव पिछड़ों के बड़े वर्ग मौर्य, कुशवाहा व अन्य पिछड़े वर्ग को ये संदेश देना चाहते हैं कि उनके नेता के साथ भाजपा गलत कर रही है। वह यह दर्शाना चाहते हैं कि भाजपा में केशव प्रसाद मौर्य की कोई अहमियत नहीं है और सरकार में भी उनके साथ भेदभाव हो रहा है। चुनाव के दौरान भी अखिलेश और उनके समर्थक इसकी कोशिश कर चुके हैं। बहरहाल, समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव इस समय चौतरफा हाथ-पैर मार रहे हैं। वह समझ नहीं पा रहे हैं कि कौन-सा फार्मूला अपना कर वे अपनी लगातार हार को जीत में बदल सकते हैं। लेकिन उनके हाथ कुछ लग नहीं रहा है। इसी के चलते वह मानसिक दबाव में हैं। राजनीति विचारधारा की लड़ाई होती है लेकिन अखिलेश ने कई मौकों पर इसे व्यक्तिगत लड़ाई में भी बदलने में परहेज नहीं किया जिसका उन्हें और उनकी पार्टी को नुकसान भी उठाना पड़ा। वह कभी योगी पर हमला करते हैं तो कभी केशव प्रसाद मौर्य पर हमलावर हो जाते हैं। चाचा शिवपाल यादव पर तंज कसने का कोई मौका भी नहीं छोड़ते। 2017 के विधानसभा चुनाव में भरे मंच पर अखिलेश ने जिस तरह से अपने पिता मुलायम सिंह को भरी सभा में अपमानित किया था, वह आज भी बहुत से लोग भूल नहीं पाए हैं। अखिलेश यादव गठबंधन धर्म निभाने में भी फिसड्डी साबित हो रहे हैं। ओमप्रकाश राजभर इसकी सबसे बड़ी मिसाल हैं जिनके साथ अखिलेश का गठबंधन कुछ महीनों भी नहीं चल पाया। चाचा शिवपाल यादव कभी उनके करीब दिखते हैं, फिर अचानक दूर चले जाते हैं। अब तो यह हाल हो गया है कि सपा प्रमुख अखिलेश यादव भारतीय जनता पार्टी के नेता और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य को यह आमंत्रण देने लगे हैं कि यदि वह (केशव प्रसाद) 100 विधायक लेकर आ जाएं तो अखिलेश, उन्हें मुख्यमंत्री बनवा देंगे। इस पर शिवपाल यादव पूछ रहे हैं कि अगर केशव प्रसाद मौर्य को अखिलेश सीएम की कुर्सी सौंप देंगे तो स्वयं क्या करेंगे। इस तरह की बचकानी बातों से अखिलेश अपना स्तर लगातार गिराते जा रहे हैं। अच्छा होता कि अखिलेश यादव अपने पड़ोसी राज्य बिहार के राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव से कुछ सब सीख लेते जो किताबी ज्ञान में भले अखिलेश से अट्ठारह बैठते हों लेकिन तेजस्वी की सियासी पकड़ अखिलेश से कहीं ज्यादा बेहतर है।

'भारत जोड़ो यात्रा' राजनीतिक महत्वाकांक्षा की उड़ान

- ललित गर्ग-

भारत की माटी में पदयात्राओं का अनूठा इतिहास रहा है। असत्य पर सत्य की विजय हेतु मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा की हुई लंका की ऐतिहासिक यात्रा हो अथवा एक मुट्ठी भर नमक से पूरा ब्रिटिश साम्राज्य हिला देने वाला 1930 का डाण्डी कूच, बाबा आमटे की भारत जोड़ो यात्रा हो अथवा राष्ट्रीय अखण्डता, साम्प्रदायिक सद्भाव और अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व भाव से समर्पित एकता यात्रा, यात्रा के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। भारतीय जीवन में पैदल यात्रा को जन-सम्पर्क का सशक्त माध्यम स्वीकारा गया है। ये पैदल यात्राएं सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक यथार्थ से सीधा साक्षात्कार करती हैं। लोक चेतना को उद्बुद्ध कर उसे युगानुकूल मोड़ देती हैं। इनदिनों कांग्रेस पार्टी की भारत जोड़ो यात्रा चर्चा में हैं, यह एक राजनीतिक महत्वाकांक्षा की यात्रा है। केरल के वायनाड के सांसद और कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में पिछले हफ्ते तमिलनाडु से शुरू हुई इस 'भारत जोड़ो यात्रा' के 150 दिनों की अवधि में कन्याकुमारी से कश्मीर तक 3,570 किलोमीटर की दूरी तय की जानी है। इसका एक बड़ा मकसद 2024 के आम चुनावों की तैयारी माना जा रहा है। इस यात्रा को भारत जोड़ो यात्रा नाम दिया गया है, अच्छा होता भारत को जोड़ने से पहले कांग्रेस पार्टी भीतर से जुड़ जाती। यह पदयात्रा ऐसे वक्त में निकली है, जब पार्टी का जनाधार सिकुड़ा है और तमाम दिग्गज एक-एक करके पार्टी को अलविदा कह रहे हैं, भारत जोड़ो यात्रा के जरिये कांग्रेस पार्टी अपना जनाधार बढ़ाने की कोशिश कर रही है, यह कोशिश कितनी कामयाब होती है, वक्त बतायेगा। कांग्रेस अपनी बात को किस हद तक लोगों तक पहुंचा पायी है, यह भविष्य के गर्भ में हैं। कांग्रेस की यह पदयात्रा जम्मू-कश्मीर में खत्म होने से पहले बारह राज्यों से गुजरेगी। यात्रा जहां नहीं जायेगी वहां सहायक यात्राएं निकाली जाएंगी। साथ ही हर राज्य में विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। निस्संदेह, पार्टी 2024 के लोकसभा चुनाव के लिये अपने जनाधार को विस्तार देने की तैयारी में है। पार्टी का कहना है कि सत्तारूढ़ राजग सरकार के कार्यकाल में सामाजिक ध्रूवीकरण से राष्ट्रीय एकता को खतरा पैदा हुआ है। वहीं महंगाई व बेरोजगारी से त्रस्त समाज को राहत देने की ईमानदार कोशिश नहीं हो रही है। दरअसल, दक्षिण भारत में ध्रूवीकरण की राजनीति प्रभावी न होने के कारण कांग्रेस ने अपनी यात्रा यहां से शुरू करके दक्षिण में अपनी पकड़ मजबूत बनाने की कोशिश की है।

दिलचस्प तथ्य है कि पिछले साल फरवरी में जारी सी-वोटर के एक सर्वे के अनुसार, राहुल गांधी तमिलनाडु और केरल में प्रधानमंत्री पद के लिए पसंदीदा उम्मीदवार के तौर पर उभरे थे, जहां दूसरे नेताओं के मुकाबले उनका अंतर भी अच्छा खासा था। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि पार्टी को पुनर्जीवित करने के लिए दक्षिण भारत से इस पदयात्रा की शुरुआत करने के पीछे यह भी एक बड़ा मकसद था। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा, एक महत्वाकांक्षी राजनीतिक परियोजना है। इससे एक नेता के रूप में उनकी स्वीकार्यता की परीक्षा होगी और देश के मिजाज का पता चलेगा। श्री गांधी ने कहा कि यह यात्रा राष्ट्रीय ध्वज के मूल्यों के तले सभी भारतीयों को एकजुट करने की कोशिश है, जिसका मूल सिद्धांत विविधता है। प्रश्न है कि धर्म, जाति, सम्प्रदाय के नाम पर देश को जोड़ने की बजाय तोड़ने का काम करने वाली पार्टी का भारत जोड़ो को लक्ष्य एक छलावा है, एक प्रपंच है। कांग्रेस नेता ने कहा कि मौजूदा सरकार में हिंदुत्व की विचारधारा के साये में यह मूल्य अब खतरे में है। हिंदुत्व के कटु एवं मुखर आलोचक और विविधता और उदारवाद के पैरोकार श्री गांधी, कांग्रेस को पुनर्जीवित करने के लिए अब तक अपनी सोच के साथ पर्याप्त जन समर्थन नहीं जुटा पाए हैं। इस बीच, हिंदुत्व की विचारधारा इतनी लोकप्रिय हुई कि उसने दिल्ली पर दो बार सत्ता हासिल कर ली। श्री गांधी को इस बात के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा है कि वे लगातार सक्रिय रहने की सीमित क्षमता रखने वाले मौसमी राजनेता हैं। उनमें राजनीतिक परिपक्वता का अभाव है, वे देश की जनता से जुड़ी समस्याओं को उठाने में उतने गंभीर नहीं है, जितना उन्हें होना चाहिए। ऐसी राजनीतिक यात्राओं ने इतिहास और यहां तक कि हाल में भी कई नेताओं की किस्मत लिखने और विचारधारा को उर्वर बनाने का काम किया है। महात्मा गांधी से लेकर लालकृष्ण आडवाणी, चन्द्रशेखर तक इस बात की मिसाल हैं। इसलिए श्री गांधी को हर कदम पर उनके प्रशंसकों, आलोचकों और सबसे जरूरी तौर पर खुले विचारों वाले संशयवादियों द्वारा बारीकी से परखा जाएगा।

निस्संदेह, हर पदयात्रा के राजनीतिक निहितार्थ होते हैं। महात्मा गांधी ने दांडी यात्रा की शुरुआत ऐसे वक्त में की थी जब देश को आजादी के लिये जोड़ने एवं कांग्रेस में स्फूर्ति लाने की महती आवश्यकता थी। वहीं चंद्रशेखर भी पार्टी के आंतरिक राजनीतिक हालात से क्षुब्ध थे। लालकृष्ण आडवानी ने हिन्दुत्व को मजबूती देने के लिये यात्रा की। कमोबेश कांग्रेस पार्टी ऐसे ही संक्रमणकाल से गुजर रही है। नेतृत्व का प्रश्न भी उसके सामने है। लगातार निस्तेज होती पार्टी में प्राण-संचार करने का लक्ष्य भी है। भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे गांधी परिवार के शीर्ष नेताओं से केंद्रीय एजेंसियों की पूछताछ जारी है। अपने लंबे-चौड़े इस्तीफे में गुलाम नबी आजाद ने कहा भी कि देश जोड़ने के बजाय इस समय कांग्रेस को जोड़ने की जरूरत है। सवाल यह भी है कि आगामी 2024 के महासमर में राजग के मुकाबले के लिये विपक्षी एकता के प्रयासों की कड़ी में क्या विपक्षी दलों को भी पदयात्रा में शामिल नहीं किया जाना चाहिए था? इस बीच कुछ अन्य विपक्षी दलों द्वारा भी पदयात्रा शुरू करने की खबरें हैं। भले ही कांग्रेस पदयात्रा का लक्ष्य देश में ध्रूवीकरण से उत्पन्न खतरों से लोगों को अवगत कराना, महंगाई व बेरोजगारी के मुद्दे पर जन दबाव बनाना बताती हो, मगर उसका मुख्य लक्ष्य तो राहुल गांधी की जन स्वीकार्यता में इजाफा करना ही है। भारत जोड़ो यात्रा की टैगलाइन- 'मिले कदम, जुड़े वतन' का नारा पार्टी के लिये कितना सार्थक होगा, यह आने वाला वक्त बताएगा, लेकिन इससे पार्टी संगठन में जान फूंकने में मदद अवश्य मिलेगी। कांग्रेस ने मई महीने में उदयपुर में संपन्न मंथन सत्र में इस यात्रा की घोषणा की थी। पार्टी को पुनर्जीवित करने के लिए उदयपुर में जो एलान हुए उन उपायों को आजमाए जाने पर ही यह यात्रा ज्यादा उपयोगी साबित होगी। भारत के तटस्थ लोगों की नाराजगी यह है कि सामान्य और प्रतिभाशाली कार्यकर्ताओं की कीमत पर परिवारवादियों ने कांग्रेस पार्टी के भीतर की सत्ता पर कब्जा कर रखा है। उदयपुर के सम्मेलन में पार्टी की अंदरुनी सत्ता में वंशवाद पर अंकुश लगाने का संकल्प लिया गया था, लेकिन अब तक यह कागज पर ही सिमटा हुआ है। कांग्रेस को अपनी परिवारवादी मानसिकता से उपर उठते हुए देश की बुनियादी समस्याओं पर गंभीरता से ध्यान केन्द्रित करना होगा। रोजगार जाने से लोगों की क्रयशक्ति घटी है, करोड़ों लोगों के सामने दो वक्त की रोटी का संकट खड़ा हो गया है। महंगाई पर काबू पाने में सरकार विफल साबित हो रही है। आंकड़ों के खेल में जरूर यह कुछ घटती-बढ़ती रहती है, मगर धरातल पर आम लोगों को रोजमर्रा की चीजों के लिए भी बहुत सोच-समझ कर जेब में हाथ डालना पड़ता है। इसलिए यह मुद्दा भी कांग्रेस के लिए हथियार साबित हो सकता है। इसके अलावा किसानों, मजदूरों और भ्रष्टाचार से जुड़े मसले भी हैं, जिन्हें वह गिनाने से नहीं चूक रही। हालांकि महंगाई एक ऐसा मुद्दा है, जो हर विपक्षी दल के लिए सदा से चुनावी हथियार बनता रहा है। मगर असल बात यह कि ये अस्त्र तभी कारगर साबित हो सकते हैं, जब कांग्रेस अपनी अंदरूनी उथल-पुथल से बाहर निकल कर आम मतदाता का विश्वास जीत सके। रैलियां, आंदोलन और यात्राएं कुछ देर को लोगों को जरूर प्रभावित करती हैं, मगर उनके टिकाऊ होना का दावा तभी किया जा सकता है, जब पार्टी पर लोगों का भरोसा हो।

हाई रिस्क ब्लड कैंसर के मरीज को मिली नई जिंदगी

हेमेटोलॉजी और स्टेम सेल ट्रांस्प्लांट के क्षेत्र में मेडिकल प्रगति के साथ, बोन मैरो ट्रांस्प्लांट लाइलाज और घातक कैंसर के लिए सबसे अच्छे ट्रीटमेंट के विकल्प के रूप में उभर रहा है. बोन मैरो हड्डियों के अंदर नरम वसायुक्त टिशू है जो रक्त कोशिकाओं में फैलते हैं. इस प्रक्रिया को दो हिस्सों में बांटा गया है- एलोजेनिक (टिशू मैच वाला कोई भी डोनर) और ऑटोलॉगस (जहां मरीज के शरीर से स्टेम सेल लिए जाते हैं)। बीएमटी प्रक्रिया के दौरान, क्षतिग्रस्त या नष्ट हो चुके बोन मैरो को स्वस्थ बोन मैरो से बदलने की जरूरत होती है. इसमें सबसे अहम काम मरीज और डोनर की सेल्स का मिलान करना है. फोर्टिस अस्पताल के डॉक्टरों ने हाई रिस्क ब्लड कैंसर से पीड़ित 45 वर्षीय मरीज का सफलतापूर्वक इलाज किया. क्योंकि ब्लड कैंसर हाई रिस्क की स्थिति में पहुंच चुका था, इसलिए मरीज को बचाने के लिए तत्काल इलाज की जरूरत थी. हाई रिस्क वाला केस होने के चलते महज कीमोथेरेपी का इस्तेमाल करना नाकाफी था और केस के बिगडने की आशंका अधिक थी. नोएडा स्थित फोर्टिस अस्पताल में हेमेटोलॉजी के डायरेक्टर और एचओडी डॉ राहुल भार्गव के नेतृत्व में डॉक्टरों की एक टीम ने इस मरीज का सफल इलाज किया. कैंसर का मरीज थकान, सांस लेने में तकलीफ, बुखार और शरीर में दर्द के लक्षणों के साथ अस्पताल में आया था. विस्तृत जांच रिपोर्ट से पता चला कि मरीज हाई रिस्क कैंसर से पीड़ित है और उसे तत्काल इलाज की जरूरत है. कैंसर की प्रकृति आक्रामक होने के चलते कैंसर सेल्स को कंट्रोल करने के लिए पहले इंडक्शन कीमोथेरेपी और सपोर्टिव केयर की मदद से कैंसर का भार कम किया गया और बोन मैरो ट्रांस्प्लांट के लिए मरीज की विस्तृत जांच की गई. मरीज की जेनेटिक और म्यूटेशन टेस्टिंग की गई.

डॉ राहुल भार्गव ने कहा, मरीज को फुल मैच बोन मैरो ट्रांस्प्लांट की सख्त जरूरत थी. सौभाग्य से मरीज के बड़े भाई का बोन मैरो पूरी तरह मैच हो गया और वो अपनी बहन की जिंदगी बचाने के लिए स्टैक सैल्स डोनेट करने को तैयार हो गया. हेमेटोलॉजी के कंसल्टेंट डॉ.अनुपम शर्मा ने कहा कि ऐसे हाई रिस्क केस में बोन मैरो ट्रांस्प्लांट मरीज के इलाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. बोन मौरो ट्रांस्प्लांट के दौरान, लाल रक्त कोशिकाओं, सफेद रक्त कोशिकाओं और प्लेटलेट्स को पूरी तरह नष्ट कर दिया जाता है. इस समय कम प्रतिरोधक क्षमता के चलते मरीज एक नवजात शिशु की तरह होता है, जो संक्रमण के लिए अतिसंवेदनशील होता है. कई तरह की परेशानियों और संक्रमणों के प्रबंधन के संबंध में बीएमटी के दौरान मरीज को स्थिर करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है. एक अलग व्यक्ति से स्टेम सेल को मरीज के शरीर में ट्रांसफर करना और फिर एक सफल प्रत्यारोपण के लिए उसकी स्वीकृति महत्वपूर्ण है.

ये मरीज बहुत भाग्यशाली थीं क्योंकि मरीज और उसके भाई बीएमटी के लिए 100 प्रतिशत मैच थे, हालांकि, भाई-बहनों में 100 प्रतिशत एमबीटी मैच की संभावना केवल 25-30 प्रतिशत होती है. वहीं, वर्तमान परिदृश्य में, भारत में जिन परिवारों में एक या दो बच्चे हैं, वहां पूरी तरह से मेल खाने वाले भाई-बहनों को खोजने के चांस और कम हो जाते हैं. हालांकि, आजकल मेडिकल फील्ड में तरक्की के साथ ही आधे मिलान वाले भाई-बहन वाले केसों में भी अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं.

सकारात्मक परिवर्तन राष्ट्र की उन्नति में सदैव सहायक

परिवर्तन का क्रिया चक्र खुद इस बात का प्रमाण है कि परिवर्तन की खोज ही नवीनता है। परिवर्तन का सीधा-सीधा तात्पर्य जड़ता का नाश और विकास की अनंत गाथा का प्रादुर्भाव होना और स्थिरता का अंत ही है। चलायमान परिवर्तन की विदाई स्थिर और जंगम का का समापन होता है। आज की परिस्थितियों ने जड़ता और स्थिरता को बड़ी चोट दी है। मशीनों का शोर, हथियारों की होड़ के बीच कैलिफोर्निया क्रांति ने विश्व को सूचना प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा अवदान दिया है, इस परिवर्तन ने मानवीय समाज को को नया अवसर प्रदान किया है। इस परिवर्तन ने काम को सरल बनाया और व्यवस्था को पारदर्शिता के साथ समाज के सम्मुख रखा है। एक युगीन क्रांतिकारी कदम उठाया गया था। इतिहास में सबसे बड़ा तथा पहला परिवर्तन 1215 से मैग्नाकार्टा यानी कि नागरिक अधिकार पत्र की प्राप्ति हुई थी। यह वही समय था कि जब सदियों की जड़ता का प्रतिकार करते हुए मानव मस्तिष्क में नव विकास तथा नव प्रवर्तन का बीज बोया था। परिवर्तन की उस घड़ी में एक बड़े अवसर ने दस्तक दी थी। उसी अवसर का सदुपयोग करते हुए मानव को अधिकार प्रदान किया गया था, अब वह साधन नहीं साध्य बन गया है। अवसर में किए गए प्रयत्नों का परिणाम है कि आज हर सभ्य समाज को सभ्यता का प्रमाण उसी अधिकार पत्र की पारदर्शिता एवं उपलब्धता के कारण दिया जाता है। विश्व में बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पादन की न तो मात्रा संपूर्ण उपाय थी और ना ही गति के साथ साधन ही उपलब्ध हो पा रहे थे, ऐसे समय में युग में परिवर्तन की करवट ली और माननीय बौद्धिक क्षमता ने मशीनीकरण को जन्म दिया। मशीनीकरण के फल स्वरुप कार्य करने की गति, क्षमता और स्वरूप को बदला गया, मनुष्य ने अवसर के साथ परिवर्तन के चलते नए-नए कल पुर्जों का इजाद किया और प्रयत्नों का अंबार लगा कर संपूर्ण विश्व में औद्योगिक क्रांति का शंखनाद किया।

आओ वन्य जीव प्राणीयों को विलुप्तता से बचाएं

पर्यावरण और पारिस्थितिकी सुरक्षा सुनिश्चित करने वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 का गंभीरता से पालन ज़रूरी - एडवोकेट किशन भावनानी

गोंदिया - सृष्टि रचनाकर्ता ने इस खूबसूरत सृष्टि की रचना में जैव विविधता संतुलन का सृजन कर हर जीव की सुरक्षा रक्षा का पूरा लेखा-जोखा कर पर्यावरण और पारिस्थितिकी सुरक्षा सुनिश्चित करके सृष्टि में जंगली जानवरों, पशु पक्षियों पौधों की अनेक प्रजातियों सहित 84 लाख़ योनियों का सृजन किया हैं कि हर योनि को जीवन जीने की सुविधा हो परंतु हम सबसे बुद्धिमान मानवीय जीव जैव विविधता संतुलन को बिगाड़ने और अनेक वन्य जीव प्राणियों को विलुप्त करते पेड़ पौधों को काटते जा रहे हैं जो हमारे और आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत ही भयंकर त्रासदी का कारण बन सकता है। चूंकि 1952 से विलुप्त प्राणी घोषित चीतों की प्रजाति के पुनर्जीवन के लिए नामीबिया दक्षिण अफ्रीका से प्रस्थापन के ऐतिहासिक मिशन के अंतर्गत 8 चीतों को भारत लाया गया है, और संयोग से माननीय पीएम महोदय का जन्म दिवस 17 सितंबर 2022 पर उनके हाथों एमपी के कूनो नेशनल पार्क में भारत की धरती पर आजाद किया जहां एक बार फिर चीतों की आहट सुनाई देगी इसलिए आज हम यह आर्टिकल के माध्यम से इसपर चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम चीतों की करें तो, एक समय में भारत में खूब चीते थे, लेकिन हम मानवीय जीवों ने उनका इतना शिकार किया कि वो कम होते चले गए। जंगलों की कटाई और आवास की कमी भी चीतों के खत्म होने का बड़ा कारण बना। बताया जाता है कि मध्य प्रदेश में कोरिया के महाराजा रामानुज प्रताप सिंह देव ने 1947 में देश में अंतिम तीन चीतों को मार डाला था, जिसके बाद भारत सरकार ने 1952 में चीतों को विलुप्त घोषित मान लिया था। एक्सपर्ट्स के मुताबिक चीते पारिस्थितिक तंत्र के लिए बेहद जरूरी है, इनका नहीं होना प्रकृति के लिए नुकसानदेह है। भारत में चीतों के न रहने के लिए असंख्य कारण जिम्मेदार रहे हैं, जिनमें पथ - निर्धारण, इनाम और शिकार के खेल के लिए बड़े पैमाने पर जानवरों को पकडना, पर्यावास में व्यापक बदलाव और उसके परिणामस्वरूप उनके शिकार के आधार का सिकुडना जैसे कारण शामिल हैं। ये सभी कारण मानव की कार्रवाइयों से प्रेरित हैं, और सिर्फ यह एक बात प्रतीक है प्राकृतिक दुनिया पर मनुष्य के पूर्ण प्रभुत्व की कोशिशों का। इसलिए जंगल में चीते की दोबारा वापसी एक पारिस्थितिकीय गलती को सुधारने और माननीय पीएम द्वारा दुनिया को दिए गए मिशन 'लाइफ' (लाइफस्टाइल फॉर द इनवायरनमेंट) के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को पूरा करने की दिशा में उठाया गया कदम है।

साथियों चीतों के विलुप्त होने के बाद भारतीय ग्रासलैंड की इकोलॉजी खराब हुई थी। दरअसल, चीता फूड चेन में सबसे ऊपर आता है, इसके न होने से फूड चेन का संतुलन पूरी तरह से बिगड़ रहा है। चीतों की अहमियत को समझते हुए भारत सरकार ने तय किया था कि उन्हें देश में फिर से बसाया जाएगा। इसके तहत 1970 के दशक में एक खास योजना पर काम शुरू किया गया था। भारत की पहल पर ईरान का शाह भारत को चीते देने के लिए तैयार हो गया था, लेकिन उसने बदले में शेर की मांग की थी, भारत ने इस शर्त को नहीं माना और चीते भारत नहीं आए थे।

साथिया बात अगर हम नामीबिया से 17 सितंबर 2022 को लाए गए 8 चीतों की करें तो, इन्हीं आठ चीतों को लाने के लिए चीतों की तस्वीर वाला एक विशेष रूप से तैयार बोइंग 747-400 विमान नामीबिया भेजा गया था। इस स्पेशल विमान पर चीतों की खूबसूरत पेटिंग की गई थीं। इसी विमान की तस्वीर के साथ नामीबिया स्थित भारतीय दूतावास ने ट्वीट किया, %बाघों की धरती से सद्भावना राजदूत ले जाने के लिए शौर्य की धरती पर उतरा एक विशेष पक्षी%। इस ट्वीट को जबर्दस्त सराहना मिल रही है और लोग उत्साहित हैं।नामीबिया से भारत लाए गए आठ चीतों से तीन नर और पांच मादा हैं। नर चीतों में से दो की उम्र साढ़े पांच साल और एक की साढ़े चार साल है। नर चीतों में दो भाई हैं जो नामीबिया में ओत्जीवारोंगो के पास 58 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में फैले निजी अभयारण्य में जुलाई, 2021 से रह रहे हैं। यह पहली बार होगा जब किसी मांसाहारी पशु को एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप लाया गया है। 2020 में सुप्रीम कोर्ट ने नामीबिया से चीता लाने को हरी झंडी दे दी थी। फिलहाल इस पूरी परियोजना के लिए सरकार 91 करोड़ का बजट निर्धारित किया है।

साथियों बात अगर हम चीतों को जाने वाले खास विमान की करें तो, खास विमान पर बनाई गई खास पेंटिग नामीबियामें भारत के उच्चायोग ने ट्विटर पर इस स्पेशल विमान की तस्वीरें शेयर भी की है। जहां विमान की नाक पर चीते की पेंटिंग बनाई गई है। एयरलाइन कंपनी की तरफ से इस फ्लाइट को स्पेशल फ्लैग नंबर 118 दिया गया है। वहीं विमान में चीते की एक पेंटिंग भी लगाई गई है। जंगल के सबसे तेज और शानदार शिकारी चीता को नामीबिया से भारत लाने पर नागरिक गर्व और उत्सुकता महसूस कर रहे हैं। चीता की करीब 8 हजार किलोमीटर की हवाई यात्रा का इंतेजाम किसी वीवीआइपी की तरह किया गया था। इसके लिए चीता कंजर्वेशन फंड द्वारा एक विशेष डबल डेकर बोइंग 747-400 विमान की व्यवस्था की गई थीं, जिसमें इकोनॉमी क्लास की पैसेंजर सीट हटाकर चीतों के लिए स्पेशल क्रेट बनाया गया था, इसी विमान से चीता की देखभाल के लिए विशेषज्ञों की टीम भी भारत तक साथ रही।

साथियों बात अगर हम भारत में चीतों के विरुद्ध युद्ध के इतिहास की करें तो, बता दें कि कभी भारत चीतों का गढ़ माना जाता था। इनकी संख्या इतनी थी कि चीतों का शिकार करनाराजघरानों का शौक हो गया था। लेकिन राजघरानों की इस शौक की वजह से धीरे-धीरे चीतों की प्रजाति यहां से लुप्त हो गई।

छोटी बात पर,फटकार अच्छी नहीं होती

छोटी बात पर,फटकार अच्छी नहीं होती,
अफवाहों की दीवार पक्की नहीं होती।

घर है तो दीवारें लाज़मी होगी ही,
दिलों में दीवार अच्छी नहीं होती।।

फरेबी किसका सगा हुआ आज तक,
उसकी कोई ललकार सच्ची नहीं होती।

सादा, सच्चे,मासूम है जो लोग।
उनसे तकरार अच्छी नहीं होती।।

एक बार रूठे को सलीके से मनाइये,
मासूम दिलों में दरार अच्छी नहीं होती।।

राम ने भी रावण का वध किया,
हर नर पर टपकती लार अच्छी नहीं होती.

पंख लागकर उड़ने दो उन्हें आकाश में,
नसीहत की बौछार अच्छी नही होती,

शार्ट न्यूज

कानपुर-लखनऊ ट्रैक पर जलभराव, तेजस सहित एक दर्जन ट्रेन एक से सात घंटे तक लेट

कानपुर। यूपी में बुधवार से हो रही बारिश ने गुरुवार को और तेजी पकड़ ली। इसका असर ट्रेन संचालन पर भी पड़ा है। इसके चलते कानपुर-लखनऊ रेलमार्ग पर मानकनगर के पास जलभराव हो गया। इसकी वजह से पूर्वोत्तर रेलवे के ट्रैक से कानपुर आने वाली तेजस एक्सप्रेस सहित 12 ट्रेनें दो से सात घंटे तक लेट हो गईं। इससे यात्रियों को दिक्कत का सामना करना पड़ा। रेलवे अफसरों ने बताया कि पूर्वोत्तर रेलवे के ट्रैक पर जलभराव होने से उत्तर रेलवे के ट्रैक से ट्रेन संचालन शुरू कराया गया पर ट्रेनों की बंचिंग लगने से घंटों दिक्कतें रही। रेलवे अफसरों ने बताया कि शुक्रवार की सुबह लगभग सात बजे संचालन बहाल हो गया था, ट्रेनों को कॉशन देकर निकाला जा रहा है। इस वजह से तेजस, अवध, मेमू, मडुआडीह, सहित 12 ट्रेनें लेट रही। लखनऊ से आकर दिल्ली या अन्य रूटों पर जाने वाली ट्रेनों के लेट होने से कानपुर सेंट्रल पर यात्री इधर से उधर जानकारी को लेकर परेशान होते दिखे। 1236 यात्रियों ने शुक्रवार की सुबह छह बजे तक टिकट भी यात्रियों ने निरस्त करा दिए थे। पूरब से पश्चिम तक टुकड़ों में जोरदार बरसात हुई। बाराबंकी में भारी वर्षा के चलते एक हेलीकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। लखनऊ में रात आठ बजे तक 30 मिमी वर्षा हुई। अच्छी बारिश हुई। बारिश से धान की फसल को संजीवनी मिल गई है। सूखे का प्रभाव थोड़ा कम हो जाएगा। रोग, कीट से बचाव होगा।

झांसी : बारिश में गिरा दो मंजिला मकान, एक मरा दो घायल

झांसी। उत्तर प्रदेश में झांसी के सीपरी बाजार थानाक्षेत्र में तीन दिनों से रूक रूक कर लगातार हो रही बारिश के कारण सीपरी बाजार थानाक्षेत्र में गिरे दो मंजिला मकान के मलबे में दबने से एक की मौत हो गयी है और दो घायल हो गये हैं। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि सीपरी बाजार थानाक्षेत्र के न्यूरायगंज मोहल्ले में स्थित एक दो मंजिला मकान गुरूवार देर रात ढह गया। इस दुर्घटना में तीन लोग मलबे में दब गये। स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों व राहत एवं बचाव कर्मियों की टीम ने तेजी से काम शुरू किया। मलबे को जेसीबी की मदद से हटाया गया और बचावकर्मियों ने महिला सहित तीन लोगों को बाहर निकाला। तीनों को ही तुरंत उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज भेजा गया । महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ एन एस सेंगर ने आज बताया कि तीनों घायलों में से एक सुरेश (40) जब तक मेडिकल कॉलेज पहुंचा उससे पहले ही उसकी मौत हो गयी थी। सुरेश की मां भगवती के हाथ की हड्डी टूटी थी जिसका उपचार कर दिया गया था जबकि सुरेश के पिता राजाराम की हालत पूरी तरह से ठीक है। जिलाधिकारी रविंद्र कुमार ने बताया कि देर रात हुए इस हादसे की सूचना के बाद ही प्रशासन राहत एवं बचाव टीम के साथ मौके पर पहुंच गया था और जेसीबी की मदद से मलबा हटाकर घायलों को मेडिकल भेजा गया ।

मेरठ के प्रोफेसर ने ट्रैफिक कंट्रोल करने को बनाई डिवाइस

मेरठ। चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर मुकेश कुमार ने एक डिवाइस बनाया है। जो ट्रैफिक को कंट्रोल करेगा। यात्रा में कम समय लगेगा। तमाम तरह की परेशानियां भी दूर हो जाएंगी। सड़क पर गड्ढा होने पर कार चालक को पहले ही पता चल जाएगा। रेड लाइट पर भी ट्रैफिक अधिक होने पर समय से पहले ग्रीन हो जाएगी। मुकेश कुमार मेरठ यूनिवर्सिटी में मैथ के प्रोफेसर हैं। उन्होंने अपने रिसर्चर नीतेश धीमान के साथ टाइप-2 न्यूरो फजी डिवाइस बनाया है। यातायात प्रबंधन की ओर से इस तकनीक को पेटेंट मिल चुका है। जल्द ही इसे पब्लिक डोमेन में लाया जाएगा। प्रो. मुकेश कुमार शर्मा के ने बताया, हमने जो टाइप 2 न्यूरो फजी सिस्टम मैथड्स एंड तकनीक पर यह सिस्टम बनाया है। वह पुराने फजी सेट्स को टाइप-2 में बदला है। पुराने फजी सेट्स को एक्सटेंशन करके टाइप 2 बनाया है। टाइप 2 फजी सिस्टम में न्यूरो नेटवर्क का यूज करके ट्रांसपोर्टेशन प्रॉब्लम को दूर करने के लिए नई तकनीक इजाद की है। अभी तक यातायात नियंत्रण के लिए जो भी तकनीक इस्तेमाल हो रही हैं, वो परेशानियों को कम करने के लिए हुआ है। उन परेशानियों को खत्म करना जरूरी है। न्यूरो फजी सिस्टम मैथ उन परेशानियों को खत्म करने में मदद करेगा। इसमें चालकों का स्वास्थ्य, संसाधन और माहौल 3 फैक्टर पर काम किया है।

देश में पहली बार रैपिड कॉरिडोर पर दौड़ेगी मेट्रो

मेरठ। मेरठ मेट्रो को RRTS यानी रीजनल रैपिड ट्रांसिट सिस्टम कॉरिडोर की तकनीक पर विकसित किया जा रहा है। यह पहली बार है जब देश में किसी मेट्रो कॉरिडोर को रैपिड रेल कॉरिडोर की तकनीक पर बनाया जा रहा है। शहरवासियों को शहीद स्मारक, बस अड्डा से लेकर भैंसाली अड्डे तक आसानी से मेट्रो मिलेगी। भैंसाली अड्डे पर मेट्रो के लिए अंडरग्राउंड भूमिगत मेट्रो स्टेशन बनाया जा रहा है। भैंसाली स्टेशन पर 3 जगहों से एंट्री, एग्जिट गेट की सुविधा रहेगी। स्टेशन से कुछ दूरी पर कचहरी और शहीद स्मारक है। स्टेशन का एक एंट्री, एग्जिट गेट शहीद स्मारक की तरफ से भैंसाली स्टेशन की तरफ रहेगा। दूसरा गेट कचहरी से भैंसाली अड्?डे की ओर है। भैंसाली बस अड्डे के पास बन रहे मेट्रो अंडरग्राउंड स्टेशन से वेस्ट यूपी के लाखों लोगों को मेट्रो में सफर करने का अवसर मिलेगा। मेरठ के आसपास के जिलों- मुजफ्फरनगर, अमरोहा, संभल, मुरादाबाद, बुलंदशहर से सरकारी रोडवेज बसें भैसाली बस स्टैंड आती हैं। इस तरह, यहां से बस यात्री मेट्रो में सवार होकर अगले स्टेशन बेगमपुल तक जाकर दिल्ली से जुड़ने वाले आरआरटीएस ट्रेन की सुविधा का लाभ उठा सकेंगे। अंडरग्राउंड स्टेशन 250 मीटर लंबे और 32 मीटर चौड़ा है। स्टेशन की रूफ स्लैब (ऊपरी मंजिल), बेस स्लैब और कॉनकोर्स लेवल का काम पूरा होने वाला है। मेरठ में बन रहे तीनों अंडरग्राउंड स्टेशन में भैंसाली स्टेशन ही ऐसा है जिससे तीनों स्टेशन कनेक्ट हैं।

चारबाग से वसंतकुंज मेट्रो कॉरिडोर का काम जल्द शुरू होगा

लखनऊ। लखनऊ में जल्द ही दूसरे मेट्रो रूट पर काम शुरू हो सकता है। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा के सामने चारबाग से वसंत कुंज मेट्रो कौरिडोर रूट का प्रेजेंटेशन रखा गया है। शुक्रवार को भी इस पर चर्चा होनी है। उस बैठक में एलडीए के अधिकारी भी शामिल होंगे। हालांकि दो मेट्रो रूट चारबाग से वसंत कुंज तक और जानकीपुरम से मुंशी पुलिया तक मेट्रो संचालन का काम सबसे पहले शुरू होना है। इसमें 2026 तक काम पूरा होना है। उम्मीद है कि दोनों रुट पर काम अगले छह महीने के अंदर शुरू हो जाएगा। दरअसल, लखनऊ में एनसीआर की तर्ज पर लखनऊ और उसके आसपास डेवलपमेंट के लिए स्टेट कैपिटर रीजन (एससीआर) का प्रस्ताव बन रहा है। सिटी डेवलपमेंट प्लान के तहत साल 2051 तक शहर में आठ नए मेट्रो कौरिडोर के निर्माण का प्रस्ताव पहले ही बनाया जा चुका है। यूपी मेट्रो रेल कारपोरेशन ने मुख्य सचिव के सामने जो संशोधित डीपीआर पेश किया उसमें कौरिडोर पर पहले से तय स्टेशन और उनके एलाइनमेंट में कोई बदलाव नहीं किया गया है। प्रोजेक्ट लेट होने से लागत में इजाफा हुआ है। अब से इसको लेकर फिर से शुक्रवार को बैठक बुलायी गई है। शुक्रवार को मेट्रो रूट पर ट्रांजिट ओरिएंटेड डेवलपमेंट को लेकर चर्चा होगी।

कानपुर में 48 घंटों में 158.4 मिमी बारिश

कानपुर। कानपुर समेत पूर्वी उत्तर प्रदेश में झमाझम बारिश का दौर बीते 2 दिनों से जारी है। गुरुवार को 18.6 मिमी. बारिश हुई। वहीं बुधवार को 71.4 मिमी. बारिश दर्ज की गई। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक आज भी झमाझम बारिश की संभावना बनी हुई है। गुरुवार देर रात से शुक्रवार सुबह तक बारिश का सिलसिला रुक-रुककर चलता रहा। वहीं कानपुर समेत यूपी में भारी बारिश के लिए अरब सागर से एक और मौसम सिस्टम तेजी से यूपी की तरफ बढ़ रहा है। भारी बारिश के चलते कानपुर में कक्षा 12 तक के सभी प्राइवेट और सरकारी स्कूलों को आज बंदी के आदेश जारी किए गए हैं। डीएम विशाख जी अय्यर ने स्कूल बंद रखने के आदेश दिए हैं। भारी बारिश के चलते जूही पुल में हुए जलभराव में डूबने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। बॉडी पानी में उतराती हुई मिली। सुबह सूचना पर पहुंची पुलिस ने बॉडी को बाहर निकाला।

तेज बारिश से उफनाने लगीं पूर्वांचल की नदियां

खतरे के निशान के पास पहुंची सरयू

गोरखपुर। गोरखपुर और आसपास के जिलों के साथ ही नेपाल में हो रही तेज बारिश का असर दिखने लगा है। गोरखपुर में बहने वाली सभी नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। सरयू नदी बरहज में खतरे के निशान के काफी करीब पहुंच गई है। राप्ती-रोहिन और गोर्रा नदी का जलस्तर भी बढ़ाव पर है।

जिला आपदा प्रबंध प्राधिकरण और सिंचाई विभाग के आंकड़े बयां कर रहे हैं कि नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। बुधवार की सुबह जहां सरयू नदी का जलस्तर बरहज में 65.900 आरएल मीटर था देर शाम तक 66.400 आरएल मीटर पहुंच गया। सरयू नदी बरहज में खतरे के निशान 66.50 आरएल मीटर के काफी करीब पहुंच गई है। सिंचाई विभाग का मानना है कि सरयू कभी भी यहां खतरे का निशान पार कर सकती है। राप्ती नदी का जलस्तर भी बढ़ाव पर है। सिंचाई विभाग के मुताबिक राप्ती नदी का जलस्तर बुधवार की सुबह बर्डघाट में 71.580 आरएल मीटर था जो देर शाम को 71.670 आरएल मीटर पहुंच गया।

सरयू और राप्ती नदी ही नहीं, गोरखपुर में बहने वाली रोहिन नदी का जलस्तर भी तेजी से बढ़ रहा है। बुधवार की सुबह रोहिन नदी का पानी त्रिमुहानी घाट पर 79.280 आरएल मीटर था जो देर शाम तक बढ़कर 79.600 आरएल मीटर पहुंच गया। गोर्रा नदी का पानी पिंडराघाट पर सुबह 67.050 आरएल मीटर था जो देर शाम तक बढ़कर 67.400 आरएल मीटर पहुंच गया है।

यूपी के 20 जिलों में आज और कल भारी बारिश का अलर्ट

कुआनों और आमी नदी का जलस्तर भी तेजी से बढ़ रहा है। सिंचाई विभाग और जिला आपदा प्रबंध प्राधिकरण का मानना है कि जिस तरह से बारिश हो रही है यदि अनवरत जारी रही तो सरयू नदी बरहज में कभी भी खतरे के निशान को पार कर सकती है। राप्ती-रोहिन और गोर्रा नदी भी उफना सकती है।

अगले दो दिन तक उप्र में भारी बारिश की चेतावनी जारी

लखनऊ। मौसम विभाग ने उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ सहित अन्य जिलों में पिछले दो दिनों से हो रही बारिश का सिलसिला अगले दो दिनों तक बरकरार रहने और कुछ इलाकों में भारी बारिश होने की चेतावनी जारी की है।

मौसम विभाग के लखनऊ केन्द्र से शुक्रवार को जारी पूर्वानुमान के अनुसार प्रदेश में 18 सितंबर तक बारिश का दौर चलेगा।

इस अवधि में संतकबीरनगर, बस्ती, कुशीनगर, महराजगंज, सिद्धार्थनगर, गोण्डा, बलराममपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, बाराबंकी और असपास के जिलों में भारी बारिश की चेतावनी दी गयी है।

इसके अलावा जौनपुर, आजमगढ़, मऊ, देवरिया, गोरखपुर, हरदोई, सुलतानपुर, अयोध्या अंबेडकरनगर, पीलीभीत और आसपास के जिलों में बादलों की तेज गरज चमक के साथ भारी बारिश की चेतावनी जारी हुयी है। वहीं, चंदौली, वाराणसी, गाजीपुर, बलिया, लखनऊ, अमेठी, रामपुर, बरेली, शाहजहांपुर और आसपास के जिलों में तूफानी हवाओं के साथ भारी बारिश की चेतावनी दी गयी है।

झांसी के आदिवासी परिवार के लोग हुए लखनऊ में हादसे का शिकार

झांसी। उत्तर प्रदेश के झांसी जिले की मऊरानीपुर तहसील में बंगरा ब्लॉक के पचवारा गांव से रोज़ी रोटी की जुगाड में निकल राजधानी लखनऊ पहुंचे एक आदिवासी परिवार के पांच लोग बारिश के कारण गिरी दीवार की चपेट में आकर शुक्रवार को मारे गये और इस परिवार में अब केवल एक बूढ़ी मां ही बची है।

झांसी जिला प्रशासन के आदेश के बाद मौके पर पहुंचे तहसीलदार घनश्याम ने पचवारा गांव पहुंचकर हादसे का शिकार हुए परिवार में बची बूढ़ी मां से बातचीत की और ग्रामीणों से भी वार्ता की।

तहसीलदार ने बताया कि इस परिवार की एक महिला भगवती देवी गांव में मिली हैं उनका एकमात्र जायज वारिस लखनऊ के पीजीआई अस्पताल में भर्ती है। शासन की ओर हादसे में मारे गये लोगों को आर्थिक मदद मुहैया कराने के लिए परिवार के जायज वारिस के बैंक खाते का पता लगाया जा रहा है। अभी पता नहीं चला है यदि खाता नहीं है तो उनके नाम से खाता खुलवाया जायेगा ताकि पीड़ित परिवार को शासन की ओर से दी गयी मदद सीधे उनके खाते में भेजी जा सके।

ग्रामीणों ने बताया कि यह सब आदिवासी जाति के लोग हैं जिनके पास रहने के लिए भी घर नहीं है। पूरा परिवार झोपड़ी में रहता था और दो वक्त की रोटी के लिए इधर उधर काम करने के लिए चले जाया करते थे। परिवार में बस एक बूढ़ी मां है जो गांव में ही झोपड़ी में रहती है। इन लोगों के पास कोई भी जमीन नहीं है। यह अपना भरण-पोषण मजदूरी के सहारे ही किया करते थे।

दीवार गिरने से हुई दुर्घटना पर योगी ने दुख व्यक्त किया

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राजधानी लखनऊ में तेज बारिश के दौरान शुक्रवार को एक दीवार गिरने से नौ लोगों की मौत होने और दो अन्य के घायल होने की घटना पर संज्ञान लेते हुए इस दुर्घटना में हताहत हुए लोगों को उपचार एवं अन्य सहायता प्रदान करने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री कार्यालय की ओर से जारी बयान में योगी ने इस घटना में मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना की व्यक्त की है। उन्होंने जिलाधिकारी और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों को घटनास्थल पर तत्काल पहुंचने के निर्देश देते हुए द्रुत गति से राहत एवं बचाव कार्य करने को कहा। योगी ने राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष से मृतकों के परिजनों को 4 -4 लाख रुपये की राहत राशि देने एवं सभी घायलों का समुचित उपचार कराये जाने के निर्देश दिये हैं।

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर चिपियाना रेलवे ओवर ब्रिज खुला, 25 फीसदी और बढ़ेगा टोल

मेरठ। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे का चिपियाना रेलवे ओवर ब्रिज (आरओबी) गुरुवार शाम वाहनों के लिए खोल दिया गया। इसके खुलते ही ढाई साल से जाम झेल रहे हजारों लोगों को राहत मिली है। दिल्ली से अब मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार और देहरादून की तरफ आने-जाने वाली गाड़ियां सरपट दौड़ सकेंगी। एनएचएआई ने सबसे जटिल आरओबी को डेढ़ साल में तैयार किया है।

आरओबी शुरू होने के बाद मेरठ एक्सप्रेसवे पर 25 फीसदी टोल बढ़ाया जाना है जिसपर जल्द ही सड़क परिवहन मंत्रालय को निर्णय लेगा।

गौरतलब है कि दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर चिपियाना स्टेशन के पास आरओबी की 16 में से चार लेन का काम चल रहा था। अबतक 12 लेन से गाड़ियां निकल रही थी लेकिन अब एनएचएआई ने बाकी के चार लेन भी खोल दिए हैं। सोमवार से पुल की

मजबूती का परीक्षण चल रहा था। 15 से 20 ट्रक में सामान लादकर वजन की जांच की गई। एनएचएआई के परियोजना अधिकारी अरविंद कुमार ने बताया कि परीक्षण में आरओबी की मजबूती एकदम मानकों के हिसाब से खरी उतरी है। परीक्षण खत्म होने के बाद 24 घंटे निगरानी करने का नियम है। गुरुवार शाम रेलवे ओवर ब्रिज खोल दिया गया।

सबसे वजनीदार पुल पर सफर कर रहे लोग

एनएचएआई परियोजना अधिकारी का कहना है कि रेलवे ओवर ब्रिज सबसे वजनदार है। पुल में 2230 टन वजन है। यह 30 मीटर चौड़ा है। करीब डेढ़ साल में तैयार हुआ है। पिलर रखने के लिए 1100 टन लोहे की शटरिंग बनाई गई थी। मेरठ एक्सप्रेसवे को एक अप्रैल वर्ष 2021 में खोल दिया गया लेकिन इस परियोजना में केवल चिपियाना आरओबी का काम रह गया था। 2022 से टोल टैक्स वसूला जा रहा है। खंड-2 यूपी गेट से डासना तक टोल वसूली नहीं हो रही थी। रेलवे ओवर ब्रिज शुरू होने के बाद अब 25 फीसदी टोल भी बढ़ाया जाएगा।

आरओबी का उद्घाटन मजदूरों से कराया

एनएचएआई ने आरओबी का उद्घाटन दो मजदूरों से कराया। शैलेंद्र कुमार नामक मजदूर ने नारियल फोड़ा और बिजेंद्र ने फीता काटा। मजदूरों के चेहरे पर खुशी झलक रही थी। इस पुल को बनाने में मजदूरों ने काफी मेहनत की। इस पर रात और दिन में निर्माण कार्य चला।

कानपुर : बारिश ने उड़ाई 109 मोहल्लों की बिजली

37 सबस्टेशनों में फाल्ट-शटडाउन, पानी की भी दिक्कत

कानपुर। यूपी में गुरुवार की रात से रूक-रूक कर हो रही बारिश से कानपुर के 37 सबस्टेशनों में फाल्ट और शटडाउन से शुक्रवार को बिजली गुल रही। इसका शहर की 18 लाख आबादी पर असर पड़ा। 109 मोहल्लों की बिजली गुल होने से आमजन परेशान हुए। दक्षिण के कई मोहल्लों में सुबह के समय बिजली न होने की वजह से पानी सप्लाई भी प्रभावित हुई। केस्को के रिकार्ड के मुताबिक वाजिदपुर, मछरिया, यशोदानगर, सर्वोदयनगर, आवास विकास, हंसपुरम, केशवपुरम, खाड़ेपुर, पहलवान पुरवा सहित 109 मोहल्लों में बिजली का संकट रहा। इसके चलते केस्को के कंट्रोल रूम में भी फोन घनघनाते रहे। वैसे पानी रूकते ही केस्को की राहत टीम फाल्टों को दुरुस्त करने की खातिर रवाना हुई पर बारिश के चलते फाल्ट बनाने और टीमें पहुंचने में समय लग रहा है। केस्को एमडी अनिल ढींगरा ने बताया कि बारिश थमने के दो घंटे बाद फाल्ट ठीक हो जाएंगे, वैसे भी बारिश से कुछ न कुछ तो असर बिजली सप्लाई पर आता है।

कभी धीमी तो कभी तेज बारिश ने मौसम सुहाना कर दिया। इससे दिन-रात का पारा सामान्य से नीचे चला गया। गुरुवार शाम तक करीब 70 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। मौसम विभाग के अनुसार, शनिवार तक ऐसी ही बारिश का सिलसिला रहेगा। वापसी के नजदीक मानसून की सक्रियता ने कुछ हद तक नुकसान की भरपाई कर दी।

17 सितंबर से मानसून की वापसी होनी थी लेकिन फिलहाल यह सक्रिय रहने की संभावना है। 22 से 24 सितंबर तक मानसून की सक्रियता बनी रहेगी, क्योंकि टर्फ लाइन फिलहाल शहर के नजदीक है।

दिन-रात के तापमान में आई कमी गुरुवार को दिन का तापमान 29.2 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया जो सामान्य से 3.0 डिग्री कम है। इसी तरह न्यूनतम पारा 23.6 डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से एक डिग्री कम रहा। नमी का अधिकतम प्रतिशत 95 और न्यूनतम 93 पहुंच गया। इससे उमस खत्म हो गई। हवा की रफ्तार कभी 30 तो कभी 40 किमी प्रति घंटा तक गई। यूं ही जारी रहेगी बारिश चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय (सीएसए) के मौसम विज्ञानी डॉ. एसएन सुनील पांडेय ने बताया कि मानसून सक्रिय है। अगले 48 घंटों तक कभी धीमी तो कभी तेज बारिश का सिलसिला जारी रहेगा। हल्की बारिश जारी रह सकती है।

लखनऊ : प्रशासन ने किये स्कूल बंद, हेल्पलाइन नंबर जारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पिछले 24 घंटों से लगातार हो रही बारिश के मद्देनजर जिला प्रशासन ने शुक्रवार को स्कूल बंद करने का आदेश जारी करते हुए किसी भी प्रकार की आपदा या मुसीबत में फंसे लोगों की मदद के लिये हेल्पलाइन नंबर भी जारी किये हैं। लखनऊ के जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार ने लगातार बारिश के दौरान जलभराव की सूचनायें मिलने के मद्देनजर लखनऊ के शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में कक्षा 12 तक के सभी सरकारी, निजी एवं सरकारी सहायता प्राप्त निजी स्कूलों को 16 सितंबर को बंद रखने का आदेश दिया है। इसके अलावा लखनऊ की मंडलायुक्त रोशन जैकब के निर्देश पर जिलाधिकारी गंगवार ने जनपद लखनऊ में 15 सितंबर की रात से हो रही लगातार भारी वर्षा के दृष्टिगत स्थानीय लोगों के लिये दिशा निर्देश जारी किये हैं। इसमें कहा गया है कि मौसम विभाग ने पहले ही 17 सितंबर तक भारी वर्षा की संभावना व्यक्त की है। इसे देखते हुए स्थानीय लोगों को पूरी सावधानी बरतने को कहा गया है। इस बीच मंडल आयुक्त जैकब ने जलभराव से प्रभावित इलाकों में जाकर लोगों की समस्यायें सुनीं। जिलाधिकारी ने दिशा निर्देशों में पुराने जर्जर भवनों से लोगों को सावधान रहने और अत्यंत आवश्यक कार्य होने पर ही घर से बाहर निकलने की सलाह दी है।

झांसी में है बिजली से जुड़ी कोई परेशानी तो घर बैठे फोन से दर्ज कराएं शिकायत

झांसी। झांसी जिला प्रशासन ने लोगों को बिजली से जुड़ी समस्याओं को लेकर बिजली विभाग के चक्कर काटने की मजबूरी से निजात दिलाने के लिए एक टोल फ्री नंबर जारी कर दिया है। इस नंबर पर अब कोई भी घर बैठे ही अपनी समस्या को अधिकारियों के संज्ञान में ला सकता है। जिलाधिकारी रविंद्र कुमार जिले में चल रहे विद्युत समाधान सप्ताह (12 -19सितंबर) के तहत शुक्रवार को जेल चौराहा और गल्ला मंडी स्थित विद्युत उपकेंद्रों का निरीक्षण करने जा पहुंचे और इस दौरान उपभोक्ताओं से बातचीत कर फीडबैक लिया। इसी क्रम में उन्होंने सभी को यह बताया कि अब वह टोल फ्री नंबर 1912 का इस्तेमाल कर आसानी से बिजली से जुड़ी अपनी किसी भी शिकायत को दर्ज करा सकते हैं। जिलाधिकारी ने लोगों को आश्वस्त भी किया कि विभाग के अधिकारी पूरी तत्परता के साथ आपके शिकायतों का समाधान करेंगे और बताया कि अब बार बार विद्युत उपकेंद्र आने की कोई जरूरत नहीं है। ठीक इसी दौरान उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि समय से कार्यालय पहुंचे और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करें।

सीडीओ ने बीईओ का वेतन रोका, मांगा जवाब

कुशीनगर। उत्तर प्रदेश में कुशीनगर जिले के सीडीओ ने पडरौना नगर के खंड शिक्षा अधिकारी का वेतन रोकने के निर्देश देते हुए उन्हें एक सप्ताह के भीतर जवाब देने के लिए कहा है। आईजीआरएस पोर्टल पर लंबित एक मामले का निस्तारण समय पर नहीं करने पर यह कार्रवाई हुई है। सीडीओ गुंजन द्विवेदी ने बताया कि हाटा तहसील क्षेत्र के प्रहलाद ने आईजीआरएस पोर्टल पर शिकायत की थी। उसके निस्तारण के लिए सीडीओ कार्यालय से चार से पांच बार सूचना देने के बाद भी पडरौना नगर के बीईओ बंशीधर ने मामले का निस्तारण नहीं किया और न ही सीडीओ कार्यालय में उपस्थित होकर पक्ष रखा।

मोदी के जन्मदिन पर मरीजों और गरीबों की मदद का अभियान चलायेगी उप्र भाजपा

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 17 सितंबर को जन्मदिन के मौके पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उत्तर प्रदेश इकाई अगले 15 दिनों तक बीमार और गरीबों की मदद का विशेष अभियान चलायेगी।

भाजपा के प्रदेश महामंत्री गोविंद नारायण शुक्ला और अनूप गुप्ता ने शुक्रवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि पीएम मोदी के जन्मदिन पर एक पखवाड़े तक कार्यक्रम चलेंगे। गुप्ता ने बताया कि शनिवार को दुनिया के लोकप्रिय नेता पीएम मोदी का जन्मदिन है। उन्होंने कहा कि मोदी के राष्ट्र उत्थान अभियान को दृष्टिगत रखते हुए पार्टी ने बीमार एवं गरीबों की मदद के लिये प्रधानमंत्री का जन्मोत्सव 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़े के रूप में मनाने का फैसला किया है। गुप्ता ने कहा कि इस अवसर पर लखनऊ स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में पीएम मोदी के जीवन पर एक प्रदर्शनी लगायी जायेगी। इसमें राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी शिरकत करेंगे।

उन्होंने बताया कि 20 और 21 सितंबर को स्वच्छता अभियान चलेगा। इसमें राज्य के सभी 'अमृत सरोवरों' पर जनप्रतिनिधि एकत्र होकर श्रमदान करेंगे। साथ ही मोदी के 'लोकल फॉर वोकल' संदेश से प्रेरित होकर जनप्रतिनिधि 'ओडीओपी उत्पाद' खरीदेंगे।

गुप्ता ने कहा कि 25 सितंबर को भाजपा कार्यकर्ता 'मन की बात' कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके बाद 26 सितंबर को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत कार्यक्रम होगा। इसमें पीएम मोदी को शुभकामना संदेश लिखे जायेंगे और प्रबुद्ध जन सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों से मुलाकात कर उनके साथ सेल्फी लेंगे। साथ ही खादी भवनों पर महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर खादी वस्त्रों की खरीद को सुनिश्चित किया जायेगा।

योगी ने किया 199 आंगनबाड़ी केंद्रों का शिलान्यास व 501 केंद्रों का लोकार्पण

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को बच्चों का बचपन पोषणयुक्त बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत राज्य में 199 आंगनबाड़ी केन्द्रों का शिलान्यास और 501 केन्द्रों का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए योगी ने कहा कि बच्चे देश का वर्तमान होने के नाते देश का भविष्य होते हैं। जब देश का वर्तमान सुरक्षित होता है, तभी देश का भविष्य भी सुरक्षित हो सकता है। उन्होंने देश के वर्तमान और भविष्य को सुरक्षित बनाने में आंगनबाड़ी केन्द्रों की सशक्त भूमिका को समय की मांग बताया। योगी ने धात्री महिलाओं, किशोरी कन्याओं व बच्चों को जोड़कर भारत के भविष्य को स्वस्थ व सक्षम बनाने में सभी पक्षकारों से सक्रिय योगदान करने का आह्वान किया। योगी ने कहा कि मां स्वस्थ होगी तो देश का वर्तमान स्वत- स्वस्थ रहेगा। बच्चे सुपोषित होंगे तो समाज व राष्ट्र सशक्त होगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा व स्वास्थ्य समाज की बुनियादी आवश्यकताएं हैं और देश की मजबूत आधारशिला माताओं बच्चों के पोषण एवं शिक्षा के बलबूते ही खड़ी हो सकती है।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अच्छी एवं उत्तम शिक्षा, बच्चे के सुनहरे भविष्य के साथ समाज व राष्ट्र की नींव को मजबूत करने का आधार बनता है। यह काम आंगनबाड़ी की संस्था के सहारे ही किया जा सकता है। योगी ने कहा कि राज्य में 5 वर्ष से पोषण माह को मिशन मोड पर लेकर आगे बढ़ाया गया है। तकनीक से जुड़कर अधिक से अधिक लोगों तक शासन की इन योजनाओं का लाभ पहुंचाया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 60 हजार से अधिक महिला स्वयंसेवी समूहों को जोड़ा गया है। पहले तक शराब बेचने वाले लोग अब ईमानदारी से पोषाहार बेच रहे हैं। हर जनपद में नए प्लांट लग रहे हैं। पोषाहार व फूड को समुचित तरीके से पहुंचाया जा रहा है। सबसे बड़ी आबादी का राज्य चुनौतियों के बावजूद सफलता की कहानी कह रहा है। योगी ने कहा कि 1.70 करोड़ बच्चे आंगनबाड़ी केंद्रों से अपना भविष्य सुरक्षित करते हैं। सक्षम बचपन से सक्षम जवानी आए, देश को प्रतिभावान नौजवान मिलें तो उसकी नींव मजबूत करने की जिम्मेदारी आंगनबाड़ी की है। आंगनबाड़ी बहनें, बच्चों को रोचक तरीके से अक्षर व शब्द ज्ञान कराती हैं। बच्चों को उद्धरण के माध्यम से रोचक जानकारी देती हैं, इससे बच्चों की नींव मजबूत होती है।

बस्ती : लगातार हो रही बारिश से जनजीवन अस्त व्यस्त

बस्ती। उत्तर प्रदेश में बस्ती मण्डल के तीनों जिलों बस्ती, सिद्धार्थनगर तथा सन्तकबीरनगर मे तीन दिनों से हो रही लगातार बारिश से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। लगातार हो रही बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। बृहस्पतिवार की देर शाम 65 मिली मीटर बारिश रिकॉर्ड की गयी। बारिश के साथ तेज हवा के कारण कई जगहों पर बड़े-बड़े पेड़ गिर गये जिससे आवागमन भी प्रभावित हुआ है

बाजारों में सन्नाटा छाया हुआ है और प्रमुख मार्गो पर गाड़ियों का आवागमन कम हो गया है। शहरो में कई जगहों पर भारी जल जमाव हो गया है।

शार्ट न्यूज

उबर के कंप्यूटर सिस्टम में हुयी हैकिंग, जांच जारी

न्यूयॉर्क। टैक्सी क्षेत्र की बड़ी कंपनी उबर का कंप्यूटर नेटवर्क हैक हो गया। कंपनी ने कहा कि कई आंतरिक संचार और इंजीनियरिंग प्रणालियों से समझौता किए जाने के बाद इसकी जांच की जा रही है। उबर से हैक में उसके वाहनों के बेड़े, ग्राहकों और भुगतान के किसी भी डेटा को नुकसान पहुंचने के संकेत नहीं मिले हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स ने इस हैंकिंग के बारे में सबसे पहले रिपोर्ट में जानकारी दी थी जिसमें हैकर ने उसे ई-मेल, क्लाउड स्टोरेज और कोड भंडार की तस्वीरें भेजी थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उबर ने कर्मचारियों से काम के दौरान संदेश भेजने वाली ऐप स्लैक का इस्तेमाल करने से मना किया है। कर्मचारियों के हवाले से अखबार ने लिखा कि स्लैक सिस्टम को बंद करने से पहले उबर के कर्मचारियों को एक संदेश प्राप्त हुआ था जिसमें लिखा था, मैं घोषणा करता हूं कि मैं एक हैकर हूं और उबर को डेटा चोरी का सामना करना पड़ेगा। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, ऐसा प्रतीत होता है कि हैकर को बाद में कंपनी के आंतरिक सिस्टम में प्रवेश का मौका मिल गया और उसने कर्मचारियों के लिए एक आंतरिक सूचना पृष्ठ पर एक तस्वीर डाली थी।
उबर ने कहा कि हैकिंग को लेकर कंपनी प्राधिकरण के संपर्क में है।

आईआईसीए और आईआईएम जम्मू ने किया करार

नयी दिल्ली। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कॉरपोरेट अफेयर्स (आईआईसीए) और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (आईआईएम) जम्मू के बीच आज यहां आईआईसीए कैंपस, मानेसर में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन पर आईआईसीए के सीईओ एवं महानिदेशक प्रवीण कुमार और आईआईएम जम्मू के निदेशक प्रोफेसर बी.एस. सहाय ने हस्ताक्षर किए। कुमार ने कहा कि दोनों संस्थानों की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं, जिन्हें समान रूप से अकादमिक, अनुसंधान और कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम के निर्माण में समन्वित किया जा सकता है। सहयोग के सांकेतिक क्षेत्रों में व्यवसाय प्रबंधन और कॉरपोरेट मामलों से जुड़े समकालीन मुद्दों पर दीर्घकालिक संयुक्त पाठ्यक्रम तथा डिग्री, डिप्लोमा एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करना शामिल है। प्रोफेसर सहाय ने आईआईएम जम्मू की विशेषताओं और इस सहयोग से दोनों संस्थान के लाभान्वित होने के बारे में बताया। यह समझौता ज्ञापन आईआईएम जम्मू द्वारा आईआईसीए को डॉक्टरेट डिग्री (पीएचडी) और पोस्ट-डॉक्टरल फेलोशिप आयोजित करने के उद्देश्य से एक शोध केंद्र के रूप में मान्यता देने का प्रावधान है। इसमें आपसी हित के क्षेत्रों में संयुक्त सेमिनार, सम्मेलन और कार्यशालाएं आयोजित करने का प्रस्ताव है। व्यवसाय प्रबंधन और कॉरपोरेट मामलों के समकालिक मुद्दों पर उत्कृष्टता केन्द्र भी स्थापित किए जा सकते हैं। यह समझौता ज्ञापन दोनों संस्थानों के पारस्परिक लाभ के लिए प्राध्यापकों के आदान-प्रदान और उत्कृष्टता केन्द्र/ केन्द्रों की अकादमिक सामग्री और प्रकाशनों के आदान-प्रदान का भी प्रावधान करता है।

रुपया सात पैसे टूटा

नयी दिल्ली। शेयर बाजार में हुयी भारी गिरावट के दबाव में आज अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया सात पैसे टूटकर 79.78 रुपये प्रति डॉलर पर लुढ़क गया। पिछले दिवस रुपया 79.71 रुपये प्रति डॉलर पर रहा था। रुपया आज नौ पैसे की गिरावट लेकर 79.80 रुपये प्रति डॉलर पर खुला। सत्र के दौरान यह 79.85 रुपये प्रति डॉलर के निचले स्तर तक टूटा। इस दौरान यह 79.71 रुपये प्रति डॉलर के दिवस के उच्चतम स्तर तक भी चढ़ा। अंत में यह पिछले दिवस की तुलना में सात पैसे टूटकर 79.78 रुपये प्रति डॉलर पर रहा।

ग्रांड चैलेंज पहल से ई बसों की मुहिम को गति मिली

नयी दिल्ली। वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (डब्ल्यूआरआई) इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. ओपी अग्रवाल ने कहा है कि ग्रांड चैलेंज पहल की सफलता से भारत की 50,000 इलेक्ट्रिक बसों के विद्युतीकरण की मुहिम को गति मिली है। डॉ. अग्रवाल ने एनर्जी इफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड (ईईएसएल) की एक अनुषंगी कन्वर्जेंस एनर्जी सर्विसेज लिमिटेड (सीईएसएल) द्वारा वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट, इंडिया (डब्ल्यूआरआई इंडिया) के साथ मिलकर सस्टेनेबिल एंड इनोवेटिव फाइनेंस फॉर ग्रीन एंड हेल्दी ट्रांसपोर्टेशन पर आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन इनसाइट 2022 के आज समापन के दौरान यह बात कही। उन्होंने कहा कि अब अगला लक्ष्य व्यवहार्य और टिकाऊ वित्त के विकल्प की खोज करना है, जिससे इस बड़े बदलाव के लिए एक व्यापक आधार तैयार हो सकता है। इसके साथ ही, सार्वजनिक परिवहन के लिए उपयोगकर्ता केंद्रित योजना से सार्वजनिक बस सेवाओं में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। कन्वर्जेंस एनर्जी सर्विसेज लिमिटेड (सीईएसएल) की एमडी और सीईओ महुआ आचार्य ने कहा, अपनी प्रमुख ग्रांड चैलेंज पहल के तहत दिल्ली, कोलकाता, बेंगलुरू, हैदराबाद और सूरत में 5,450 ई-बसें उतारने के बाद हमने पहले चरण की सफलता हासिल कर ली है।

जेएसडब्ल्यू ने बंदरगाहों के व्यवसाय के लिए बैंकों को 862 करोड़ रुपये चुकाये

नयी दिल्ली। जे एस डब्ल्यू इन्फ्रास्ट्रक्चर के निजी व्यावसायिक बंदरगाहों की इकाई जेएसडब्ल्यू पोर्ट्स ने एक्सिस बैंक, केनरा बैंक, साउथ इंडियन बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और बैंक ऑफ इंडिया सहित बैंकों के एक सहयोग संघ को 862 करोड़ रुपये के महँगे ऋण का भुगतान कर दिया है। कंपनी महाराष्ट्र के जयगढ़ और धरमतार में निजी व्यावसायिक बंदरगाहों की परिसंपत्तियों का संचालन करती है। केयर रेटिंग्स लिमिटेड ने लंबी अवधि की बैंक सुविधाओं (ऋण) के लिए कंपनी की रेटिंग को केयर एए स्थिर आउटलुक में अपग्रेड करते हुए इस क्षेत्र में अग्रणी क्रेडिट जोखिम प्रोफाइल को दोहराया है। रेटिंग्स के एए वर्ग के अंदर किसी कंपनी को अपग्रेड किया जाना उस कंपनी के तटस्थ व्यवसाय और जोखिम प्रबंधन के तौर-तरीकों और इसकी अच्छी वित्तीय स्थिति की स्पष्ट स्वीकृति होता है। यह कंपनी भारत में उच्च श्रेणी की निजी क्षेत्र की पोर्ट कंपनियों में से एक है और 22 अरब डॉलर जेएसडब्ल्यू ग्रुप का हिस्सा है। केयर रेटिंग अपग्रेड जे.एस.डब्ल्यू. पोर्ट्स के बड़े कैपेक्स चक्र के पूरा होने के साथ मेल खाता है जिसमें पिछले पाँच वर्षों में निवेश किए गए लगभग 4,000 करोड़ (रुपये के महँगे लंबे समय के ऋण) शामिल हैं। इसमें से कंपनी पहले ही 2800 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान कर चुकी है, जिसमें ऊपरोक्त रुपये के लंबे समय के ऋण भी शामिल हैं।

गौतम अडाणी बने दुनिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति

नयी दिल्ली। अडाणी समूह के चेयरमैन गौतम अडाणी संपत्ति में बड़े उछाल के साथ दुनिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति बन गए हैं। उन्होंने यह स्थान फ्रांस के बर्नार्ड अर्नाउल्ट और परिवार को पीछे कर हासिल किया। फोर्ब्स की रियल टाइम अरबपति सूची ने श्री अडाणी की 16 सितंबर को कुल संपत्ति 154.4 अरब डॉलर दर्शायी है। अडाणी समूह अवसंरचना, जिंसों, ऊर्जा उत्पादन एवं प्रेषण और रियल एस्टेट क्षेत्र में कारोबार करता है। फोर्ब्स के आंकड़ों के अनुसार समूह के शेयरों में तेजी के कारण उनकी संपत्ति में वृद्धि के साथ श्री अडाणी दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति बने है। अब वह केवल टेस्ला के एलन मस्क से पीछे है जो 273.5 अरब डॉलर की संपत्ति के साथ दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति है। अडाणी ने बेहद तेजी के साथ नए कारोबार में प्रवेश करते हुए अपने परिचालन का विस्तार किया है। कर्ज की वजह से हालांकि तेजी से विस्तार ने बाजार के एक हिस्से में कुछ आशंकाएं पैदा कर दी हैं कि इससे कर्ज के जाल में फंस सकता है। वैश्विक बाजार अनुसंधान फर्म क्रेडिटसाइट्स ने हाल ही में एक रिपोर्ट में चेतावनी दी थी कि अत्यधिक महत्वाकांक्षी ऋण-वित्त पोषित विकास योजनाएं अंत में बड़े पैमाने पर कर्ज के जाल में फंस सकती हैं। रिपोर्ट में बताया गया कि अडाणी समूह तेजी से अपने मौजूदा और नए कारोबार में निवेश कर रहा है। इसमें मुख्य रूप से ऋण के साथ वित्त पोषण हुआ है जिसके परिणामस्वरूप उत्तोलन और शोधन क्षमता अनुपात में वृद्धि हुई है। क्रेडिटसाइट्स ने अपनी रिपोर्ट अडानी ग्रुप डिपली ओवरलेवेरेज्ड ने कहा,%यह पूरी तरह से समूह के बारे में चिंताओं का कारण बना है। सबसे खराब स्थिति में अत्यधिक महत्वाकांक्षी ऋण-वित्त पोषित विकास योजनाएँ अंत में एक बड़े ऋण जाल में बदल जाती हैं।

अदाणी ने किया अंबुजा सीमेंट्स और एसीसी का अधिग्रहण पूरा

नयी दिल्ली। दुनिया के दूसरे सबसे अमीर उद्योगपति गौतम अदाणी के अदाणी परिवार ने अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड और एसीसी लिमिटेड का अधिग्रहण पूरा कर लिया है।

कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि इस लेन-देन में सेबी के नियमों के अनुसार दोनों संस्थाओं में एक खुली पेशकश के साथ अंबुजा और एसीसी में होल्सिम की हिस्सेदारी का अधिग्रहण शामिल है। अंबुजा सीमेंट्स और एसीसी के लिए होल्सिम की हिस्सेदारी और खुली पेशकश का मूल्य 6.50 अरब डॉलर है, जो इसे अदाणी द्वारा अब तक का सबसे बड़ा अधिग्रहण बनाता है और यह इंफ्रास्ट्रक्चर तथा मैटेरियल्स स्पेस में भारत का अब तक का सबसे बड़ा अधिग्रहण में विलय सौदा है।

इसके बाद अदाणी की अंबुजा सीमेंट्स में 63.15 प्रतिशत और एसीसी में 56.69 प्रतिशत की हिस्सेदारी होगी (जिसमें से 50.05प्रतिशत अंबुजा सीमेंट्स के माध्यम से है)। इन दोनों कंपनियों का संयुक्त बाजार पूंजीकरण आज की तारीख में 19 अरब डॉलर है और इसके साथ ही अदाणी अब 67.5 एमटीपीए उत्पादन क्षमता के साथ भारत की दूसरी सबसे बड़ी सीमेंट निर्माता बन गई है। अदाणी समूह के अध्यक्ष श्री अदाणी ने कहा, जो चीज सीमेंट को एक रोमांचक व्यवसाय बनाती है, वह

है, जो 2050 से आगे हर दूसरे देश से कहीं अधिक है। सीमेंट एनर्जी कॉस्ट, लॉजिस्टिक्स और डिस्ट्रीब्यूशन कॉस्ट पर निर्भर इकोनॉमिक्स का खेल है, और प्रोडक्शन के ट्रांसफॉर्मेशन के साथ-साथ महत्वपूर्ण सप्लाई चेन क्षमता हासिल करने के लिए, एक डिजिटल प्लेटफॉर्म का लाभ उठाने की क्षमता रखता है। इनमें से प्रत्येक क्षमता हमारे लिए एक मुख्य व्यवसाय की तरह है और इसलिए यह हमारे सीमेंट व्यवसाय को बेजोड़ आसन्नताओं का एक सेट प्रदान करता है। यह वे आसन्नताएं हैं जो अंततः प्रतिस्पर्धी इकोनॉमिक्स को संचालित करती हैं। इसके अलावा, दुनिया की सबसे बड़ी रिन्यूएबल एनर्जी कंपनियों में से एक के रूप में, हमारी स्थिति हमें एक सर्कुलर इकोनॉमी के सिद्धांतों के अनुरूप प्रीमियम क्वालिटी वाले ग्रीन सीमेंट के निर्माण में मदद करेगी। ये सभी आयाम हमें 2030 तक सीमेंट का सबसे बड़ा और सबसे कुशल निर्माता बनने के लिए सही ट्रैक पर रखते हैं।

दोनों कंपनियां की भारत में 14 इंटीग्रेटेड यूनिट, 16 ग्राइंडिंग यूनिट, 79 रेडी- मिक्स कंक्रीट प्लांट और पूरे भारत में 78,000 से अधिक चैनल पार्टनर हैं। अंबुजा सीमेंट्स के बोर्ड ने वारंट के अधिमान्य आवंटन के माध्यम से अंबुजा में 20,000 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी है। यह अंबुजा को मार्केट ग्रोथ हासिल करने के लिए तैयार करेगा।

अंबुजा सीमेंट्स और एसीसी दोनों को इंटीग्रेटेड अदाणी इंफ्रास्ट्रक्चर प्लेटफॉर्म के साथ तालमेल से फायदा होगा, खासकर कच्चे माल, रिन्यूएबल एनर्जी और लॉजिस्टिक्स के क्षेत्रों में, जहां अदाणी पोर्टफोलियो कंपनियों के पास व्यापक अनुभव और गहरी विशेषज्ञता है। ईएसजी, सर्कुलर इकोनॉमी और कैपिटल मैनेजमेंट फिलॉसफी पर अदाणी के फोकस से अंबुजा और एसीसी को भी फायदा होगा।

देश को विकसित राष्ट्र बनाने में बैंकिंग क्षेत्र को करनी होगी महत्ती भागीदारी: सीतारमण

मुंबई। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज कहा कि आजादी के 100 वर्ष पूरे होने तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में बैंकिंग क्षेत्र की महत्ती भूमिका होगी।

सीतारमण ने यहां भारतीय बैंक संघ की 75 वीं वार्षिक बैठक को संबोधित करते हुये कहा कि बैंकों को अगले 25 वर्षो की योजना बनानी चाहिए और डिजिटल, आधुनिक प्रौद्योगिकी और एक दूसरे से वार्ता करने वाली प्रौद्योगिकी को अपनाने पर जोर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि धोखाधड़ी को पहचानने और त्वरित चेतावनी संकेतको के लिए वेब3 और कृत्रिम बौद्धिकता जैसी प्रौद्योगिकी का उपयोग किये जाने की जरूरत है। उन्होंने बैंक संघ को यह सुनिश्चित

करना चाहिए कि सभी बैंक चाहे वह सरकारी हो या निजी ग्राहकों के लिए एक दूसरे से बात करें। ग्राहक की सहमति से यदि बैंक एग्रिगेटर फ्रेमवर्क को अपनाया जाता है तो इससे ग्राहकों को अधिक लाभ होगा। वित्त मंत्री ने कहा कि यदि आप फोन बैंकिंग और डिजिटल सिस्टम के लिए स्वयं को तैयार रखते हैं तो आप हर किसी के लिए उपलब्ध होंगे। उन्होंने बैंकों से ग्राहक सेवा को सशकत बनाने के साथ ही क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और वित्तीय समावेशन को मजबूत बनाने के लिए भी कहा। वित्त मंत्री ने कहा कि अमृतकाल में बैंकों को अधिक भागीदारी करने की जरूरत है। बढ़ते भारत की आकांक्षाओ को पूरा करने के लिए बैंकों को स्वयं को बेहतर करने के लिए तैयार होना पड़ेगा। प्रधानमंत्री ने वर्ष 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाने की अपील की है और इसमें बैंकों की महत्ती भूमिका होगी। उन्होंने कहा कि बैंको का विकास में बहुत बड़ा योगदान होता है। बैंकों को बोर्ड स्तर पर निर्णय लेने के लिए पेशेवर तरीके अपनान चाहिए। बैंक अब अधिक समय तक पुराने तरीके से काम नहीं कर सकते हैं। मोदी सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि बैंकों के काम काज में कोई हस्तक्षेप नहीं होगा और नन्न ही कोई निर्देश दिया जायेगा। हमे तेजी से पेशेवर बनने की जरूरत है।

निवेशकों के डूबे करीब 6.19 लाख करोड़

मुंबई। शेयर बाजार में आज हुयी भारी बिकवाली में निवेशकों के करीब 6.19 लाख करोड़ रुपये डूब गये। विश्व बैंक की दुनिया भर में फिर से मंदी आने की चेतावनी के बाद वैश्विक स्तर पर शेयर बाजारों में हुयी बिकवाली का असर आज घरेलू बाजार पर भी दिखा जहां शेयर बाजार में चौतरफा बिकवाली से भूचाल आ गया और बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 1093.22 अंकों की गिरावट लेकर 58840.79 अंक पर और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 346.55 अंक लुढ़ककर 17530.85 अंक पर आ गया। इस भारी गिरावट के कारण बीएसई का बाजार पूंजीकरण कल के 28587358.36 करोड़ रुपये की तुलना में आज 618536.30 करोड़ रुपये घटकर 27968822.06 करोड़ रुपये पर आ गया। इस तरह से निवेशकों के करीब 6.19 लाख करोड़ रुपये डूब गये।

जयपुर रग्स ने की 'रग उत्सव - क्नॉट-सो-ऑर्डिनरी' की घोषणा

एजेंसी

नयी दिल्ली। हस्त निर्मित कार्पेट के निर्माता जयपुर रग्स ने 'रग उत्सव-क्नॉट-सो-ऑर्डिनरी' की घोषणा की है जो कल से शुरू होकर 24 अक्टूबर 2022 तक जारी रहेगा।

कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि नवरात्रि और दशहरा के दौरान 10,000 से अधिक रग्स, 100 से ज्यादा स्टाइल्स और 1000 से ज्यादा अद्वितीय रंगों के साथ विशेष डील में 60 प्रतिशत तक की छूट मिलेगा। आशीष शाह, विनीता चैतन्य, गौरी खान, कवि, तान्या और संदीप खोसला, शांतनु गर्ग और कई अन्य जैसे दुनिया भर में प्रसिद्ध डिजाइनरों के संग्रह के साथ विभिन्न प्रकार के हाथ से बुने हुए, हैंड टफ्टेड, हैंडलूम और फ्लैटवीव दरी पर भी छूट रहेगी। डिजाइन के शौकीन जयपुर रग्स की वेबसाइट, दिल्ली, मुंबई, जयपुर और बेंगलुरु में स्थित रिटेल स्टोर और चेन्नई, हैदराबाद और अहमदाबाद में स्थित स्टोर-इन-स्टोर्स से इन ऑफर्स का लाभ उठा सकते हैं।

छूट के अलावा, जयपुर रग्स पूरे भारत में मुफ्त डिलीवरी और अपने उत्पादों पर दो साल तक की वारंटी जैसी वैल्यू एडेड सेवाएं देती है। जयपुर रग्स एक नई दाग-प्रतिरोधी कोटिंग भी पेश कर रही है जो रग्स को कोई द्रव्य गिरने पर सुरक्षित रखती है। दाग-प्रतिरोधी सेवा पुराने और नए ग्राहकों के लिए एक अतिरिक्त सेवा है, लेकिन इसे किसी भी ब्रांड के रग्स पर इस्तेमाल किया जा सकता है। यह ब्रांड इंटीरियर डिजाइनरों और रग्स विशेषज्ञों से मुफ्त वर्चुअल परामर्श भी देता है ताकि ग्राहक रग्स और कारपेट खरीदते समय बेहतर विकल्प चुन सकें।

दिल्ली आबकारी नीति घोटाला: ईडी ने देश भर में कई ठिकानों में की छापेमारी

नयी दिल्ली। नई दिल्ली आबकारी नीति मामले में कथित अनियमितताओं की जांच के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शुक्रवार को देश भर में कई स्थानों पर तलाशी ली।

सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। देश भर में बेंगलुरु सहित करीब 40 ठिकानों में छापेमारी चल रही है। सूत्रों ने कहा कि ईडी द्वारा इस मामले में 10 दिनों के भीतर की गई एक और बड़ी कार्रवाई है। गत छह सितंबर को ईडी ने देश भर में कई ठिकानों पर इसी तरह की छापेमारी की थी। यह छापेमारी विभिन्नों राज्यों में 35 ठिकानों

में की गयी थी।

इस महीने की शुरूआत में केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने इसी मामले के संबंध में दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के गाजियाबाद स्थित बैंक लॉकरों को खंगाला था। इससे पहले उनके आवास पर लगभग 14 घंटे तक तलाशी अभियान भी चलाया गया था।

सीबीआई ने इस मामले में श्री सिसोदिया और अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया था। कथित शराब नीति घोटाले में एक कथित स्टिंग ऑपरेशन वीडियो सामने आने के एक दिन बाद श्री सिसोदिया ने भाजपा को उन्हें गिरफ्तार करने की चुनौती दी और वीडियो की सत्यता पर भी सवाल उठाया।

गुरुवार को श्री सिसोदिया ने भाजपा पर साजिश रचने और कथित स्टिंग वीडियो लाने का आरोप लगाया।

सिसोदिया ने ट्वीट किया, सीबीआई-ईडी की जांच से कुछ नहीं निकला तो एक ओर स्टिंग।

उपमुख्यमंत्री ने कहा, भाजपा को यह स्टिंग तुरंत सीबीआई को सौंपनी चाहिए।

अगर सीबीआई को इसमें सच्चाई मिलती है तो मुझे चार दिनों में गिरफ्तार कर लिया जाना चाहिए। अन्यथा, यह मान लिया जाना चाहिए कि यह प्रधानमंत्री कार्यालय में रची गई साजिश है और प्रधानमंत्री को इसके लिए माफी मांगनी चाहिए।

300 अरब डॉलर के इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण और निर्यात के प्रतिबद्ध : राजीव चंद्रशेखर

एजेंसी

नयी दिल्ली। केन्द्रीय इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने आज कहा कि भारत के 2025-26 तक 300 अरब डॉलर के इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण और निर्यात के लक्ष्य को हासिल के लिए सरकार प्रतिबद्ध है।

चंद्रशेखर ने आंध्र प्रदेश के तिरूपति में कहा कि सरकार इसको हासिल करने के उद्देश्य से इस क्षेत्र में स्टार्टअप और निवेश के इच्छुक उद्यमियों को समर्थन देने के लिए सभी राज्यों के साथ भागीदारी में काम करने को प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर स्थित में भारत के पहले लिथियम सेल विनिर्माण संयंत्र के भ्रमण के दौरान यह बात कही।

उन्होंने कहा,वेंकटेश्वर के निवास-तिरुपति की इस महान भूमि पर होना एक सम्मान और सौभाग्य की बात है। वह भी हमारे प्रधानमंत्री के जन्मदिन से एक दिन पहले ऐसा हुआ है। मेरे लिए, तिरुपति ईएमसी और भारत के पहले लिथियम सेल निर्माण संयंत्र में होना व्यक्तिगत रूप से खुशी की बात है।

उन्होंने कहा, सरकार की सक्रिय नीतियों और व्यवस्थित कार्यक्रमों से हर स्टार्टअप, हर उद्यमी का सपना साकार करने में सहयोग दिया जाएगा।

लिथियम-आयन फैक्ट्री का व्यावसायिक उत्पादन और औपचारिक उद्घाटन अगले महीने होना है। वर्तमान में संयंत्र की स्थापित क्षमता 270 मेगावॉट है और यह प्रतिदिन 10 एएच क्षमता के 20,000 सेल का उत्पादन कर सकती है।

पतंजलि समूह पांच वर्षों में लाएगा चार नए आईपीओ

एजेंसी

नयी दिल्ली। योगगुरु बाबा रामदेव ने कहा है कि पतंजलि की आगामी पांच वर्षों में चार नये सार्वजनिक शेयर निर्गम (आईपीओ) लाकर कुल पांच कंपनियों को शेयर बाजार की सूची में शामिल करने की योजना है।

बाबा रामदेव ने यहां शुक्रवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पतंजलि फूड्स लिमिटेड के बाद चार कंपनियों पतंजलि आयुर्वेद, पतंजलि वैलनेस, पतंजलि मेडिसिन और पतंजलि लाईफस्टाइल का आईपीओ लाया जाएगा जिससे ये बाजार की सूची में शामिल हो जाएंगी। इन पांचों कंपनियों का बाजार मूल्य पांच लाख करोड़ रहने का लक्ष्य है जिसकी योजना पर काम किया जा रहा है।

योगगुरु ने कहा कि सरकार की हाल ही में देश को खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में शुरू किए गए राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन-ऑयल पाम के तहत पतंजलि फूड्स देश के 11 राज्यों के 55 जिलों में 15 लाख एकड़ से ज्यादा भूमि पर पाम वृक्षारोपण करेगा। उन्होंने दावा किया कि पतंजलि पाम तेल वृक्षारोपण में देश की सबसे बड़ी कंपनी होगी। इससे पांच से सात वर्ष में करीब दो हजार करोड़ रुपये का सालाना कारोबार करने का लक्ष्य रखा गया है।

योगगुरु ने कहा कि गत 31 अगस्त को पतंजलि फूड्स ने अरुणाचल प्रदेश की पहली तेल पाम प्रक्रमण मिल का शिलान्यास कर दिया और नौ जिलों में 38,000 हेक्टेयर जमीन पर पाम तेल वृक्षारोपण शुरु कर दिया है।

उन्होंने कहा कि पतंजलि समूह का टर्नओवर अभी 40,000 करोड़ रुपये है और इसे आगामी पांच से सात वर्षों में 1,00,000 करोड़ रुपये करने का लक्ष्य है।

मार्गदर्शक 2.0 में ज्योतिरादित्य सिंधिया की छात्रों के साथ चर्चा

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य एम सिंधिया ने कहा कि भाषा की बाधा आपको कामयाब होने से रोक नहीं सकती।

उन्होंने कहा, आप जैसे हैं वैसे ही बहुत बेहतरीन विकल्प तलाश सकते हैं जो आपकी शैली है भाषा है, अगर आप लोगों को अपने नजरिए का विश्वास दिला सकते हैं तो आप शानदार प्रदर्शन कर सकते हैं। भाषा का नियंत्रण और बाधा कभी कोई रुकावट नहीं रही है।

सिंधिया ने शुक्रवार को फोस्टिमा बिजनेस स्कूल के मानव संसाधन पेशेवरों के लिए मार्गदर्शक पुरस्कार 2.0 की अध्यक्षता की। यह पुरस्कार अहमदाबाद के भारतीय प्रबंध संस्थान के संस्थापक संकाय के सम्मान में प्रदान किए गए।

कार्यक्रम में इस्पात मंत्री ने मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एमबीए) के छात्रों के साथ चर्चा की। छात्रों के सवालों पर उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि किसी भी कार्य में भाषा की बाधा कोई बड़ी समस्या नहीं है। उन्होंने कहा, छात्र जीवन में आपको दबाव का सामना करते हुए आगे बढ़ना है क्योंकि कहीं ना कहीं ये आपको बहुत कुछ सिखाता है। संस्थान आपको अनुसाशन और तरीके सिखाता है जिन्हें आप अपने जीवन में उतारकर आसानी से सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

मार्गदर्शक पुरस्कार का उद्देश्य आईआईएम-अहमदाबाद के संस्थापक संकाय को सम्मानित करना था जो सभी दूरदर्शी और उच्च कोटि के शिक्षक थे। वे नवाचार निर्माता थे। आईआईएम-अहमदाबाद के इन संस्थापक संकाय की स्मृति में पुरस्कारों को 10 खंडों में वर्गीकृत किया गया है। इन पुरस्कारों को कंपनियों के मानव संसाधन से संबंधित अधिकारियों को प्रदान किये

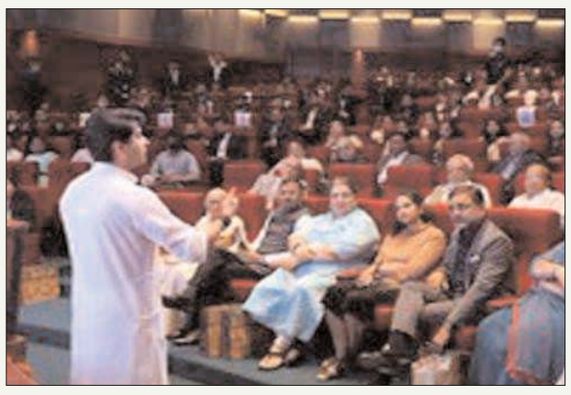

गये, जिन्होंने इस क्षेत्र में सराहनीय प्रदर्शन किया है। यंग टर्क ऑफ द ईयर का पुरस्कार पेप्सिको की प्रज्ञा सिंह, टैलेंट एक्विजिशन एंड रिटेंशन का पुरस्कार स्वीगी के गिरिश मेनन और जीएसके कंज्यूमर हेल्थकेयर के पी द्वारकानाथ को हॉल ऑफ फेम का पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनके अलावा मेकमाइट्रिप, एमेजॉन, सोनी पिक्चर्स जैसी बड़ी कंपनियों के प्रतिनिधियों का पुरस्कार मिले।

सिंधिया ने पुरस्कार वितरण समारोह के बाद कहा, भारत आज वहां पहुंच गया है, जहां दुनिया की कोई ताकत राष्ट्रों के समूह में हमारे स्थान से इनकार नहीं कर सकती है और यह हमने मिलकर किया है। पुरस्कार विजेताओं और उनके काम ने न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित किया है, बल्कि एक तरह से यह देश को भी बदल रहा है। इस नवोन्मेषी विचारों के माध्यम से मानव संसाधन विकसित करके हम अपने जीवन को और सशक्त बना सकते हैं।

छात्र जीवन में आपको दबाव का सामना करते हुए आगे बढ़ना है क्योंकि कहीं ना कहीं ये आपको बहुत कुछ सिखाता है। संस्थान आपको अनुसाशन और तरीके सिखाता है जिन्हें आप अपने जीवन में उतारकर आसानी से सफलता प्राप्त कर सकते हैं

उन्होंने कहा, मानव संसाधन किसी भी संगठन की आत्मा होती है और यह संगठन को संतुलित रहने और बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करता है। यह देखना प्रेरणादायक है कि आज की पुरस्कार विजेताओं की सूची में, हमारे पास और अधिक महिला पेशेवर हैं और आशा है कि आने वाले भविष्य में हम इस प्रवृत्ति को ऊपर जाते हुए देखेंगे और अधिक से अधिक महिलाएं इससे आगे आयंगी।

पॉलिसी बाजार के सह-संस्थापक यशिश दहिया ने कहा, मेरे अनुसार पुरस्कार पाने वालों की गुणवत्ता बेहद सराहनीय थी। मुझे लगता है कि किसी भी कंपनी को कार्यबल अद्भुत बनाता है और कंपनी मानव संसाधन प्रमुख ही लोगों को एक साथ रखने में मदद करता है। फोस्टिमा के अध्यक्ष अनिल सोमानी ने कहा, मार्गदर्शक 2.0 के इस सम्मान समारोह में आप सभी का स्वागत करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। हमारा संस्थान अपने छात्रों, पूर्व छात्रों द्वारा अधिक जाना जाता है। इन छात्रों के करियर को आकार देने में खामोशी से अपना किरदार निभाता है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2021 में फोस्टिमा बिजनेस स्कूल ने मानव संसाधन पेशेवरों के लिए मार्गदर्शक अवॉर्ड्स की स्थापना की थी।

शार्ट न्यूज

ट्रेवर बेलिस होंगे पंजाब किंग्स के हेड कोच

मोहाली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के अगले संस्करण में ट्रेवर बेलिस पंजाब किंग्स के हेड कोच की भूमिका में नजर आयेंगे। अनिल कुंबले के फ्रेंचाइजी से अलग होने के करीब एक महीने बाद शुक्रवार को यह घोषणा की गयी। वर्ष 2019 में विश्व कप विजेता इंग्लैंड की जीत में बेलिस का अहम योगदान रहा है। वह 2012 और 2014 में कोलकाता नाइट राइडर्स को आईपीएल खिताब दिलाने में भी सफल रहे थे। उस समय हालांकि वह सपोर्ट स्टाफ का हिस्सा थे। इसके अलावा बिग बैश लीग में सिडनी सिक्सर की खिताबी जीत में बेलिस के योगदान को नजरअंदाज नहीं जा सकता। बेलिस सनराइजर्स हैदराबाद के कोच रह चुके है। वर्ष 2020 में उनके कोच रहते टीम ने आईपीएल में तीसरा स्थान हासिल किया था हालांकि पिछला साल उनके लिये सुखद नहीं रहा जब उनकी टीम 14 मुकाबलों में मात्र तीन में ही जीत हासिल कर सकी। अपनी नयी भूमिका के बारे में बेलिस ने कहा, पंजाब किंग्स का कोच नियुक्त होने पर मैं गर्व महसूस कर रहा हूं। सफलता की भूख वाली पंजाब किंग्स प्रतिभाशाली टीम का हिस्सा बनना वास्तव में रोमांचक होगा।

भारत-दक्षिण अफ्रीका एकदिवसीय मैच के लिये टिकटों की बिक्री शुरू

लखनऊ। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच छह अक्टूबर को लखनऊ में खेले जाने वाले पहले एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच के लिये टिकटों की ऑनलाइन बिक्री शुक्रवार शाम से शुरू हो गयी। दोनों टीमों के बीच तीन एक दिवसीय क्रिकेट मैचों की श्रृखंला का पहला मुकाबला लखनऊ के अटल बिहारी इकाना अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम पर खेला जायेगा। लगभग 50 हजार दर्शक क्षमता वाले स्टेडियम में मैच को लेकर तैयारियां युद्ध स्तर पर की जा रही हैं। उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (यूपीसीए) के कार्यवाहक मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंकित चटर्जी ने बताया कि यूपीसीए के टिकटिंग पार्टनर पेटीएम के जरिये आज शाम छह बजे से आनलाइन टिकटों की बिक्री शुरू की गयी है, जबकि ऑनलाइन खरीद में रुचि न रखने वाले दर्शकों के लिये टिकट विशेष तौर पर इकाना स्टेडियम के गेट नम्बर दो स्थित काउंटर से टिकट दो और तीन अक्टूबर को पूर्वाह्न 11 बजे से शाम सात बजे तक उपलब्ध होंगे। गौरतलब है कि वन-डे सीरीज से पहले दक्षिण अफ्रीका मेजबान भारत के साथ तीन टी-20 मैचों की सीरीज खेलेगी जिसमें 28 सितंबर को तिरवंथपुरम, दो अक्टूबर को गुवाहटी और चार अक्टूबर को इंदौर के होल्कर स्टेडियम पर मैच खेले जायेंगे। लखनऊ में पहला वन डे खेलने के बाद भारतीय टीम नौ अक्टूबर को रांची में और 11 अक्टूबर को दिल्ली में दक्षिण अफ्रीका से लोहा लेगी।

भूटान को रौंद कर बंगलादेश शान से पहुंचा फाइनल में

काठमांडू। एकतरफा मुकाबले में भूटान को 8-0 से रौंद कर बंगलादेश की महिला टीम ने शुक्रवार को दक्षिण एशियाई फुटबाल संघ (सैफ) महिला चैंपियनशिप के फाइनल में प्रवेश किया। दशरथ रंगासाला स्टेडियम में कप्तान सबीना खातून ने अपने बेहतरीन प्रदर्शन को जारी रखते हुये तीन गोल कर बंगलादेश की एकतरफा जीत में अहम योगदान दिया। सैफ चैंपियनशिप में 2016 के बाद यह दूसरा मौका है, जब बंगलादेश ने फाइनल में प्रवेश किया है। बंगलादेश की लड़कियों ने शुरू से ही आक्रामक खेल का प्रदर्शन करते हुये मैच पर अपनी पकड़ बनाये रखी। सीरत जहां शोपना ने मैच के दूसरे ही मिनट में मोनिका चामका से मिले पास को गोल में तब्दील कर दिया। भूटान इस हमले से उबरा भी नहीं था कि कप्तान सबीना ने 17वें मिनट में,कृष्णा रानी सरकार ने 30वें मिनट में और रीतूपोरना ने 35वें मिनट में गोल दाग कर विपक्षी टीम को दबाव में ला दिया। दूसरे हाफ में सबीना ने खेल के 53वें मिनट में, मसूरा परवीन ने 56वें मिनट में, तोहूरा खातून ने 87वें मिनट में और सबीना ने 90वें मिनट में गोल दाग कर जीत के फासले को 8-0 कर दिया और शान के साथ फाइनल में प्रवेश किया। सोमवार को खेले जाने वाले फाइनल में बंगलादेश का मुकाबला आज शाम भारत और नेपाल के बीच खेले जाने वाले सेमीफाइनल जीतने वाली टीम से होगा।

नडाल, सेरेना ने फेडरर के प्रति सम्मान जताया

नयी दिल्ली। पेशेवर टेनिस से सन्यास लेने की घोषणा करने वाले स्विटरलैंड के महान खिलाड़ी रोजर फेडरर के प्रति राफेल नडाल और सेरेना विलियम्स ने सम्मान का इजहार किया है। बीस बार ग्रैंड स्लैम विजेता फेडरर ने गुरुवार को उम्र और चोटों का हवाला देते हुये अपने शानदार करियर को विराम देने की घोषणा की थी। फेडरर (41) ने कहा था कि इंग्लैंड में अगले सप्ताह होने वाला लेवर कप उनका आखिरी एटीपी टूर्नामेंट होगा। स्पेन के 22 बार ग्रैंड स्लैम विजेता नडाल ने अपने मित्र और कोर्ट में जबरदस्त प्रतिद्धंदी के बारे में अपनी भावनाओं का इजहार सोशल मीडिया के जरिये किया। उन्होने ट्वीट किया, काश यह दिन कभी नहीं आता। यह मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से और दुनिया भर के खेलों के लिए एक दुखद दिन है। कोर्ट के अंदर और बाहर इतने अद्भुत पलों को जीकर आपके साथ इतने वर्षों को साझा करना खुशी की बात है और मेरे लिये सम्मान और सौभाग्य की बात भी है। मैं आपकी पत्नी, बच्चों और परिवार के लिये खुशी की कामना करता हूं। जो आपके भविष्य सुखद और आनंद से भरा हो। मैं आपको लंदन में लेवर कप में मिलूंगा।

36 राष्ट्रीय गेम्स के लिए झारखंड महिला एवम पुरुष हॉकी टीम का विशेष प्रशिक्षण शिविर शुरू

रांची। गुजरात में आयोजित 36 वे राष्ट्रीय खेल के लिए झारखंड सरकार खेल विभाग तथा झारखंड ओलंपिक संघ के तत्वाधान में हॉकी झारखंड के महिला एवं पुरुष हॉकी खिलाड़ियों का विशेष प्रशिक्षण शिविर आज से बरियातू गर्ल्स हाई स्कूल रांची स्थित एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम में शुरुआत की गई है। विशेष प्रशिक्षण शिविर में हॉकी झारखंड से चयनित पुरुष वर्ग से 27 तथा महिला वर्ग से 27 खिलाड़ी हैं इन खिलाड़ियों का आज से लेकर 26 सितंबर तक लगातार कैंप का आयोजन किया जाएगा। महिला एवम पुरुष दोनों वर्ग से कैंप में जो बेहतर 18 -18 खिलादी होंगे ।उन्हें चयनित कर राष्ट्रीय गेम्स के लिए हॉकी झारखंड की टीम से प्रतिनिधित्व करने का अवसर दिया जाएगा। हॉकी झारखंड के महासचिव विजय शंकर सिंह ने आज सभी खिलाड़ियों को अपना संदेश देकर कैंप की शुरुआत कराई।

श्रीलंका ने विश्वकप टी-20 के लिये की टीम की घोषणा

कोलंबो। आस्ट्रेलिया में अगले महीने खेले जाने वाले टी-20 विश्व कप टूर्नामेंट के लिये श्रीलंका ने शुक्रवार को अपनी 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी। चोट की समस्या से जूझ रहे दुष्मांथा चामीरा और लहीरू कुमारा को टीम में जगह मिली है, हालांकि उन्हें टूर्नामेंट के लिये फिटनेस साबित करनी होगी। अशीन बंडारा, प्रवीण जयविक्रमा, दिनेश चांदीमल, बिनूरा फरनांडो और नुवांडू फरनांडो के नाम भी स्टैंडबाई खिलाड़ी के तौर पर शामिल किये गये है जबकि जयविक्रमा टीम के साथ आस्ट्रेलिया के लिये उड़ान भरेंगे। हाल ही में संपन्न एशिया कप जीतने वाली श्रीलंका टीम के अधिकतर खिलाड़ियों को विश्व कप में खेलने का मौका दिया गया है। एशिया कप में पदार्पण करने वाले मथीशा पथिराना विश्व कप टीम में जगह बनाने से चूक गये हैं। एशिया कप टी-20 में अपनी छाप छोड़ने वाले बायें हाथ के गेंदबाज दिलशान मधुशंका ने विश्व कप टीम में अपनी जगह सुरक्षित कर ली है। टीम के मुख्य तेज गेंदबाज चमीरा घुटने की चोट से अभी पूरी तरह नहीं उबर सके हैं और उनकी वापसी माह के अंत में होने वाले फिटनेस टेस्ट से तय होगी। इसी तरह चोटग्रस्त लहीरू कुमारा के भी खेलने को लेकर संशय बरकरार है। टीम में हालांकि तेज गेंदबाजी के विकल्प के तौर पर मधुशंका,प्रमोद मदूशन और चामीका करूणारत्ने मौजूद हैं।

दक्षिण अफ्रीका में 14 जनवरी से शुरू होगा अंडर-19 महिला टी-20 विश्वकप

एजेंसी

दुबई। अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) अंडर-19 महिला टी-20 विश्व कप अगले साल 14 से 29 जनवरी के बीच दक्षिण अफ्रीका में खेला जायेगा जिसमें भारत समेत दुनिया की 16 टीमे हिस्सा लेंगी।

आईसीसी ने महिला टी-20 विश्वकप का कार्यक्रम जारी करते हुये कहा कि एक पखवाड़े तक चलने वाली इस प्रतियोगिता में कुल 41 मुकाबले खेले जायेंगे। जनवरी 2020 में आईसीसी अंडर-19 पुरुष वर्ल्ड कप की सफल मेजबानी कर चुके बेनोनी और पोटचेफस्ट्रूम शहरों को अब आईसीसी अंडर-19 महिला टी20 विश्व कप के पहले संस्करण की मेजबानी का अवसर मिलेगा।

विश्व कप में भाग लेने वाली 16 टीमों को चार ग्रुप में बांटा गया है जिनके

बीच मुकाबले खेले जायेंगे और हर ग्रुप की सर्वश्रेष्ठ तीन टीमों को सुपर सिक्स लीग में खेलने का मौका मिलेगा जहां ग्रुप ए की भिड़ंत ग्रुप डी और ग्रुप बी की टक्कर ग्रुप सी की टीमों से होगी।

इंडोनेशिया और रवांडा पहली बार टी-20 विश्व कप में शिरकत कर रही हैं। इंडोनेशिया ने जुलाई में न्यू गुनिया को हरा कर पूर्व एशिया पैसिफिक ग्रुप जीता था जबकि रवांडा ने पिछली 12 सितंबर को तंजानिया को शिकस्त देकर विश्व कप के लिये क्वालीफाई किया था।

प्रतियोगिता के दौरान हर दिन चार मुकाबले खेले जायेंगे जिसकी शुरूआत आस्ट्रेलिया और बंगलादेश के मैच से होगी जबकि बाद में दक्षिण अफ्रीका की भिड़ंत भारत से बेनाई विल्लावमूरे के मेन आवल मैदान में होगी। इसके अलावा यूएई की टक्कर स्काटलैंड और श्रीलंका की भिड़ंत यूएसए से होगी।

सुपर लीग के मैच 20 जनवरी से शुरू होंगे जबकि प्रतियोगिता का सेमीफाइनल 27 जनवरी और फाइनल 29 जनवरी को पोटचेफस्ट्रूम के ओवल मैदान में खेला जायेगा।

30 जनवरी को फाइनल के लिये रिजर्व डे रखा गया है। विश्व कप के 16 वार्म अप मैच नौ से 11 जनवरी के बीच जोहांसबर्ग और त्श्वाने शहरों में खेले जायेंगे।

पहली बार सैफ महिला चैंपियनशिप से बाहर हुआ भारत

काठमांडू। भारतीय महिला फुटबॉल टीम शुक्रवार को सेमीफाइनल में मेजबान नेपाल के हाथों 0-1 से हारने के बाद सैफ महिला चैंपियनशिप 2022 से बाहर हो गयी। रश्मी कुमारी घिशिंग ने काठमांडू के दशरथ स्टेडियम में खेले मैच में विजेता टीम के लिये गोल किया। नेपाल ने मैच की आक्रामक शुरुआत की, हालांकि भारतीय रक्षक स्वीटी देवी और मनीसा पन्ना खतरे के प्रति सतर्क रहे और मेजबान टीम के हमलों को विफल कर दिया। भारत के लिये गोल का पहला मौका 12वें मिनट में बना जब रेणु विपक्षी बॉक्स में पहुंचीं, लेकिन नेपाल की कप्तान और गोलकीपर अंजीला सुब्बा ने अपनी लाइन से बाहर आकर इस गोल को रोका। नेपाल ने पहले हाफ के इंजरी टाइम में बढ़त हासिल की जब रश्मी ने प्रीति राय के क्रॉस की सहायता से बॉल को बॉटम कॉर्नर में पहुंचाया। यह बढ़त निर्णायक साबित हुई और नेपाल ने 1-0 से मैच जीत लिया।

मार्क बाउचर होंगे मुंबई इंडियंस के मुख्य प्रशिक्षक

एजेंसी

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 2023 सत्र के लिये मुंबई इंडियंस ने दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज मार्क बाउचर को अपना हेड कोच नियुक्त किया है।

विकेट-कीपर के तौर पर बाउचर का टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक बल्लेबाजों को शिकार बनाने का रिकॉर्ड है।

दक्षिण अफ्रीका की राष्ट्रीय टीम से रिटायरमेंट के बाद बाउचर क्रिकेट फ्रेंचाइजी 'टाइटन्स' के कोच के रूप में काम कर रहे थे। उनके कोच रहते टीम ने पांच घरेलू खिताब जीते।

वर्ष 2019 में दक्षिण अफ्रीका ने बाउचर को हेड कोच बनाया, जहां उनके नेतृत्व में टीम ने 11 टेस्ट, 12 एकदिवसीय मैचों और 23 टी20 मैचों में जीत हासिल की।

रिलायंस जियो इन्फोकॉम के चेयरमैन आकाश एम. अंबानी ने कहा, मुंबई इंडियंस में मार्क बाउचर का स्वागत है।मैदान पर उनका प्रदर्शन शानदार रहा है और एक कोच के रूप में उन्होंने अपनी टीम को कई जीत दिलाई हैं।

बाउचर ने कहा, मुंबई इंडियंस के हेड कोच के रूप में नियुक्त होना एक सम्मान और सौभाग्य की बात है। मुंबई इंडियंस खिलाड़ियों की एक मजबूत इकाई है जिसमें मैं अपना योगदान देने को तैयार हूं।

भारत 'ए' में हरफनमौला बावा को मौका, सोच पांड्या के बैकअप की

मुंबई। न्यूजीलैंड ए के खिलाफ तीन एक दिवसीय मैचों की श्रृंखला में चेन्नई में 22 सितंबर को खेले जाने वाले पहले मुकाबले में तेज गेंदबाज हरफनमौला राज अंगद बावा को संजू सैमसन की अगुवाई वाली भारत ए टीम में शामिल किया गया है।

भारत को अंडर-19 वर्ल्ड कप का खिताब दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले बावा कातिलाना गेंदबाजी और धाकड़ बैटिंग में माहिर हैं। उन्होंने चंडीगढ़ के लिए सिर्फ दो रणजी मैच खेले है लेकिन समझा जाता है कि चेतन शर्मा की अगुवाई वाली चयन समिति हार्दिक पांड्या के लिए विकल्प तैयार करना चाहती है क्योंकि पिछले लंबे समय से भारत तेज गेंदबाजी की समस्या से जूझ रहा है। फिरकी गेंदबाजी के हरफनमौला खिलाड़ियों की तुलना में भारतीय टीम में तेज गेंदबाजी में हस्त हरफनमौला खिलाड़ियों की कमी नजर आती है।

भारतीय टीम के पास अक्षर पटेल, रवि अश्विन जैसे बहुत सारे स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर विकल्प हैं, लेकिन अच्छे निचले मध्य क्रम वाले तेज गेंदबाजों की तलाश है। ऐसे में माना जा रहा है कि भारतीय चयनकर्ता राज अंगद बावा को आजमाना चाहते हैं। विजय शंकर और शिवम दुबे जैसे ऑलराउंडर पिछले लंबे वक्त से खराब फॉर्म से गुजर रहे हैं। शायद यही वजह है कि चयनकर्ता अब राज अंगद बावा पर दांव लगाने के मूड में हैं।

सीरीज का दूसरा मैच 25 सितंबर जबकि तीसरा वनडे 27 सितंबर को खेला जाएगा।

भारतीय ए टीम इस प्रकार है :- पृथ्वी शॉ, अभिमन्यु ईश्वरन, रुतुराज गायकवाड़, राहुल त्रिपाठी, रजत पाटीदार, संजू सैमसन (कप्तान), केएस भरत (विकेटकीपर), कुलदीप यादव, शबाज़ अहमद, राहुल चाहर, तिलक वर्मा, कुलदीप सेन, शार्दुल ठाकुर, उमरान मलिक।

नेपाल को हरा कर भारत बना सैफ अंडर-17 फुटबाल चैंपियन

कोलंबो। बेहतरीन जुगलबंदी और तेजतर्रार खेल की बदौलत भारत ने नेपाल को 4-0 से हरा कर सैफ अंडर-17 बालक फुटबाल चैंपियनशिप का खिताब एक बार फिर अपने नाम कर लिया है।

रेसकोर्स अंतरराष्ट्रीय मैदान बुधवार को खेले गये फाइनल मुकाबले में भारतीय टीम ने शुरू से ही आक्रामक खेल का मुजाहिरा किया और मैच में अपनी पकड़ बनाये रखी। नेपाल की रक्षा पंक्ति के पास भारतीय खिलाड़ियों के हमलों का कोई जवाब नहीं था। गत विजेता भारत ने इस खिताब को अपने पास सुरक्षित रखा है। पिछली बार यह चैंपियनशिप अंडर 15 के नाम से खेली गयी थी।

भारतीय टीम की शानदार जीत में कप्तान वनलालपेका गुते के अलावा बाबी सिंह,कोरू सिंह और अमन ने एक एक गोल का योगदान दिया जबकि विरोधी टीम खाता भी खोलने में नाकाम रही। इस जीत के साथ भारत ने लीग मैच में नेपाल से मिली हार का बदला भी ले लिया।

इससे पहले ग्रुप लीग में नेपाल ने भारत को 3-1 से हराया था। पूरे मैच में भारतीय टीम नेपाल पर हावी रही। मैच के 18वें मिनट में बाबी ने नेपाल की रक्षा पंक्ति को भेदते हुये शानदार गोल किया।

मोदी की सीख पर पुतिन बोले- युद्ध तो यूक्रेन चाहता है, हम तो शांति के पक्षधर हैं

समरकंद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के दौरान क्षेत्रीय सुरक्षा की स्थिति और व्यापार एवं संपर्क बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। मोदी और पुतिन की बैठक के दौरान यूक्रेन युद्ध का मुद्दा भी उठा। रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने प्रधानमंत्री मोदी से कहा कि वे भारत चिंताओं से अवगत हैं। उन्होंने कहा कि वे यूक्रेन संघर्ष को जल्द खत्म करना चाहते हैं। उज्बेकिस्तान के ऐतिहासिक शहर समरकंद में द्विपक्षीय बैठक के दौरान पुतिन ने पीएम मोदी से कहा, मैं यूक्रेन में संघर्ष पर आपकी स्थिति और आपकी चिंताओं के बारे में भी जानता हूं। हम चाहते हैं कि यह सब जल्द से जल्द खत्म हो। हम आपको वहां क्या हो रहा है, इसकी सारी जानकारी देते रहेंगे। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पीएम मोदी से आगे कहा कि वह

चाहते हैं कि यूक्रेन में संघर्ष जल्द से जल्द समाप्त हो, लेकिन यूक्रेन है जो युद्ध लड़ना चाहता है। रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि वह यूक्रेन में संघर्ष को जल्द से जल्द खत्म करना चाहते हैं और समझते हैं कि भारत की युद्ध को लेकर अपनी चिंताएं हैं। उन्होंने कहा कि वह इसे जल्द से जल्द खत्म करने की पूरी कोशिश करेंगे।

बता दें कि उज्बेकिस्तान एससीओ 2022 का वर्तमान अध्यक्ष है जबकि भारत एससीओ का अगला अध्यक्ष होगा। वार्ता के दौरान पुतिन ने अगले वर्ष एससीओ की अध्यक्षता संभालने के लिए भारत को बधाई दी। रूसी राष्ट्रपति के अलावा, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने भी एससीओ के प्रमुखों के विस्तारित सर्कल की बैठक के दौरान 2023 में एससीओ अध्यक्षता के लिए भारत को बधाई दी थी। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने शिखर सम्मेलन के दौरान एक बयान में कहा, मैं अगले साल एससीओ की मेजबानी के लिए भारत को बधाई देता हूं।

मोदी ने यूक्रेन को कहा धन्यवाद, पुतिन को दी सीख

पुतिन के साथ बैठक के दौरान पीएम मोदी ने कहा, हमने भारत-रूस द्विपक्षीय संबंधों और विभिन्न मुद्दों पर कई बार फोन पर भी बात की है। हमें खाद्य, ईंधन सुरक्षा और उर्वरकों की समस्याओं के समाधान के तरीके खोजने चाहिए। यूक्रेन से हमारे छात्रों को निकालने में हमारी मदद करने के लिए मैं रूस और यूक्रेन को धन्यवाद देना चाहता हूं।

रूसी राष्ट्रपति पुतिन के साथ द्विपक्षीय बैठक में पीएम मोदी ने कहा, आज का युग युद्ध का नहीं है और मैंने इस बारे में आपसे फोन पर भी बात की है। आज हमें बात करने का अवसर मिलेगा कि हम शांति के पथ पर कैसे आगे बढ़ सकते हैं। भारत-रूस कई दशकों से एक-दूसरे के साथ रहे हैं।

चीन के समाजवाद से प्रभावित जिनपिंग का लेख होगा प्रकाशित

बीजिंग। उज्बेकिस्तान में होने वाली शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन की महत्वपूर्ण क्षेत्रीय बैठक से कुछ घंटे पहले चीनी मीडिया ने खुलासा किया है कि राष्ट्रपति शी जिनपिंग का एक लेख प्रकाशित किया जाएगा जिसमें चीनी विशेषताओं से प्रभावित समाजवाद का प्रचार किया गया है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने गुरुवार को यह जानकारी दी। जिनपिंग का यह लेख शुक्रवार को प्रकाशित किया जाएगा। वह चीन के राष्ट्रपति होने के साथ-साथ कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना (सीपीसी) की केंद्रीय समिति के महासचिव एवं केंद्रीय सैन्य आयोग के अध्यक्ष भी हैं। यह लेख 'क्यूसी जर्नल' का इस वर्ष का 18वां अंक का हिस्सा होगा, जो सीपीसी केंद्रीय समिति की एक प्रमुख पत्रिका है।

गेहूं, चावल की मजबूरी या बदला मन, पीएम मोदी से अचानक मिले तुर्की के राष्ट्रपति अर्दोआन

एजेंसी

समरकंद। उज्बेकिस्तान के समरकंद में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन की मीटिंग से इतर पीएम नरेंद्र मोदी ने तुर्की के राष्ट्रपति तैयप अर्दोआन से भी मुलाकात की है। दोनों देशों के बीच कुछ सालों में कश्मीर को लेकर तनाव देखने को मिला था। ऐसे में यह मीटिंग अप्रत्याशित है और इससे तुर्की के रवैये में बड़ा बदलाव देखने को मिला है। दो साल पहले अर्दोआन ने कश्मीर को लेकर टिप्पणी की थी, जिसे पर भारत ने तीखा ऐतराज जताया था। दरअसल अर्दोआन ने पाकिस्तान के दौरे पर कह दिया था कि कश्मीर में हालात बिगड़ रहे हैं। इस पर भारत ने तुर्की के राजदूत को समन जारी कर ऐतराज जाहिर किया था।

अर्दोआन के बयान को जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाने और राज्य के

पुनर्गठन के फैसले से जोड़कर देखा गया था। लेकिन अब अर्दोआन की पीएम नरेंद्र मोदी से मुलाकात चौंकाने वाली है। दरअसल यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद से दुनिया भर में गेहूं और चावल जैसे अहम खाद्यान्नों की सप्लाई प्रभावित हुई है। ऐसे में तुर्की को भारत से गेहूं और चावल का निर्यात करना पड़ा था। उसके इस कदम को खाद्यान्न की मजबूरी के तौर पर देखा गया था। इसलिए अर्दोआन की पीएम नरेंद्र मोदी से मुलाकात को भी इस मजबूरी के तौर पर देखा जा रहा है। तुर्की को पाकिस्तान अपने करीबी और मित्र देशों में शुमार करता रहा है।

अर्दोआन से मुलाकात के बाद पीएम नरेंद्र मोदी अब रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ भी मीटिंग कर रहे हैं। पीएमओ की ओर से अर्दोआन से मुलाकात के बारे में दी गई जानकारी में कहा गया कि दोनों नेताओं ने अलग-अलग क्षेत्रों में भारत और तुर्की के बीच संबंधों को मजबूत करने पर बात की। अर्दोआन के साथ पीएम नरेंद्र मोदी की यह मुलाकात पहले से तय नहीं थी। विदेश मंत्रालय की ओर से बताया गया कि दोनों नेताओं के बीच बातचीत में बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों के बारे में बात हुई। इसके अलावा क्षेत्रीय और वैश्विक घटनाक्रम को लेकर भी बात की गई। दरअसल तुर्की इन दिनों गहरे आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में भारत जैसा देश उसके लिए अहम हो सकता है।

चीनी प्रतिनिधिमंडल नहीं कर पायेंगे महारानी एलिजाबेथ का अंतिम दर्शन

लंदन। चीन सरकार के एक प्रतिनिधिमंडल को ब्रिटेन संसद के वेस्टमिंस्टर हॉल में प्रवेश पर रोक लगा दी गई है, जहां पर महारानी एलिजाबेथ (द्वितीय) का पार्थिव शरीर अंतिम दर्शन के लिए रखा गया है। बीबीसी के अनुसार ऐसा माना जा रहा है कि हाउस ऑफ कॉमन्स के स्पीकर सर लिंडसे हॉयल ने चीन की ओर से पिछले साल ब्रिटेन के सात सांसदों समेत नौ नागरिकों के चीन में प्रतिबंध और उनकी संपत्ति सील करने के कदम की प्रतिक्रिया स्वरूप वेस्टमिंस्टर हॉल में प्रवेश के चीन के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। स्पीकर के कार्यालय ने बीबीसी को बताया कि श्री हॉयल ने सुरक्षा मामलों के कारण इस विषय पर टिप्पणी नहीं की। इस बीच, चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि उन्होंने प्रतिबंध के बारे में कोई रिपोर्ट नहीं देखी है, जो पहली बार पोलिटिको वेबसाइट पर सामने आई थी। चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने कहा, एक मेजबान के रूप में, ब्रिटेन निश्चित रूप से राजनयिक प्रोटोकॉल और मेहमानों को प्राप्त करने के उचित तरीके से परिचित है। बीबीसी ने कहा,ब्रिटेन की ओर से चीन पर उइगर मुसलमानों के साथ दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाने को लेकर पिछले साल चीन ने सात सांसदों सहित नौ नागरिकों की यात्रा पर प्रतिबंध लगा दिया था और उनकी संपत्ति जब्त कर दी थी।

श्रीलंका में बच्चों का प्रीस्कूल से पलायन

कोलंबो। श्रीलंका के प्रीस्कूलों के शिक्षकों ने चेतावनी दी है कि आर्थिक संकट के कारण प्रीस्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या में गिरावट आयी है जिससे ये स्कूल गहरे में संकट का सामना कर रहे हैं। आइसलैंड समाचार पत्र ने यह जानकारी दी। द आइलैंड अखबार ने कहा कि देश में बड़ी संख्या में राज्य द्वारा संचालित प्रीस्कूल और संस्थान हैं जो वंचित समुदायों की पूर्ति करते हैं। उनमें पेशेवर रूप से कई योग्य शिक्षक भी हैं, जिनका भी पलायन इस प्रीस्कूलों से हो रहा है। शिक्षकों ने कहा कि पिछले कुछ महीनों में अधिकांश बच्चे प्रीस्कूल छोड़ चुके हैं और जो आ रहे हैं, उनमें से अधिकतर बड़ी कठिनाइयों के साथ ऐसा कर रहे हैं। एक शिक्षिका के अनुसार, अधिकतर बच्चे कम पोषण वाला खाना अपने साथ लेकर आते हैं। कुछ बच्चों ने कई सप्ताहों से दूध नहीं पिया है। ज्यादातर बच्चे सांबोल के साथ चावल लाते हैं। कुछ बच्चे त्रिपोशा की एक गेंद लेकर आते हैं। मैंने शायद ही बच्चों को मांस, मछली या अंडा लाते हुए देखा है। उन्होंने कहा कि मध्यम वर्गीय परिवारों के बच्चे भी बहुत कम पोषण वाला खाना लाते हैं। बड़ी संख्या में बच्चे फीस नहीं दे पा रहे हैं और पढ़ाई छोड़ रहे हैं। एक अन्य शिक्षिका ने कहा, हम भी मुसीबत में हैं क्योंकि फीस देने वाले बच्चों को ढूंढना बहुत कठिन हो रहा है।

युगांडा की वैनेसा नाकाटे यूनिसेफ की सद्भावना दूत

संयुक्त राष्ट्र। युगांडा की जलवायु कार्यकर्ता वैनेसा नाकाटे को संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) का नया सद्भावना दूत नियुक्त किया गया है। यूनिसेफ की कार्यकारी निदेशक कैथरीन रसेल ने यह जानकारी दी। रसेल ने कहा कि 25 वर्षीय सुश्री वैनेसा ने जलवायु संकट से सबसे ज्यादा प्रभावित तथा गरीब और हाशिए पर लोगों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में बातचीत को पुनर्निर्देशित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।सुश्री वैनेसा ने अपने मंच का उपयोग जलवायु न्याय की वकालत करने के लिए किया है ताकि हर समुदाय, विशेष रूप से सबसे अधिक प्रभावित स्थानों के लोगों को शामिल किया जा सके। उन्होंने राइज़ अप मूवमेंट की स्थापना की, जो अफ्रीकी जलवायु कार्यकर्ताओं की आवाज़ को बुलंद करने के लिए एक मंच है, वहीं ग्रामीण युगांडा के स्कूलों में सौर पैनल स्थापित करने के लिए ग्रीन स्कूल प्रोजेक्ट भी है। उन्होंने कहा कि जलवायु संकट से सबसे अधिक प्रभावित समुदायों को लाभ पहुंचाने वाली जलवायु कार्यक्रम को चलाने के लिए सुश्री वैनेसा का काम हर बच्चे के लिए परिवर्तन लाने के यूनिसेफ के मिशन के साथ प्रत्यक्षतः परिलक्षित होता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

फरवरी महीने से जायद की फसलों की बुवाई का समय शुरू है। इन फसलों की बुवाई मार्च तक चलती है। इस समय बोने पर ये फसलें अच्छी पैदावार देती हैं। इस मौसम में खीरा, ककड़ी, करेला, लौकी, तोरई, पेठा, पालक, फूलगोभी, बैंगन, भिण्डी, अरबी जैसी सब्ज़ियों की बुवाई करनी चाहिए।

गर्मियों में उगाएं सब्जियां होगा भरपूर फायदा

खीरा

खीरे की खेती के लिए खेत में क्यारियां बनाएं। इसकी बुवाई लाइन में ही करें। लाइन से लाइन की दूरी 1.5 मीटर रखें और पौधे से पौधे की दूरी 1 मीटर। बुवाई के बाद 20 से 25 दिन बाद निराई - गुड़ाई करना चाहिए। खेत में सफाई रखें और तापमान बढ़ने पर हर सप्ताह हल्की सिंचाई करें। खेत से खरपतवार हटाते रहें।

ककड़ी

ककड़ी की बुवाई के लिए एक उपयुक्त समय फरवरी से मार्च ही होता है लेकिन अगेती फसल लेने के लिए पॉलीथीन की थैलियों में बीज भरकर उसकी रोपाई जनवरी में भी की जा सकती है। इसके लिए एक एकड़ भूमि में एक किलोग्राम बीज की ज़रूरत होती है। इसे लगभग हर तरह की ज़मीन में उगाया जा सकता है। भूमि की तैयारी के समय गोबर की खाद डालें व खेत की तीन से चार बार जुताई करके सुहागा लगाएं। ककड़ी की बीजाई 2 मीटर चौड़ी क्यारियों में नाली के किनारों पर करनी चाहिए। पौधे से पौधे का अंतर 60 सेंटीमीटर रखें। एक जगह पर दो - तीन बीज बोएं। बाद में एक स्थान पर एक ही पौधा रखें।

करेला

हल्की दोमट मिट्टी करेले की खेती के लिए अच्छी होती है। करेले की बुवाई दो तरीके से की जाती है - बीज से और पौधे से। करेले की खेती के लिए 2 से 3 बीज 2.5 से 5 मीटर की दूरी पर बोने चाहिए। बीज को बोने से पहले 24 घंटे तक पानी में भिगो लेना चाहिए इससे अंकुरण जल्दी और अच्छा होता है। नदियों के किनारे की ज़मीन करेले की खेती के लिए बढ़िया रहती है। कुछ अम्लीय भूमि में इसकी खेती की जा सकती है। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें इसके बाद दो - तीन बार हैरो या कल्टीवेटर चलाएं।

लौकी

लौकी की खेती कर तरह की मिट्टी में हो जाती है लेकिन दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे अच्छी होती है। लौकी की खेती के लिए एक हेक्टेयर में 4.5 किलोग्राम बीज की ज़रूरत होती है। बीज को खेत में बोने से पहले 24 घंटे पानी में भिगोने के बाद टाट में बांध कर 24 घंटे रखें। करेले की तरह लौकी में भी ऐसा करने से बीजों का अंकुरण जल्दी होता है। लौकी के बीजों के लिए 2.5 से 3.5 मीटर की दूरी पर 50 सेंटीमीटर चौड़ी व 20 से 25 सेंटीमीटर गहरी नालियां बनानी चाहिए। इन नालियों के दोनों किनारे पर गरमी में 60 से 75 सेंटीमीटर के फासले पर बीजों की बुवाई करनी चाहिए। एक जगह पर 2 से 3 बीज 4 सेंटीमीटर की गहराई पर बोएं।

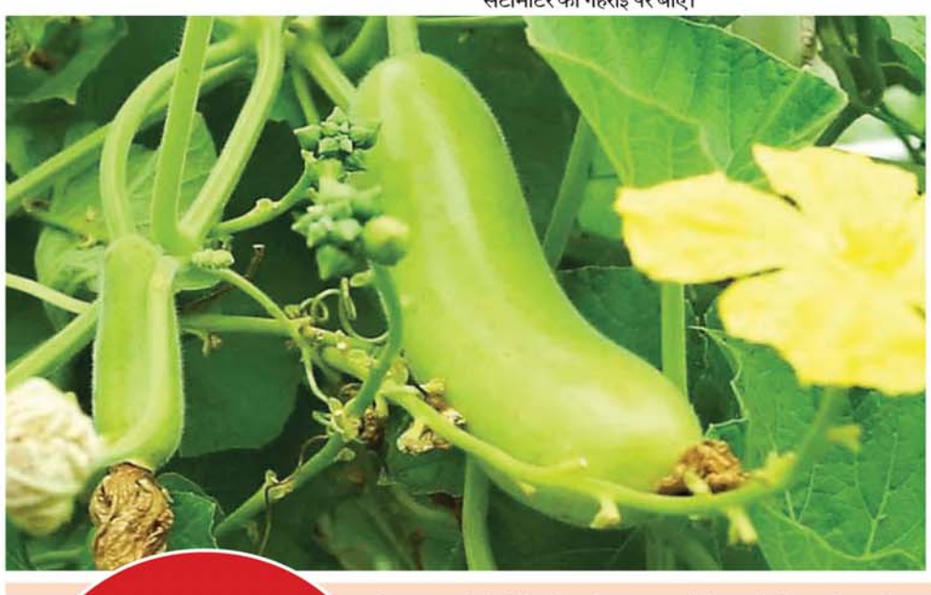

भिंडी

भिंडी की अगेती किस्म की बुवाई फरवरी से मार्च के बीच करते हैं। इसकी खेती हर तरह की मिट्टी में हो जाती है। भिंडी की खेती के लिए खेत को दो-तीन बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा कर लेना चाहिए और फिर पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिए। बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार दूरी 25-30 सेमी और कतार में पौधे की बीच की दूरी 15-20 सेमी रखनी चाहिए। बोने के 15-20 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई करना जरुरी रहता है। खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनिक का भी प्रयोग किया जा सकता है।

तोरई

हल्की दोमट मिट्टी तोरई की सफल खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। नदियों के किनारे वाली भूमि इसकी खेती के लिए अच्छी रहती है। इसकी बुवाई से पहले, पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें इसके बाद 2 से 3 बार बार हैरो या कल्टीवेटर चलाएं। खेत कि तैयारी में मिट्टी भुरभुरी हो जानी चाहिए। तोरई में निराई ज़्यादा करनी पड़ती है। इसके लिए कतार से कतार की दूरी 1 से 1.20 मीटर और पौधे से पौधे की दूरी एक मीटर होनी चाहिए। एक जगह पर 2 बीज बोने चाहिए। बीज को ज़्यादा गहराई में न लगाएं इससे अंकुरण पर फर्क पड़ता है। एक हेक्टेयर ज़मीन में 4 से 5 किलोग्राम बीज लगता है।

अरबी

अरबी की खेती के लिए रेतीली दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। इसके लिए ज़मीन गहरी होनी चाहिए। जिससे इसके कंदों का समुचित विकास हो सके। अरबी की खेती के लिए समतल क्यारियां बनाएं। इसके लिए कतार से कतार की दूरी 45 सेमी. व पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी होनी चाहिए। इसकी गांठों को 6 से 7 सेंटीमीटर की गहराई पर बो दें।

पालक

पालक के लिए बलुई दोमट या मटियार मिट्टी अच्छी होती है लेकिन ध्यान रहे अम्लीय ज़मीन में पालक की खेती नहीं होती है। भूमि की तैयारी के लिए मिट्टी को पलेवा करके जब वह जुताई योग्य हो जाए तब मिट्टी पलटने वाले हल से एक जुताई करना चाहिए, इसके बाद 2 या 3 बार हैरो या कल्टीवेटर चलाकर मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए। साथ ही पाटा चलाकर भूमि को समतल करें। पालक की खेती के लिए एक हेक्टेयर में 25 से 30 किलोग्राम बीज की ज़रूरत होती है। बुवाई के लिए कतार से कतार की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंटीमीटर रखना चाहिए। पालक के बीज को 2 से 3 सेन्टीमीटर की गहराई पर बोना चाहिए, इससे अधिक गहरी बुवाई नहीं करनी चाहिए।

बैंगन

इसकी नर्सरी फरवरी में तैयार की जाती है और बुवाई अप्रैल में की जाती है। बैंगन की खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। नर्सरी में पौधे तैयार होने के बाद दूसरा महत्वपूर्ण कार्य होता है खेत को तैयार करना। मिट्टी परीक्षण करने के बाद खेत में एक हेक्टेयर के लिए 4 से 5 ट्रॉली पक्का हुआ गोबर का खाद् बिखेर दे। बैंगन की खेती के लिए दो पौधों और दो कतार के बीच की दूरी 60 सेंटीमीटर होनी ही चाहिए।

पेठा

पेठा कद्दू की खेती के लिए दोमट व बलुई दोमट मिट्टी सब से अच्छी मानी जाती है। इसके अलावा यह कम अम्लीय मिट्टी में आसानी से उगाया जा सकता है। पेठा की बुवाई से पहले खेतों की अच्छी तरह से जुताई कर के मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिए और 2-3 बार कल्टीवेटर से जुताई कर के पाटा लगाना चाहिए। इसके लिए एक हेक्टेयर में 7 से 8 किग्रा बीज की ज़रूरत होती है। इसकी बुवाई के लिए लगभग 15 हाथ लंबा का एक सीधा लकड़ी का डंडा ले लेते हैं, इस डंडे में दो-दो हाथ की दूरी पर फीता बांधकर निशान बना लेते हैं जिससे लाइन टेढ़ी न बने। दो हाथ की दूरी पर लम्बाई और चौड़ाई के अंतर पर गोबर की खाद का सीधे लाइन में गोबर की खाद घुरवा बनाते हैं जिसमे पेठे के सात से आठ बीजे गाड़ देते हैं अगर सभी जम गए तो बाद में तीन चार पौधे छोड़कर सब उखाड़ कर फेंक दिए जाते हैं।